वर्ष 38 अंक : 3 2.5.2015 शनिवार (मई - जून) शुल्क – प्रति अंक : ₹ 20.00 वार्षिक : ₹ 100.00

Centenary Celebrations

HIS DIVINITY KAKAJI MAHARAJ · HIS DIVINITY PAPPAJI MAHARAJ · 100 YEARS

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

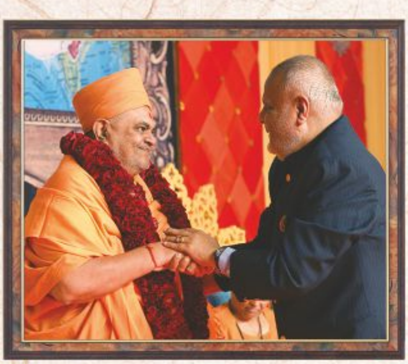

आपस की मोहब्बत और प्रेम हैं... इतनी आत्मबु

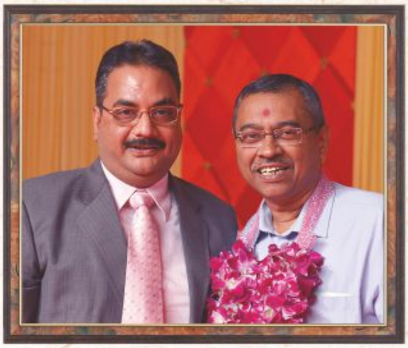
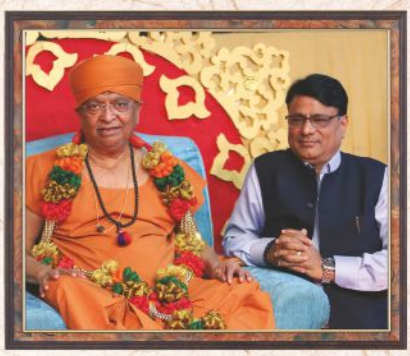

द्धि से यहां आना–वही सत्संग है... –प.पू. गुरुजी

13 मार्च 2015 –प.पू. गुरुजी का 78वां प्राकट्योत्सव

दिव्य स्मृतियाँ

मुझे राज़ी रखने हेतु एक अपनेपन से दीदी आए हैं... – प.पू. गुरुजी

नए उठाव से सत्संग कर लें...

अनन्यभाव से, संत से संबंध कर लें...

'योगी' जयंती के अवसर पर...

अखंड प्रभुधारक विभूति की प्राप्ति होने के बाद, उनकी दिव्य मूर्ति, चिह्न, चरित्र, चेष्टा की स्मृतियाँ करने से अंतर का शुद्धिकरण होता है और... उनका प्राकट्य पर्व मुमुक्षु जीव को प्रार्थना करने का अवसर देता है। सो, अब जैसे कि **15 मई** को **गुरुहरि योगीजी महाराज की प्राकट्य तिथि** नज़दीक आ रही है, तो सहज ही बापा के कल्याणकारी गुणों का स्मरण करते हुए, उनके श्रीचरणों में शीश झुका कर प्रार्थना करें कि–

हे बापा... *आप तो अद्‌भुत साधुता का मूर्तस्वरूप!*
आपकी मूर्ति, सेवा, भक्ति, ध्यान, पूजा का अंतर्चक्षु से चिंतन करें तो–
आपकी हर क्रिया में साधुता ही झलकती है!
साधुता में ही प्रभु का प्रकटीकरण प्रतीत होता है!
सरलता, सहजता, सहज आनंद और सेवा की भावना आपके रोम-रोम में दिखती है!
किसी भी प्रकार की अपेक्षा के बिना, केवल शास्त्रीजी महाराज को राज़ी करने की एक तमन्ना दिखाई देती है!
भले ही कोई कितना बड़प्पन दे, लेकिन हमेशा 'सेवक' की अस्मिता से जीने की हमें दिशा मिलती है!
सभी की आत्मा में रहे परमात्मा को देखने की आपसे दृष्टि मिलती है!
संबंध में आने वालों की जीवदशा दृष्टिमात्र से टाल कर, प्रभु से भर देने की झंखना आप में दिखती है!

यूँ, आपकी अद्‌भुत साधुता, सेवा-भक्ति की बदौलत ही 'प्रगट प्रभु' की मूर्ति का-अक्षरधाम का सुख हम जीतेजी प्राप्त कर रहे हैं; तो जैसे कि आप अकसर कहते कि *अंतर में महिमा उदित होने का एक ही साधन है–दृढ़ प्रीति! वह कैसी कि प्रगट प्रभु भले ही हमारे इंद्रियों-अंतःकरण को चूर-चूर कर दें, लेकिन हमारा मन उनसे कभी भी अलग न हो...*

तो, हे बापा! पिछले वर्ष से आपकी प्राकट्य तिथि निमित्त, आपके आशीर्वचनों की पुस्तक **'प्रगट की परावाणी'** से प.पू. गुरुजी को खूब पसंद आए और साधना में मार्गदर्शी, ऐसे सूत्रात्मक वाक्यों द्वारा आत्मा की खुराक हिन्दी में प्राप्त करके हम खूब निहाल हुए। अब जब आपकी इस **प्राकट्य तिथि** पर 'अनमोल चिंतनकणिकाओं' का यह स्तंभ संपन्न हो रहा है, तब यही प्रार्थना है कि हम कैसे भी संजोगों में आपको अखंड धारे 'प्रगट प्रभु' से चिपके रहें और इसी जन्म में उनकी प्रसन्नता प्राप्त कर लें...

'परावाणी' से अनमोल चिंतनकणिकाएँ

- **श्रद्धा का लक्षण** क्या? **भगवान और सत्पुरुष के वचन में दृढ़ता** से सतत लग पड़ें।
- भगवान और सत्पुरुष में जिसे पूरा विश्वास और श्रद्धा हो, उसे कभी कुछ कहने में हिचक नहीं होती।
- भगवान के कार्य में जो भी पदार्थ उपयोग में आए, उसकी शुद्धि हो जाती है।
- कुछ कर पाएँ या न कर पाएँ, इससे कोई अंतर नहीं पड़ता; लेकिन प्रेम से यदि पैर छुएँ, तो भी श्रद्धा कही जाएगी।
- **कथावार्ता, कीर्तन, सेवा में यदि श्रद्धा रखें, तो हमें कठिनाई नहीं होगी।** वर्ना मरते-मरते चले, तो क्या बरकत आएगी?
- हमें यह जो **भगवान की सेवा** मिलती है, वह **पूर्व के पुण्य से मिलती है।**
- जिसने बड़े पुरुष की प्रसन्नता प्राप्त की हो, उसे भले ही बोलना न आता हो, लेकिन स्वामी उसकी वाणी में प्रवेश कर जाते हैं। सो, शब्दों का प्रवाह छूटता है; उसे सोच कर बोलना नहीं पड़ता।

❋ यदि हम प्रेम से बीड़ा उठा लें, तो हमारा काम हो जाए।

❋ ऐसे (बड़े) पुरुष के **वचन में यदि विश्वास रख कर हम कार्य करें, तो कार्य जल्दी निपट जाता है।**

❋ स्वामी के प्रताप से **सच्चे संत का हमें जोग हो गया।** फिर, अब हमें क्या करना चाहिए? **वे जो कहें, वैसा करना चाहिए।**

❋ सेवा थोड़ी हो सके तो थोड़ी करना, लेकिन किसी का अवगुण कभी मत लेना। अवगुण देखें, तो वह असेवा कही जाएगी। **जीव इतना टेढ़ा है कि (उसे) अवगुण लेने में देर नहीं लगती, किन्तु दिव्यभाव उदित करने में देर लगती है।**

❋ भूल से भी यदि कोई स्वामी का नाम लेता हो, उसके लिए तो अपनी देह की चमड़ी के जूते सिलवा देने चाहिए। अर्थात्–ऐसे मुक्त के लिए कुछ भी कर देने में हिचकना नहीं चाहिए।

❋ **जिसने संत का समागम किया हो, उसे माया से छटकना आता है।** अतः वह कहीं फंसेगा नहीं।

❋ हम यदि प्रभु को धार कर जीते हो जाएँ, तो फिर कुछ भी करना बाक़ी नहीं रहता।

❋ हमें मन, इंद्रियों के चंगुल में नहीं आना चाहिए और भगवान व संत की आज्ञा सारधार पालनी चाहिए।

❋ हम **भगवान और संत से** जुड़े हुए हैं। यदि उनसे **सटे रहेंगे, तो वे छोड़ेंगे नहीं** – भगवान ऐसे दयालु हैं।

❋ **समागम और कथावार्ता की तान रखें, तो हमारे जीव में बल आता है**... भगवान के आसरे बैठे हैं, सो दाल-रोटी तो वे हमें देंगे ही। परंतु, पाँच, पच्चीस, लाख चाहिएँ, तो महाराज कहते हैं कि उसकी जिम्मेदारी मेरी नहीं।

❋ **मोक्ष की पॉलीसी बनाएँगे, तो सत्संग बना रहेगा, वर्ना तितर-बितर हो जाएगा-बिखर जाएगा।**

❋ भगवान और संत में दिव्यभाव एवं इस भगवान व संत की जितनी हो सके उतनी सेवा करेंगे, तो स्वामी के आशीर्वाद मिल जाएँगे।

❋ **जब तक 'कारण शरीर' का आवरण है, तब तक अक्षरधाम में नहीं जा सकेंगे।**

❋ **संत** ऐसे दयालु हैं कि परमेश्वर के स्वरूप की पहचान करवा कर **भगवान की मूर्ति में जोड़ देते हैं।**

❋ **महिमा का विचार करना भी 'ध्यान' ही कहा जाए।** अतः भगवान के स्वरूप की महिमा का विचार करते रहना चाहिए।

❋ **संत के समागम के बिना तो 'कारण शरीर' टलता नहीं।**

❋ 'तीन देह से अपनी आत्मा को ब्रह्मरूप मानना' - यही आज्ञा है।

❋ एक हरिभक्त ने प्रश्न पूछा– *संत का जैसे-जैसे समागम करें, वैसे-वैसे परमेश्वर के प्रगटीकरण की पहचान होती जाएगी न?*

भगवान और संत की महिमा समझते जाएँ, दिव्यभाव व निर्दोषबुद्धि होती जाए और संगठनभाव बढ़ता जाए, तो समझना कि भगवान के स्वरूप की पहचान हुई है।

लेकिन, यदि मनुष्यभाव आता जाए, मन अलग होता जाए, एकता का भाव मिट जाए तो समझना कि हमने पहचाना नहीं है।

❋ **बड़े पुरुष की 'कृपा' में ध्यान, आज्ञा सब कुछ समाहित है।** स्वामी के जोग में आ गया और उनकी कृपादृष्टि हो गई, तो शांति हो गई।

❋ भगवान का ध्यान और भगवान की आज्ञा, परस्पर महिमा व दिव्यभाव तथा एकता से यदि जीने लगें, तो माया निकल जाएगी और 'कारण शरीर' टल जाएगा!

ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के जंगम मंदिर प.पू. गुरुजी का 78वाँ प्राकट्योत्सव...

12- 13 मार्च 2015 के मंगलकारी दिन, जब ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज-पप्पाजी महाराज के प्रति अपनी भक्ति अदा करने और प.पू. गुरुजी के प्रति के अपनेपन - लगाव हेतु, हर वर्ष की भाँति **'योगी परिवार'** दिल्ली मंदिर में एकत्रित हुआ। सर्वप्रथम, **28 फरवरी** को **गुणातीत ज्योत** के पू. इलेशभाई एवं साधक भाइयों के आगमन से 'उत्सव' का दिव्य माहौल बन गया! तत्पश्चात् **8 मार्च** को पू. अश्विनभाई (पवई) एवं पू. किशोरभाई मास्टर्स के साथ **प.पू. दिनकरभाई** की उपस्थिति से कुटुंबीजनों के आगमन की प्रतीति होने लगी और फिर... **11 एवं 12 मार्च** की सुबह तक तो–

सांकरदा से प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी संतमंडल के साथ,

हरिधाम से पू. प्रेमस्वामिजी, पू. दासस्वामिजी संतों के साथ,

पवई से पू. भरतभाई, पू. वशीभाई मुक्तों के साथ,

गुणातीत ज्योत से प.पू. हंसा दीदी साधक बहनों के साथ

एवं

भक्ति आश्रम से पू. सर्वेश्वर दीदी व अन्य बहनें

'योगी परिवार आनंदोत्सव' को गौरवान्वित करने के लिए आ गए!

प.पू. गुरुजी के स्वमुख से कई बार सुना है–

जैसे छोटे बच्चे अपने जन्मदिन के लिए खूब आतुर होते हैं, वैसे ही मैं अपने जन्मदिन की राह देखता रहता हूँ, पर वो इसलिए देखता हूँ कि सारा 'योगी परिवार' इकट्ठा होगा और हम मिलजुल कर आनंद करेंगे।

और... इन सभी की हाज़िरी से प.पू. गुरुजी के अंतर की इस खुशी का एहसास 'ताड़देव' संकुल में दाखिल होते ही हो जाता था।

मुक्तों को आध्यात्मिक नैवेद्य से तृप्त करने हेतु, हर वर्ष की भांति, प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव की पूर्वसंध्या यानि– **12 मार्च** की सायं **'कल्पवृक्ष'** हॉल में **'काकाजी-पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी'** के संदर्भ में सत्संग सभा का आयोजन हुआ। सभा में प.भ. राकेशभाई एवं प.भ. डॉ. दिव्यांग ने 2013 में पेरिस में हुए 'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' के उपलक्ष्य में बनाया गया भजन 'अक्षरधाम से योगीजी लेकर आए दिव्य जोड़ी...' प्रस्तुत किया। तत्पश्चात्, पवई के पू. अश्विनभाई ने प.पू. काकाजी-प.पू. पप्पाजी एवं प.पू. गुरुजी का माहात्म्य दर्शन कराते प्रसंग बताए। अमदावाद के प.भ. परेशभाई दोषी एवं दिल्ली सत्संग समाज से एक वर्ष पूर्व ही जुड़े प.भ. दीपक सेठजी ने अपने अनुभवों से लाभान्वित किया। 'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' के उपक्रम में **सांकरदा** के **पू. बिम्पलभाई** ने **'काकाजी-पप्पाजी की जीवनगाथा'** के रूप में खूब मार्मिक भजन गाकर प्रगट स्वरुपों को इतना राज़ी कर लिया कि बहनों के विभाग से **प.पू. हंसा दीदी** ने तो उन्हें बुलावा भेजा और आशीर्वाद देकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। तत्पश्चात्, **प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई, प.पू. गुरुजी** एवं **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** ने आशीर्वाद दिया।

प.पू. गुरुजी के प्रति प्रेम व्यक्त करने हेतु, **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** आज के प्रसाद के लिए **सांकरदा से ही पूरी भोजन सामग्री लेकर आए थे**। सो, सभा के बाद सांकरदा के संतों-साथियों द्वारा **'चूल्हे पर बनाई गई'** बाजरे की रोटी, बैंगन का भरथा और खिचड़ी का प्रसाद सभी ने लिया।

अगले दिन – **13 मार्च** की सुबह 9:00 बजे **'कल्पवृक्ष'** हॉल में, प्रत्यक्ष स्वरूपों की निश्रा में, पू. मैत्रीस्वामी ने महापूजा की। महापूजा के बाद सभा में अमदावाद के प.भ. समीरभाई दवे ने माहात्म्य दर्शन कराया। तत्पश्चात्, सांकरदा के पू. ब्रह्मानंदस्वामी ने काकाजी-पप्पाजी के शताब्दी पर्व एवं बड़े पुरुषों का प्राकट्य पर्व किस प्रकार मनाया जाए, इस हेतु गद्गद् कंठ से-अंतर से-प्रार्थना की। प.पू. गुरुजी ने भी इसके प्रत्युत्तर स्वरूप आशीर्वाद दिया। गुणातीत ज्योत के पू. इलेशभाई द्वारा 'दिव्य जीवनना दिव्य आनंदमां...' भजन-प्रस्तुति के बाद दिल्ली के प.भ. जयप्रकाश मल्होत्राजी ने प्रासंगिक उद्‌बोधन किया एवं संत भगवंत साहेबजी के साथी **पू. शांतिदादा** ने आध्यात्मिक राह पर चलने की सूझ देते हुए आशिष वर्षा की।

15 फरवरी को प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के प्राकट्य पर्व पर 'बंधुजोड़ी शताब्दी' के निमित्त सांकरदा में **'शताब्दी कुंभ'** का अनावरण हुआ था। दिल्ली का मुक्त समाज भी, उस शताब्दी कुंभ द्वारा, सेवा करने का मौका प्राप्त कर सके, इस हेतु सांकरदा के पू. बापुस्वामी एवं पू. ब्रह्मानंदस्वामी ने प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दिनकरभाई के वरद्‌हस्तों से शताब्दी कुंभ का पुनः अनावरण करवाया।

प.पू. गुरुजी को उनके चहेते नक्षत्र और पुण्यम् ने, सत्संग के सभी बच्चों की ओर से, प्रार्थना-कार्ड अर्पण किया। तत्पश्चात्, हरिधाम से आए पू. प्रेमस्वरूपस्वामिजी ने आशीर्वाद दिया। प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव निमित्त प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी **सांकरदा से विशिष्ट केक** लेकर आए थे, जिस पर पू. कांतिकाका, पू. गोरधनकाका जैसे पुराने जोगियों के साथ ब्रह्मस्वरूप काकाजी-पप्पाजी की मूर्ति लगाई गई थी; सो, केक कटिंग की गई। तदोपरांत, प.पू. गुरुजी ने 12 मार्च की सायं गुजराती में जो आशीर्वाद दिया था, उसी के संदर्भ में बातें की। दिल्ली मंदिर से जुड़े प.भ. राम वर्माजी की बेटी 'कीर्ति' ने, रातभर जाग कर, प.पू. गुरुजी के प्रति अपनी भावना व्यक्त करता कार्ड बनाया था। अतः सभा के अंत में प.भ. राम वर्माजी ने उस कार्ड को पढ़ कर सुनाया। विसर्जन प्रार्थना के बाद सभी ने प्रसाद लिया और स्वयंसेवक सायं के उत्सव की तैयारियों में जुट गए।

प.पू. गुरुजी का प्राकट्योत्सव समग्र उत्तर भारत के मुक्तों के लिए दीवाली जैसा अत्यंत शुभ प्रसंग कहा जाए। प.भ. विपिन की पोशाक से ऐसा प्रतीत हो रहा था, जब सायं करीब पौने छः बजे अपनी शादी वाला जोड़ा पहन कर, सारथी बन कर, वह 'श्वेत हंसरूपी' टमटम में प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, पू. प्रेमस्वामिजी, पू. दासस्वामिजी एवं पू. मल्कानी अंकल को **'तीन फरवरी पार्क' के 'कल्पवृक्ष'** में लेकर आया। पंडाल की दीवारों को 'गुणातीत समाज के ध्वज' के रंगों से सजाया था। दोनों दीवारों पर राष्ट्रीय तिरंगा व गुणातीत समाज का ध्वज एक के बाद एक लगाया था। पंडाल की छत के बीचोंबीच, पुराने समय के जैसे हाथपंखे लगाए थे, जिस पर स्वामिनारायण का तिलक-चांदला अंकित था।

मंच की पृष्ठभूमि पर प.पू. गुरुजी के निमंत्रण कार्ड पर दिए **'प्रगट का सहज योग'** का दर्शन हो ही रहा था। आवाह्न धुन एवं भजन के बाद प.भ. राकेशभाई शाह ने पृष्ठभूमि का विवरण देते हुए बताया –

भगवान स्वामिनारायण ने **वचनामृत प्रथम 62** में 'भगवान के स्वरूप' से दृढ़ संबंध कर लेने **मात्र से** जो प्राप्ति होती है, वो मर्म यहाँ दर्शाया गया है और हमारे लिए उसका अनूठा हुबहू दृष्टांत हैं– हम सभी के प्यारे प.पू. गुरुजी!

तो, जैसा कि पृष्ठभूमि पर लिखा है–

नेत्र का दीए से संबंध होने पर उसका प्रकाश नेत्र को मिलता है।

इससे नेत्र के आगे का अंधेरा नष्ट होता है और नेत्र से सब कुछ दिखाई देता है।

इसी प्रकार, 'भगवान के स्वरूप का' जिसे दृढ़ निश्चय हो, उसका भगवान के साथ सीधा संबंध है;

सो, उसमें (ऐसे संत में) उनके द्वारा (भगवान के स्वरूप द्वारा) भगवान के कल्याणकारी गुण सहज ही आ जाते हैं।

कोई जटिल समस्या सुलझाने - उसका हल निकालने - के लिए खूब मशक़्क़त करनी पड़ती है, पर यदि ताला खोलने की चाबी की तरह कोई तरकीब - चाबी जैसी करामत - हाथ लग जाए तो फट् से और वो भी खूब आसानी से वह समस्या हल हो जाती है।

भगवान स्वामिनारायण ने उनके कल्याणकारी गुण खूब सहज तरीके से व त्वरित प्राप्त कर लेने के लिए, **गुणातीत स्वरूप** कहो- **परम एकांतिक संत** कहो- **वड़वानल अग्नि जैसे संत** कहो या **अतिशय बड़े संत** कहो– उन्हें धरती पर अखंड रख कर, उनसे अतिदृढ़ संबंध कर लेने की चाबी बता दी है।

ब्रह्मस्वरूप काकाजी द्वारा समझाई गई इस बात पर संपूर्ण भरोसा रखते हुए, प.पू. गुरुजी ने, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज से अनन्यभाव का संबंध दृढ़ कर लिया।

और... उनके **'महज़ अनुग्रह' से** जंगम मंदिर बने ऐसे प.पू. गुरुजी हमें नसीब हुए !

उनकी हर एक बात, प्रसंग, क्रिया में एक ही संकेत है–

'अन्य व्यर्थ उपाय - साधुता का ऊपरी दिखावा छोड़ कर,

पहले भगवत्स्वरूप विभूति से हम संबंध दृढ़ कर लें और... उनसे प्रभु के कल्याणकारी गुण प्राप्त कर लें।'

प.पू. गुरुजी बताते हैं, *इसे कहते हैं – 'प्रगट का सहज योग'!*

ऐसे गुरुजी को शत्-शत् नमन जिन्होंने आश्चर्यकारक रूप से प्रगट के संबंध की यह उपलब्धि हासिल की और आज उस उपलब्धि से हमें निहाल करने का एकमात्र उद्यम कर रहे हैं...

आजकल के माहौल में पोषित युवा पीढ़ी में सत्संग की क्या गरज देख पाएँगे? लेकिन, जिन युवाओं ने बचपन से मतलब– जब से स्कूल जाने की शुरुआत ही की और परिवार को प.पू. गुरुजी का संबंध प्राप्त हुआ- उनका तो मानो सत्संग में ही जन्म हुआ कहा जाए। दिल्ली मंदिर के ऐसे अत्यंत निजी, प.भ. पुनीत गोयलजी के छोटे सुपुत्र प.भ. ऋषभ गोयल ने प.पू. गुरुजी का माहात्म्यगान करते हुए भक्ति अदा की। वज़ीरपुर क्षेत्र के पूर्व विधायक एवं प.पू. गुरुजी से घनिष्ठता से जुड़े श्री महेन्द्र नागपालजी ने भी सभा को संबोधित किया। तत्पश्चात्, पुष्प हार व कलगी द्वारा स्वरूपों एवं गणमान्यों अतिथियों का स्वागत-अभिवादन किया गया। दिल्ली मंदिर से जुड़े मुक्तों, गुणातीत समाज के अन्य केन्द्रों से आए मुक्तों ने, प.पू. गुरुजी को हार एवं स्मृति भेंट

अर्पण करके, आनंद व्यक्त किया। स्वागत-अभिनंदन के पश्चात् **प.पू. वशीभाई** ने माहात्म्य दर्शन कराया और फिर प.पू. गुरुजी से खूब अपनेपन से जुड़े गायक श्री दीपक कुमारजी द्वारा *'भगवा रे-भगवा रे, ऐसा रंग दो मेरा मनवा...'* भजन की प्रस्तुति के बाद, प.पू. गुरुजी के सखास्वरूप, **पू. दासस्वामिजी** ने पृष्ठभूमि पर दिखाए गए रहस्य के आधार पर प्रसंगों द्वारा माहात्म्यगान किया।

तत्पश्चात् **श्री दीपक कुमारजी** ने प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव निमित्त **प.भ. राकेशभाई द्वारा रचित** प्रार्थना **भजन– *'गुरु के कहने पे तू चलियो, जीतेजी सुखी कर देगा...'*** प्रस्तुत किया। श्री दीपक कुमारजी ने यह भजन अंतर से ऐसी प्रार्थना करते हुए गाया कि सभी को खूब स्पर्श कर गया। प.पू. गुरुजी ने उन्हें हार व 'सूट लॅन्थ' ओढ़ा कर अपनी प्रसन्नता भी व्यक्त की! संत भगवंत प.पू. साहेबजी की दिव्य प्रतीति कराते हुए प.पू. शांतिदादा ने आशिष वर्षा की। वज़ीरपुर क्षेत्र के विधायक श्री राजेश गुप्ताजी के संबोधन के बाद प.पू. भरतभाई ने आशीर्वाद दिया। प्यारे नक्षु ने भी निर्दोषहृदय से अपनी बालसहज प्रार्थना प.पू. गुरुजी के श्रीचरणों में अर्पित की। सांकरदा मंदिर के पू. बिम्पलभाई प.पू. गुरुजी के प्रति भक्ति अदा करने हेतु हिन्दी में एक भजन– *'अलौकिक पुरुष हैं गुरुजी...'* बना कर लाए थे, वह उन्होंने पू. राकेशभाई एवं डॉ. दिव्यांग के साथ मिल कर गाया। भजन के बाद, प.पू. गुरुजी की निखालिस वाणी द्वारा साधना मार्ग के अनेक मार्मिक रहस्यों को उजागर करती सी.डी., **'मार्गदर्शिका भाग-9'** का अनावरण करते हुए **प.पू. दिनकरभाई** ने आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् **प.पू. गुरुजी** ने अपने कुटुंबियों के प्रति अंतर का प्रेम बरसाते हुए आशीर्वाद दिया और... ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज द्वारा संतों के लिए नियुक्त किए गए **दो गवर्नर्स में से एक प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** ने 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना को उजागर करते हुए आशीर्वाद दिया। सभा के अंत में सत्संग के युवाओं ने संत से अनन्यभाव का संबंध करने की भावना व्यक्त करते हुए **'भांगड़ा'** प्रस्तुत करके इस आनंदोत्सव की पूर्णाहुति की।

खूब गहराई से यदि सोचें तो, प्रतिवर्ष प.पू. गुरुजी का प्राकट्य दिन आनंदोत्सव एक 'आध्यात्मिक शिविर' के रूप में तबदील होता जा रहा है। सच, मुक्तों द्वारा सुनाए, गुणातीत ज्ञान से भरपूर प्रसंग-अनुभव जीतेजी सुखी होने का अमूल्य साधन हैं। इससे संतों, साधकों, गृहस्थों को पूरे साल मनन-चिंतन करके, आगे बढ़ने की आसान राह-मार्गदर्शन मिल जाता है... सो, **12 जून** को आ रहे **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के प्राकट्य पर्व** पर उनके श्रीचरणों में करोड़ों नमन, जिन्होंने हमारी त्वरित प्रगति कराने के लिए, निरंतर उद्यम कर रहे प.पू. गुरुजी जैसी विभूति की अनमोल भेंट देकर हमें निहाल किया...

तो, **हे काकाजी!** 12-13 मार्च को हुए आध्यात्मिक शिविर में, गुणातीत स्वरुपों के आशीर्वाद एवं महामुक्तों द्वारा बताए गए स्वानुभवों का मनन-चिंतन करते हुए, **हमारे आत्मिक विकास हेतु कोई भी सूत्र अंतर में ऐसा बिठा देना कि बस आप व ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी जिस प्रकार के 'गुणातीत समाज' की चाहना रखते हैं, उसके हम सही अर्थ में सहभागी बनें...**

✡✡✡

12 मार्च , 2015—प.पू. गुरुजी के 78वें प्राकट्योत्सव की पूर्वसंध्या

(ध्वनिमुद्रण से संकलित)

पू. अश्विनभाई (पवई)

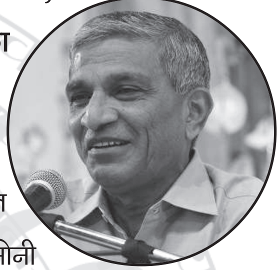

...गुरुजी का दर्शन करते हैं, तो काकाजी की याद आ जाती है; क्योंकि, गुरुजी सबके साथ एक संबंध ही देखते हैं – काकाजी का संबंध – पप्पाजी का संबंध। स्वामिनारायण का कोई भी हो उसका संबंध देख कर उसकी सेवा कर लेने के लिए वे सदैव तत्पर रहते हैं। ऐसा दर्शन गुरुजी कायम कराते हैं।

ड्राईविंग की सेवा निमित्त काकाजी के साथ बहुत जाना होता था। इससे संबंधित एक ख़ास प्रसंग है – जब हम विमुख हुए तो रतिभाई सोनी के भाई, हिंमतलाल सोनी ने काकाजी का बहुत विरोध किया था। लेकिन, बाद में संस्था से उन्हें ज़्यादा रिसपॉन्स नहीं मिला, तो वे अपनी समस्या लेकर काकाजी के पास आए। काकाजी ने तो अपना मान कर सब कुछ अपने सिर पर लेकर उसकी प्रॉब्लेम हल कर दी।

काकाजी ने मुझसे कहा कि हम गणेशपुरी जाएँ। तो, मैं और काकाजी शाम के समय जा रहे थे। हिंमतभाई बोरीवली रहते थे। मलाड-कांदिवली आया तो काकाजी बोले – *चलो अश्विनभाई, आज तुम्हें गुंडों का अच्छा दर्शन कराऊँ।* काकाजी ने जब गुंडों का नाम लिया, तो मुझे हुआ कि गुंडों को काकाजी की महिमा थोड़े ही है, वे मिसबिहेव करें या कुछ करें तो ? मैंने कहा – *हमें नहीं जाना।* वे बोले – *नहीं, जाना ही है।* मैंने दोबारा कहा – *नहीं जाना है।* फिर तो जहाँ बोरीवली आया, वहीं काकाजी बोले – *तू गाड़ी लेफ्ट टर्न ले ले, वर्ना मैं चलती गाड़ी में से उतर जाऊँगा।* फिर तो गाड़ी मोड़नी ही पड़ी। फॉरेन भेजने के लाईज़न एजन्ट का काम करते हुए हिंमतलालभाई ने पैसे-वैसे लिए होंगे। गाड़ी पार्क करके मैं ऊपर गया, तो वहाँ देखा कि गुंडे टाइप के लोग बैठे थे। काकाजी वहीं उनके बीच जाकर बैठ गए। मैंने सोचा कि यहाँ तो अपना कुछ नहीं चलेगा, देखते रहो। काकाजी ने उन सबको कन्वीन्स किया – *सोमवार को आ जाओ, आपका काम कर देंगे, आप इसे परेशान मत करो।* दरअसल, गुंड़ों ने उनकी वाइफ और बहू को कीचन में बंद कर दिया था और उनसे कहा था – *आप खाना बनाओगे, हम खाएँगे और पैसे लेकर जाएँगे।* फिर तो हम गणेशपुरी के लिए निकल गए; पीछे-पीछे वे सब वहीं आए। उनका दलाल गुजराती था, उससे काकाजी ने कहा – *तू इन लोगों को समझा कि इनका काम हो जाएगा।* काकाजी ने उससे कहा – *आज तू मेरी बात मान ले, पर जब तुझे मेरी जरूरत होगी, तब मैं नहीं मिलूँगा...* हिंमतभाई का काम हो गया, पर फिर अगले दिन से उसने आना बंद कर दिया ! यूँ, **काकाजी ने सिर्फ संबंध देख कर सारा प्रसंग संभाल लिया था।**

इसी तरह गुरुजी का भी प्रसंग सुना है कि पप्पाजी के एक भक्त दिल्ली आए थे और वे धाम में गए तो गुरुजी ने पप्पाजी से कहा– *आप यहां नहीं आ जाना - विद्यानगर ही रहना, मैं सब संभाल लूँगा।* यूँ, **गुरुजी मौके की सेवा करके हमें बताते हैं।** कल ही गुरुजी ने एक ऐसा दर्शन कराया। दो दिन से दिनकरभाई और मैं यहाँ आए हैं। 'शिक्षापत्री' की कुछ बात चल रही थी; वह स्केन करके देनी थी। दिनकरभाई ने कहा था – *बाद में भेज देना।* पर, अक्षरस्वामी और भाविक ने सारी रात जाग कर वह स्केन करके दे दी। सुबह साढ़े छः बजे अक्षरस्वामी को गुरुजी ने बुलाया और कहा – *देखो, यह जो सेवा की, वह मौके की सेवा हुई। इससे बड़े पुरुष की प्रसन्नता सहज मिल जाती है।* इस प्रकार **अपने सेवकों को भी गुरुजी ऐसी सीख देते हैं।**

दूसरा एक प्रसंग गुरुजी के साथ का – **गुरुजी किसी को कोई भी वेल्यूअबल चीज़ देने में हिचकते नहीं हैं और उन्हें ऐसा भी नहीं कि यह चीज़ इसे दूँगा, तो यह मुझ पर खुश हो जाएगा। पर, वे एक ही चीज़ देखते हैं कि ये सब संबंध वाले हैं।** हम देखते हैं कि **दिल्ली के 'गुणातीत परिवार' के जो भी भक्त हैं, उनका गुरुजी के साथ एक निजी संबंध है** और उसका दर्शन हमें यहाँ होता है। काकाजी और पप्पाजी के ऐसे प्रसंग भी याद आते हैं। 1998 में दिनकरभाई की बेटी ॲमी की शादी के समय मुझे पप्पाजी की सेवा में रहने का मौका मिला। मैं भले ही पप्पाजी की सेवा में था, लेकिन पप्पाजी मेरी सेवा करते थे। सेवा भी – हाथ पकड़ कर चलना था वगैरह...। और कोई निजी सेवा तो उन्होंने करने नहीं दी। मैं पप्पाजी के कमरे में रहता था और बहनें सामने वाले कमरे में रहती थीं। होटल में उनके कमरे में नीचे सोना होता था, तो नीलम बहन से कहते कि पहले इसका बिस्तर लगा दो। नीलम बहन कितनी बड़ी! यूँ **पप्पाजी छोटे से छोटे सेवक का भी ध्यान रखते कि इसकी व्यवस्था हुई?** अगले दिन लीला का एक प्रसंग हुआ। हम शादी में गए थे तो पप्पाजी बोले – *हमने दो दिन बहुत खाया है, सो आज व्रत करना है।* बहनों से कह दो – *आज खाना नहीं खाना, व्रत करेंगे।* सो, मैंने सुष्मी बहन से कहा – *पप्पाजी आज खाना नहीं खाएँगे।* पंद्रह मिनिट हुए होंगे कि दो लड़कियाँ – आर.डी. काका की 'रीटा बहन' और सनी की वाइफ 'किरण बहन' पापड़ी का आटा और मेथी के पकौड़े लेकर आईं। पप्पाजी तो कमरे में बैठ कर तुरंत खाने लगे, मानो राह ही देख रहे हों। एक तरफ व्रत करने के लिए कहा था, पर वे तो भाव ही ग्रहण कर रहे थे, उन्हें खाने से कोई लेना-देना नहीं था। यह तो हुआ, लेकिन बाद में ग्यारह - बारह बजे विमलकुमार और ॲमी पप्पाजी के पैर छूने के लिए आए। नीलम बहन ने उन्हें खिलाने के लिए पीज़ा मंगवाया था। तो, पप्पाजी खुद वहाँ गए और पीज़ा का एक पीस लेकर खुद खाने लगे...

इसी प्रकार गुरुजी ने लाईव दर्शन कराया। नक्षु के एग्ज़ाम्स का आख़िरी दिन था। गुरुजी ने उससे कमिट किया होगा कि तुझे बर्गर खिलाऊँगा। हम अक्षरविहारीस्वामिजी को लेने के लिए एयरपोर्ट गए, तो वहाँ से सबको 'बर्गर किंग' का बर्गर खिलाने के लिए ले गए। अब गुरुजी को बर्गर से क्या कुछ लेना-देना है, लेकिन नक्षु के कारण... तो, **जैसे काकाजी-पप्पाजी के दर्शन होते थे, ऐसे ही गुरुजी दर्शन कराते हैं।**

तो, आज के दिन गुरुजी, आपके चरणों में यही प्रार्थना कि हम आपको दिल से राजी कर सकें।

प.भ. परेशभाई दोषी (अमदावाद)

...मुंबई के नागरदासभाई कोठारी मेरे नाना थे, सो जन्म से ही मुझे सत्संग मिला हुआ है। यह मेरा सौभाग्य है कि **बचपन में जब-जब मुंबई जाता था, तब-तब काकाजी जैसी विभूति के दर्शन करता** और मैं अपना सौभाग्य यह भी मानता हूँ कि **आज प.पू. गुरुजी जैसे संत की गोद और उनकी शरण मिली, जो एक चैतन्यमाँ बन कर मेरी परवरिश कर रहे हैं।**

हम पुराने अमदावाद के इस्टर्न पार्ट में रहते थे। जरूरत पड़ने पर मैंने एक नया बंगला बुक किया। 1 साल बाद पज़ेशन मिला। थोड़ा जो काम करवाना था, वह भी करवा लिया। फिर गुरुजी से प्रार्थना की कि आप पधरामनी करने के लिए आएं। कुछ हरिभक्तों के साथ गुरुजी पधारे। तब एक हरिभक्त ने गुरुजी से कहा– परेशभाई का बंगला तो हो गया है, अब आप इन्हें आशीर्वाद दो कि एक गाड़ी भी हो जाए। पर, सरप्राइज़ींग्ली गुरुजी ने कहा– *यह घर तो अच्छा है, लेकिन हमें इससे भी अच्छे में जाना है।* थोड़ी देर बाद मुझसे कहा– *एक काम करो, तुम इसे बेच दो और जहां परिमलभाई-शैलेषभाई रहते हैं, उनके बगल का फ्लेट तुम खरीद लो।* इट वॉज़ ए प्लॅज़न्ट सरप्राईज़ फॉर मी और मैंने अपना वह बंगला बेच दिया। फिर गुरुजी के कहे मुताबिक, वो फ्लैट भी ले लिया। यह करीब 5 साल पहले की बात है, लेकिन तब और आज भी मेरे लिए यह एक सपने जैसा है। **कहां मैं उस पुराने अमदावाद में कुएं के मेंढक की तरह सड़ता रहता ! आज मेरा जीवन ही बदल गया।** पॉश एरिया में आ गया– वह सब तो ठीक है, पर जब मैंने वो बंगला बुक किया था, तब मेरी यह कॅल्क्यूलेशन थी कि वहां से मेरा ऑफिस नज़दीक था, सोशियली भी मैं ज़्यादा कनेक्टेड था, बस या रेलवे-स्टेशन सब नज़दीक थे। नॉर्मली हम जब कोई घर लेते हैं, तो ये सारी चीज़ें देखते ही हैं। लेकिन, वहां मैं सत्संगियों से काफी डिस्टन्स पर था, जबकि **आज सत्संगियों का, सभा का और जब भी गुरुजी अमदावाद पधारते हैं, तो मुझे शत-प्रतिशत लाभ मिलता है, जो मुझे वहाँ नहीं मिल सकता था।** आज मुझे समझ में आता है कि गुरुजी उस समय ऐसा क्यों बोले कि यह घर तो अच्छा है, लेकिन इससे भी अच्छे में जाना है। धन्यवाद गुरुजी को कि अब मैं सही जीवन जी रहा हूँ।

इसके अलावा एक और प्रसंग है –गुरुजी एक बार अमदावाद पधारे थे और वहीं से दिल्ली लौट रहे थे। मैंने गुरुजी से एक प्रार्थना की कि गुरुजी मैं कई हरिभक्तों को देखता हूँ कि वे धन से काफी सेवा करते हैं; उन्हें देख कर मेरे मन में भी आता है कि मैं भी बहुत पैसे कमाऊं और सेवा करूं। तो, गुरुजी ने बड़ी सहजता से कहा– *ठीक है, तुम्हारी भावना है कि तुम सेवा करना चाहते हो, वो एक बात है। लेकिन,* ***सबसे बड़ी सेवा यह है कि तुम्हारी निष्ठा पक्की हो जाए। तुम्हारी निष्ठा पक्की होगी, तो बाक़ी सारी चीज़ें महाराज अपने आप कर देंगे।*** इससे ख्याल पड़ता है कि **गुरुजी अपने निःस्वार्थ प्रेम, निखालसभाव और शूरवीरता से हरिभक्तों का कल्याण करना चाहते हैं।** इसके लिए उनका जो अथक परिश्रम देखते हैं, वो सच में किसी सामान्य व्यक्ति या संत में तो मुझे दिखाई नहीं पड़ता। **यह तो उसी में हो सकता है, जिसमें प्रभु स्वयं विराजमान रहकर काम करते हैं।**

इसके अलावा एक और बात–मेरी शादी होने वाली थी। मेरी वाइफ 'बॅप्स' में मानती हैं। मैंने गुरुजी से कहा– *यह लड़की तो 'बॅप्स' में मानती है; तो आप ऐसा कुछ करो कि वह हमारे साथ जुड़ जाए।* गुरुजी ने कहा– ***'बॅप्स' में मानती है तो क्या हुआ? हम सब एक ही हैं।*** *लेकिन, अगर तुम सच में चाहते हो कि वो हमारे साथ भी जुड़ जाए, तो–*

तुम्हारा खुद का वर्तन, तुम्हारा जीवन और घर में ऐसे संप के साथ रहो। सिर्फ घर में नहीं, अमदावाद में जो भी सत्संगी हैं, उनके साथ का तुम्हारा जीवन ऐसा संप, सुहृद्‌भाव और एकता का होना चाहिए, जिससे कि वो खुद तुम चाहते हो वैसी जुड़ जाए। इसके लिए खींचतानीं या ज़ोर-जबरदस्ती करेंगे, तो फिर दूसरों में और हमारे में कोई फर्क नहीं है।

तो, आज के दिन काकाजी, गुणातीत स्वरूपों व गुरुजी के चरणों में यही प्रार्थना है कि हमें ऐसा बना दीजिए कि **हम कहीं पर भी जाएँ, तो हमें अपना परिचय देने की जरूरत न पड़े कि हम 'गुणातीत समाज' के हैं, हम काकाजी-गुरुजी के हैं।** हमारा जीवन – हमारा वर्तन ऐसा हो कि हर एक **अपने आप समझ जाए कि ये 'गुणातीत समाज' के हैं...**

प.भ. दीपक सेठ (दिल्ली)

...3 मार्च को मैं अपनी वाइफ और 2 साल की बिटिया के साथ घूमने निकला था। वाइफ ने कहा– *हम किसी अच्छे पार्क में चलते हैं, वहां बच्चा खेलेगा, थोड़ा एन्जॉय करेगा।* मैंने कहा– *अशोक विहार में एक बड़ा सुंदर पार्क है–**'तीन फरवरी पार्क'**, आज वहीं चलते हैं।* हम पार्क में पहली बार जब आए, तब रात के 8 बज कर 5 मिनिट हुए थे। वहां दालिया साहब ने कहा– *बेटा, पार्क तो बंद हो चुका है...* यह सुनते ही मेरी बिटिया ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। मैंने गाड़ी राइट को रीवर्स की। मंदिर सजा हुआ था, काफी फूल लगे हुए थे। बाद में पता लगा कि एक दिन पहले ही फंक्शन हुआ था। मेरी बिटिया कहने लगी– *पापा, इस मंदिर में जाना है।* मुझे हुआ– बच्चा है, पार्क नहीं तो मंदिर ही सही, उसे कुछ एंटर्टेन्मेंट चाहिए।

मज़े की बात यह हुई कि मेरी वाइफ भी साथ में कहने लगी– *हाँ, इस मंदिर में चलते हैं।*

मैंने कहा– *ये पिकनिक स्पॉट नहीं है, यह मंदिर है और तुम इस एरिया में नई आई हो। मैं 36 साल से अशोक विहार में रह रहा हूँ। यह **'प्राइवेट मंदिर'** है, कोई आम सनातन धर्म का मंदिर नहीं है कि घंटी मारी और अंदर चले गए। मैं आज तक इस मंदिर में नहीं गया, जबकि मुझे अशोक विहार की हर गली पता है। मेरे ख्याल से यह गुजरातियों का मंदिर है।*

वाइफ ने कहा– *'अक्षरधाम मंदिर' जैसा लग रहा है।*

मैंने कहा– *हम पंजाबी कम्युनिटी के लोग हैं, यह गुजरातियों का मंदिर होगा।*

इतने में बिटिया और तेज़ रोने लगी– *नहीं, पापा चलना है।*

और... उसने मुझे हिट करना-मारना शुरू कर दिया, पैर पटकने लगी; वाइफ भी मुझे सपोर्ट न करके, बच्चे को सपोर्ट करते हुए कहने लगी– *नहीं-नहीं, बच्चा ज़िद्द कर रहा है।*

उसी टाइम गुरुजी ने कुछ ऐसी आज्ञा की होगी या कुछ हुआ होगा कि गेट कीपर ने गेट खोल दिया था। शायद कोई गाड़ी रिवर्स हो रही थी या कुछ। तभी मैंने मौका देख कर अपनी गाड़ी अंदर ले ली। जैसे ही गाड़ी अंदर गई, मल्होत्रा अंकल को बाहर गेट पर खड़े देखा। मैंने गाड़ी से उतर कर सीधे उनके पैर छूए और कहा– *अंकल नमस्कार, मेरा नाम दीपक है; मैं अशोक विहार से आया हूँ, हमें मंदिर देखना है, बच्चा ज़िद्द कर रहा है।*

उन्होंने कहा– *बेटे आओ, मोस्ट वेलकम।* मुझे लगा, चलो एप्रोच लग गई। फिर मैंने अंकल से नाम पूछा, तो उन्होंने बताया कि उनका नाम जयप्रकाश मल्होत्रा है। मैंने सोचा कि चलो, पंजाबी को पंजाबी मिल गए, यह काम बढ़िया हो गया। वाइफ को उस टाइम पाँव में फ्रेक्चर था। इतने में गंगा दीदी और डॉली आंटी आईं। वाइफ की हेल्प करके वे उन्हें (वाइफ को) लिफ्ट से हॉल में ले गईं। वहाँ राकेश अंकल ने मुझे बताया कि कल हमारे गुरुजी का बर्थडे था और कल जो फंक्शन हुआ, उसमें लाइट की ग्लॅर के कारण गुरुजी को लड़कों का डांस अच्छी तरह दिखाई नहीं दिया, सो वह डांस वे दोबारा देखना चाह रहे थे। तो, विपिन वगैरह काफी लड़कों ने डांस किया और राकेश अंकल ने गुरुजी से पहचान करा कर मुझे बिल्कुल साथ में बिठाया... डांस परफॉर्मन्स खतम हुई और हॉल देख कर फिर मैं नीचे के हॉल में जाकर बैठा।

मैं ख़ुद हिन्दू हूँ, बचपन से मंदिरों में जाता रहा हूँ। मुझे हमेशा ऐसा रहता था कि किसी भी नई जगह पर जाता, तो दो चीजें जरूर देखता था। वहां पर कोई फेमस मंदिर, गुरुद्वारा, कुछ भी हो और एक कोई अच्छी-सी खाने-पीने की जगह हो। मुझे खाने-पीने की अच्छी-सी जगह पर जाने का बड़ा शौक़ है। पर, कहीं भी जाता था, तो लगता था कि हिन्दू टेम्पल्स आर वेरी डर्टी, मतलब– नीटनेस नहीं होती। जब मैं यहां पर आया और गुरुजी से मिला, तो पहला इम्प्रेशन एकदम से यही पड़ा कि–

वाउ, ही इज़ सो ग्रेसफुल, ही इज़ सो गुड लुकिंग, नीटनेस भी खूब। मंदिर में सब लोगों को देखा– **मुझे एहसास हुआ– वेरी नाइस प्लेस, बहुत अच्छी जगह है।** मिलते ही गुरुजी ने किताब दी। **मैं यहाँ आने से पहले मंदिरों में सिर्फ पंडितों से मिला था, जिन्होंने मुझे शायद कभी कुछ दिया नहीं। मैंने अपने आप उन्हें कुछ भेंट-दक्षिणा दी हो, तब ही प्रसाद मिला। मुझे किताब देकर गुरुजी ने कहा कि पढ़ना। आई फेल्ट वेरी हॅपी और मुझे हुआ कि वेरी सिस्टमेटिक मॅन, परफेक्शिनिस्ट– मतलब बहुत जबरदस्त!** मैं इम्प्रेस हुआ।

जाते हुए मैंने मल्होत्रा अंकल से पूछा– *अंकल, मैं दोबारा आ सकता हूँ?*

क्योंकि मेरे मन में था कि यह 'प्राइवेट मंदिर' है और यहाँ बार-बार आने के लिए परमीशन लेनी पड़ती होगी।

उन्होंने कहा– *जरूर आइए, मोस्ट वेलकम।*

2-3 दिन मैं मंदिर में नहीं आया। तो, मल्होत्रा अंकल का फोन आया कि हमारे यहां पर **'अखंड परिक्रमा'** शुरू हो रही है, आप आइए। 7 मार्च को मैं आया और परिक्रमा अटेंड की। परिक्रमा करते-करते ही मल्होत्रा अंकल मुझे कुछ समझा रहे थे, तो गुरुजी ने इशारा किया कि बातें नहीं करो। तो, मुझे और विश्वास हो गया कि वेरी सिस्मेटिक पर्सन, वेरी परफेक्शिनिस्ट। मतलब जब परिक्रमा चल रही हो, तो बात करने का मतलब ही नहीं। मैंने सोचा–बहुत बढ़िया बात है। 2-3 दिन और बीते कि 11 मार्च को होली आई। सबने मुझसे कहा कि आप जरूर आइएगा। मैं वैसे होली खेलना पसंद नहीं करता, बट जब मुझे बताया गया कि चंदन की होली होती है, तो मैंने सोचा कि बड़ा बढ़िया स्टाइल है; चलो जाकर देखते हैं। सो, हम तीनों आए। महापूजा पहली बार अटेंड की, चंदन से होली खेली और गुरुजी को टीका किया। उस दिन से लेकर आज तक एक साल और करीब 10 दिन हुए हैं। इस दौरान बहुत कुछ नया हुआ है। मुझे समझ में नहीं आता कहां से शुरू करूं? क्या बोलूं?

और... **आनंद जिसे कहते हैं उसका एहसास गुरुजी से मिल कर ही हुआ है–ऐसा समझता हूँ।**

✳ **गुरुजी की वाणी जब सुनता हूँ तब आनंद आता है।**

✳ **जब गुरुजी धुन करवाते हैं, तब आनंद आता है।**

✳ **जब महापूजा में बैठता हूँ, तब आनंद आता है।**

✳ **जब शाम को मैं ऑफिस से आता हूँ और आकर मंदिर में बैठ जाता हूँ, तब आनंद आता है।**

✳ **यहाँ अजनबी लोगों से, जिन्हें मैं जानता नहीं था, उनसे मिलकर आनंद आता है।**

मुझे समझ नहीं आता कि मुझे आनंद कब-कब आता है? 'आनंद' शब्द पर गुरुजी बहुत ज़ोर देते हैं। वो आनंद कितनी डिफरंट वैरियेशन्स में मुझे मिलता है वह बता नहीं सकता।

फिर तो मैं हर रोज़, 'विधाउट फेइल', मंदिर आने लगा... एक दिन शाम को मैंने मंदिर में प्रसाद लिया, तो संकल्पस्वामिजी ने मुझे खाना परोसा।

मैंने कहा– *स्वामिजी, प्लीज़ आप ऐसा मत करो, मैं खुद ले लूंगा।*

उन्होंने कहा– *यहां तो ऐसा ही सिस्टिम है, कोई बात नहीं, आप प्लीज़ खाइए।*

अगले दिन, गुरुजी के साथ हम एक हरिभक्त के यहाँ शादी में गए थे; वहां गुरुजी ने मुझे इशारे से कहा कि यहां मेरे पास बैठो। गुरुजी के पास संकल्पस्वामिजी और अक्षरस्वामिजी बैठे थे। जैसे ही कुछ खाने-पीने का सामान आया, तो गुरुजी ने मुझसे कहा कि संतों को सर्व करो। मैंने सोचा–कल स्वामिजी मुझे सर्व कर रहे थे, आज मैं इन्हें सर्व कर रहा हूँ, ये तो बिल्कुल कैश पेमेंट हो गई–हाथ के हाथ ही! मतलब–कुछ डिले नहीं हुआ... बड़ा अच्छा लगा।

मैं क्षमा चाहता हूँ–एक बात और कहना चाहता हूँ। मैं नॉनवेज बहुत खाता था। नॉनवेज खाने का मेरा रुटीन था और आई वॉज़ फॉन्ड ऑफ इट। एक दिन मम्मी ने पूछा– *आजकल तो तुम मंदिर में शाम को खाना*

खाकर आते हो, तो तुम्हारे लिए खाना बनाएँ या नहीं? मैंने कहा – *नहीं, आज मेरा कुछ और मूड है।* मम्मी समझ गईं कि मूड का मतलब क्या है। मंदिर में बैठ कर मैं घड़ी देख रहा था कि जैसे ही सभा खतम होगी, फटाफट मार्किट जाकर पहले वो काम करना है। तो, जैसे ही मैं जाने के लिए उठा, संकल्पस्वामी और अक्षरस्वामी ने मुझे पकड़ लिया और पूछा – *दीपक भैया, आपने कभी हमारे यहां भोजन लिया है?*

मैंने कहा – *स्वामिजी, एकाध बार लिया है। अच्छा होता है, बहुत आनंद आया।*

वे कहने लगे – *आओ, दोबारा लो।*

मैंने कहा – *ठीक है जी।*

मेरा पेट भर गया, तो मैंने सोचा कोई बात नहीं – नेक्स्ट टाइम। पांच-छः दिन बीते फिर दोबारा मेरा मन हुआ। मैंने फ्रेंड्स को भी एस.एम.एस. कर दिया कि इतने बजे उस पॉइन्ट पर पहुंचना है।

मैं जैसे ही उठा कि मुझे स्वामिजी ने फिर रोक लिया और कहा – *भैया, आपने कभी हमारी 'दाल-ढोकली' खाई है?*

मैंने कहा – *खाई तो नहीं, लेकिन आज मेरा पेट ठीक नहीं है। फिर कभी खा लूंगा।*

वे कहने लगे – *'नहीं-नहीं, बहुत अच्छी होती है, थोड़ी-सी खाकर जाओ। मैं बस छोटी-सी कटोरी में दूंगा, थोड़ी सी टेस्ट कर लो।'*

उन्होंने कटोरी में क्या दी कि फिर मैंने पूरा भोजन ही कर लिया! मैंने सोचा यार, ये तो दो बार हो गया! ये चक्कर क्या है?

अप्रैल बीता, 15 मई से **'अनुष्ठान शिविर'** शुरू हुआ। तो, मुझसे सबने कहा कि अनुष्ठान शिविर जिसने अटेंड कर ली, उसके लिए तो धमाका हो जाता है। मतलब उसकी लाइफ में कुछ न कुछ क्रियेटिव हो जाता है। मैंने सोचा, अच्छा चलो देखते हैं, एटेंड करेंगे। तब गुरुजी ने एक स्कीम रखी थी कि जो 30 दिन लगातार 7 बजे से पहले पहुंच जाएगा उसे प्राइज़ मिलेगा। मैंने सोचा, चलो यह भी ट्राई कर लेते हैं... शुरुआत हुई–पहला दिन हुआ, दूसरा दिन हुआ, तीसरा दिन हुआ, लगातार 7 बजे पहुँच जाता। एक दिन ऑफिस में 6.40 पर मैं निकलने लगा कि मेरे बॉस ने कहा– *'ज़रा रुक जाओ, बहुत जरूरी बात करनी है।'* मैंने कहा – *ठीक है सर, रुक जाता हूँ।* मैंने सोचा कि आज तो प्राइज़ कैंसल हो गया, अब नहीं मिल सकता। इतने में बॉस ने आकर कहा – *'नहीं, कल करेंगे।'* मैंने कहा – *'ठीक है जी।'* मैं भाग कर मंदिर आ गया। गुरुजी को बताया कि आज ऐसा-ऐसा हुआ, तो गुरुजी ने स्माइल दी – हिज़ ग्रेशियस स्माइल। वाइफ ने भी मुझसे कहा – *शिविर में हम 30 दिन लगातार जाएंगे और शत-प्रतिशत प्राइज़ लेना है।* गुरुजी 20 मिनिट धुन कराते, फिर कथा होती। हमें बड़ा अच्छा लगा। मैंने सोचा जैसे लोग गुरुद्वारे, मंदिर का 'चलिया' रखते हैं, तो हम ये 30 दिन **नॉनवेज** वगैरह बिल्कुल भी नहीं खाएँगे, मतलब बिल्कुल क्लीन रहेंगे। यूं, 15 मई को शिविर शुरू हुआ और 12 जून को उसका समापन हुआ। हमने कंट्रोल किया, बड़ा अच्छा लगा कि मैंने अपनी स्वाद वृत्ति को कंट्रोल किया और **गुरुजी के आशीर्वाद से आज तक दोबारा उसे हाथ नहीं लगाया।**

गुरुजी ने आज तक कभी नहीं कहा, न मैंने कभी सुना कि गुरुजी ने कभी किसी से कहा हो कि ड्रिंक नहीं करना। कभी प्रवचन में भी इन बातों पर डिस्कशन होते हुए नहीं सुना। मतलब, स्वामिनारायण सत्संग के लिए ये बहुत छोटी बातें हैं, क्योंकि यहां बहुत-बहुत 'हायर क्लास' का सत्संग है, जिसे कहते हैं न 'प्योर, क्रिस्टल क्लीयर सत्संग'। 'ये छोड़ दो, वो छोड़ दो'–ऐसा ज़िक्र आज तक गुरुजी ने हमसे नहीं किया।

मेरे क्लोज़ फ्रेंड्स को बहुत हैरानी हुई, क्योंकि उन्हें यह तो पता है कि जो चीज मैंने एक बार छोड़ी, दोबारा उसे शुरू नहीं किया। फॉर एग्ज़ाम्पल, आज से 8 साल पहले मैंने ड्रिंक छोड़ी थी, तो उसके बाद ड्रिंक नहीं किया। बट, नॉनवेज के लिए वो कभी सोच ही नहीं सकते थे कि ऐसा हो सकता है, क्योंकि मैं तो ऐसा था कि जिन्होंने नहीं खाया था, उन्हें भी मैंने खिलाया है।

...मैंने एक किताब में कहीं पढ़ा था– वॉट इज़ स्ट्रेस? लोग परेशान क्यों हैं? आजकल लोग इतने उदास क्यों रहते हैं? उसमें उत्तर लिखा था–लोग इसलिए परेशान रहते हैं कि जैसे लाइफ चल रही है, उस पर ध्यान न देते हुए, उन्हें कुछ और चाहिए। यूँ अपनी बढ़ती डिज़ायर्स की वजह से लोग परेशान रहते हैं... उनके मन में ऐसा रहता है कि मेरी हर चीज़ डिफरन्ट हो। उसी वजह से सब परेशान रहते हैं। पर, **सत्संग में जब जुड़ा, प्रवचन सुने, तो गुरुजी के एक प्रवचन में सुना कि दान-तप से कुछ नहीं मिलता, भक्तों के साथ आत्मीयता रखने से सब मिलता है, संत की निष्ठा से मिलता है।**

संत क्या होता है? संत किसे कहते हैं? मैंने अपनी जिंदगी में आज तक सिर्फ पंडित देखे थे और बहुत नॉलेजिबल पंडित भी मिले, जिन्हें शास्त्र कंठस्थ हैं, बट **एक संत क्या होता है? साधु क्या होता है? 'संत' शब्द बचपन से सुना है; हिन्दी का यह बहुत सिम्पल वर्ड है, इवन लिखने में बड़ा इज़ी हैं। बट, संत का जो एक ऑरा है, वो गुरुजी से मिल कर फील हुआ। गुरुजी से मिल कर लगा कि नहीं, धीस इज़ समथिंग डिफरंट, ये कुछ और हैं। ये एक नॉर्मल कॅपेसिटी के ह्यूमन बीइंग नहीं हैं। ही इज़ एक्च्युअली समथिंग डिफरंट।**

मैं जो कह रहा था कि लोग परेशान हैं, तो मैं भी इंसान हूँ। मैं भी अपनी लाइफ में कुछ चीज़ों से परेशान रहता था। मेरी फॅमिली में दो-तीन बड़े अच्छे एस्ट्रोलॉजर्स हैं। मुझे उनकी बातों का विश्वास होता था। मैंने उस पर काफी स्टडी किया और 10-12 साल में तो यह आलम हो गया कि हर रोज़ मैं घर वालों के लिए अलग-अलग उपाय करने लगा, पर रविवार को नॉनवेज खाता था। मैंने सोचा कि यह मैं क्या कर रहा हूँ? छः दिन उपाय कर रहा हूँ और सातवें दिन मैं खा-पी लेता हूँ। लेकिन यह सब मैंने बड़ी श्रद्धा-निष्ठा से किया था। जैसा जिसने मुझे समझाया, वैसा मैंने किया... मैं अशोक विहार के लक्ष्मीनारायण मंदिर में 13 साल की उम्र से जा रहा हूँ और हनुमानजी के प्रति मुझे खूब श्रद्धा थी, मैं बहुत मानता था। एक दिन मंदिर में विष्णु भगवानजी के सामने मैंने एक प्रार्थना की कि भगवानजी, सब उपाय करते-करते आई एम फॅडअप, वाकई में तंग आ चुका हूँ... प्लीज़ मुझे अब कुछ रास्ता दिखाओ और मुझे इससे मुक्त करो। जिस दिन मैंने प्रार्थना की उसके 20-22 दिन बाद मैंने दोबारा वही प्रार्थना की और उसके 10 दिन बाद मुझे

यह मंदिर मिल गया, जहां एंटर करते ही बाहर हनुमानजी भी मिल गए। मैंने कुछ नहीं किया, पर मैं 13 साल की उम्र से और आज 36 साल की उम्र हो गई, 23 साल से विधाउट फेल जिस मंदिर में जा रहा था–जो मंदिर मेरे घर से मात्र 200 मीटर की दूरी पर ही है–उसमें मेरा जाना अचानक ऐसा बंद हो गया कि मुझे समझ में नहीं आया कि क्या हो गया...!

प.पू. दिनकर अंकल (शिकागो)

...आज सुबह मीटिंग की थी और उसमें एक बात निकली थी कि **काकाजी-पप्पाजी का शताब्दी पर्व आ रहा है, तब उनके द्वारा सर्जे गए मोती-जेम्स की महिमा का गान हो और उनके भी नेक्स्ट लेवल की जनरेशन के जो मोती हों, उन सबका गुणगान हो सके–ऐसी अक्षरविहारीस्वामिजी की भावना है।** हम सबकी भी वो भावना है और उसके बारे में हर एक सेंटर से भी एक साल के अंदर 2 या 3 या 4 दिन का ऐसा गुणगान का या तो कुछ प्रोग्राम के साथ गुणगान का मौका खड़ा किया जाए। आज से लेकर इन दो साल तक में ऐसे कुछ अच्छे प्रसंग रखें–वो भावना थी। आज गुरुजी का भी वही भाव है कि सत्संग के जो भी ऐसे छुपे रत्न हैं, उनके बारे में भी यहाँ आज या कल ऐसी कुछ जानकारी दी जाए। दीपकजी तो नए आए हैं, मगर सुनकर बहुत आनंद हुआ और जब उनके बारे में और कोई कहेगा, तो वो सोने पे सुहागा होगा। तो, ऐसा हम करें...

प.पू. भरतभाई (पवई)

...**गुरुजी का प्राकट्य पर्व मीन्स आनंदोत्सव !** गुरुजी का दर्शन, बातें आनंद देती हैं और उनके साथ जुड़े हुए सभी भक्तों की बातों में से भी हमें आनंद मिलता है... हर एक साधक के जीवन में दो दिन बहुत महत्वपूर्ण होते हैं–एक गुरु का प्राकट्य दिन और दूसरा गुरुपूर्णिमा!

...काकाजी ने गुरुजी से कहा था– *मैं बहुत मिस्टिक हूँ और तूने मेरे जैसे मिस्टिक का जो भरोसा रखा है, उसमें तुम्हारा काम हो गया!*

गुरुजी भी ऐसे ही मिस्टिक हैं कि उन्हें समझना मुश्किल है। हमारे कांतिभाई देसाई बताते थे कि काकाजी के पास जा रहे हों और बीच में यदि तौलिया पड़ा है, तो वो तौलिया अगर उठाएँगे, तो काकाजी कहेंगे–यह आपको क्या डिस्टर्ब कर रहा था? और... यदि नहीं उठाएँगे, तो कहेंगे–आपको दिखाई नहीं देता कि तौलिया बीच में पड़ा है, तो उठा लें। यूँ दोनों तरह से डांट तो खानी ही होती है। कहने का मतलब यह है कि गुरुजी को भी समझना मुश्किल। पर, **उनकी बातें बहुत सैद्धांतिक हैं और सिद्धांतों से भरी हुई हैं।**

लास्ट इयर तेरह मार्च को हमने एक **कार्ड** बना कर भेजा था और उस**में लिखा था–'प्रगट ब्रह्मस्वरूप गुरुजी'**। गुरुजी ने उसे वापिस भेज दिया और कहा कि यह कार्ड हमें नहीं चाहिए, **इससे खुश नहीं हूँ, मैं**

इससे राज़ी नहीं हूँ। फिर बहुत पूछा तब उन्होंने बताया कि हमें तो यह समझना चाहिए कि **हमें ऐसी बातों में नहीं जाना है। मैं क्या हूँ, वो मुझे पूरा ख्याल है। किसी को भी ऐसा लेबल लगा देने से वो ऐसा नहीं होता है; तो आप तो यह गलती मत करो और ऐसा मत लिखो।** गुरुजी का कहना यह है कि 'ब्रह्मस्वरूप संत' क्या हैं वो मुझे पता है, मेरे लिए यह मत लिखो। **हम काकाजी के सेवक हैं और उनके सेवक बन कर ही रहना चाहिए। ऐसी स्पष्ट-ऑथेन्टिक बात कहना बहुत मुश्किल है।** मैंने तो यह भी एक बार सुना था कि गुरुजी ने यह भी बताया था कि मेरे लिए ऐसा कुछ भी मत लिखो और हमें हर एक के लिए भी ऐसा नहीं लिखना चाहिए। आप **सबके नाम के आगे 'ब्रह्मस्वरूप-प्रगट ब्रह्मस्वरूप' लिख देते हैं, इट्स नॉट करेक्ट।**

...कहने का मतलब यह है कि हमें मानना तो है ही कि काकाजी पूरी तरह से गुरुजी में प्रगट हैं, उसमें कोई डाउट नहीं है और महाराज व काकाजी को वे एक पल भी भूलते नहीं हैं, वो भी हम देखते हैं। उनसे कइयों को अनुभव भी होते हैं, वो भी हम देखते हैं। उन्होंने काकाजी महाराज को अखंड धारण किया है। वो तो हैं ही, लेकिन फिर भी वे ऐसा बताते हैं।

तो, मैं **गुरुजी को यही प्रार्थना करता हूँ कि आपकी ये सैद्धांतिक बातें-रहस्य हमें पूरी तरह से समझ में आएँ और हम अपने जीवन में एप्लाई करें।** गुरुजी तो अपने जीवन से वो एग्ज़ाम्पल देना चाहते हैं कि आप ऐसे हो या नहीं हो, आप खुद अपने आपको को पहचानो और जहाँ हो वहाँ से आगे बढ़ो।

तो, आज गुरुजी के चरणों में दूसरी प्रार्थना यह भी करनी है कि हे गुरुजी! **आप ऐसे सिद्धांतों की बात बार-बार करके हमें जाग्रत करते हो। कई तरीके से और अलग-अलग प्रसंगों द्वारा बताते हो, मगर हम वो समझें और आपकी प्रसन्नता के लिए हम ऐसा जीवन जीएं।** गुरुजी के चरणों में सच्चे हृदय की यह प्रार्थना है कि **हे गुरुजी ! हम सही अर्थ में आपको समझ पाएँ।** आप जो करना चाहते हो, वो आप चाहो तो कर पाते हो। हमारे हेमंतभाई ने भजन में लिखा है कि ऐसी कौन-सी चीज़ है जो आप करना चाहो और नहीं हो सके। ऐसी बहुत सारी चीजें हम यहाँ देखते भी हैं कि जो असंभव बातें हैं वो गुरुजी संभव कर सकते हैं। अगर गुरुजी चाहें तो सब कुछ हो सकता है, ऐसा हमने देखा भी है और अनुभव भी किया है। जैसे 3 फरवरी पार्क, स्वामिनारायण मार्ग, काकाजी लेन और यह मंदिर व अपना 'अक्षरज्योति' –ऐसे बहुत सारे हैं। इट्स वेरी डिफिकल्ट और... उससे भी आगे कुटुंबभाव से जीवन जीता हुआ ऐसा समाज, वो उन्हें तैयार करना है। वो भी दिल्ली, पंजाब में उन्होंने ऐसा तैयार कर दिया कि जो ऐसे कुटुंबभाव से जीते हैं। **गुरुजी को यही पसंद है कि हम सभी एक कुटुंबभाव से जीएँ। वो हमें करना है और इसी बात के लिए वे अग्रसर हैं।** तो, गुरुजी हम तो यही प्रार्थना करते हैं कि आप हमारे लिए इतनी ख़ास चाह रखना कि जैसे आप अखंड गुणातीतभाव में जीते हो, ऐसे हम जीते हो जाएँ और आपकी प्रसन्नता के पात्र बनें–यही प्रार्थना। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. गुरुजी

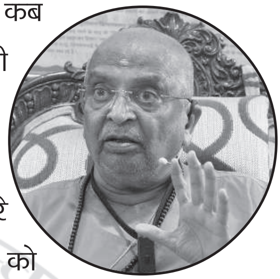

...मैंने पिछले साल भी यही बात की थी कि मैं राह देखता हूँ कि मेरा बर्थडे कब आए। छोटे बच्चे को भी ऐसा होता है... पर, मुझे होता है उसकी वजह यह है कि इसी निमित्त हमारा 'योगी परिवार' यहाँ आएगा। कल हम जो उत्सव मनाएँगे, वो तो एक जनरल सॅलिब्रेशन होगा। आज हमारे 'योगी परिवार' से बातें होंगी।

मैं अभी ठाकुरजी के दर्शन कर रहा था और मुझे याद भी था कि आज हमारे पकई साहेब का बर्थडे है। काकाजी क्या विभूति थीं, वो समझाता हूँ। पकई साहेब को सभी जानते हैं। हम नवलबा के यहाँ गए थे, वहाँ वे हमारे कॉन्टेक्ट में आए थे। उनकी पहली मिसीस एक्सपायर हो गई थीं और ही वॉज़ इन टॅन्शन कि दूसरी शादी करें या क्या करें? जो नई आएगी, वो चार लड़कियों को संभाल पाएगी या नहीं? मुझे ऐसा था कि थोड़े दिनों में काकाजी आएँगे, तो उनसे बात करेंगे। काकाजी से बात हुई तो उन्होंने उन्हें योगीजी महाराज के पास भेज दिया। योगीजी महाराज ने उनसे पूछा होगा– *कहाँ रहते हो, सत्संग में कैसे आए?*

तो उन्होंने बताया– *दिल्ली रहता हूँ, वहाँ मुकुंदजीवनस्वामी के पास जाता हूँ।*

बापा ने पूछा– *दिल्ली रहते हो?*

इन्होंने कहा– *'हाँ'।*

तो बापा ने कहा– *हमें दिल्ली में मंदिर बनाना है।*

यह प्रसंग काकाजी कई बार बताते थे। मुझे हुआ था– *वे तो डर गए होंगे कि मंदिर बनाना है और मुझ पर बोझ आ जाएगा।* पर, काकाजी ने तो उन्हें एक काग़ज़ में ऐसा लिखा था– *तुम्हें चार लड़कियाँ हैं; मुकुंदजीवन को तुम्हारा पाँचवा लड़का समझना।* मुझे हुआ था कि पाँचवा लड़का! तो, मैं इतना हिस्सेदार कहा जाऊँ, पर ये पकई कुछ करें ऐसा तो है नहीं। पकई साहेब टाइम का, फाइनान्स का इतना डॅडिकेशन करें ऐसा तब लगता नहीं था। पर, आज जब ठाकुरजी को यह हार पहने दर्शन किया, तब ख्याल आया कि **काकाजी की हर बात एकदम परफॅक्ट थी। हमारी ही कोई कसर होती हैं कि ये बातें हमें रियलाईज़ नहीं होती।**

यहाँ जब भूमिपूजन हुआ था, तब मेरे मुँह से निकला था कि ज़मीन मिलने के इतने सालों के बाद अब लगता है कि यहाँ कुछ हुआ है और होगा। इसी मौके पर हरिभाई साहेब ने कहा था– *काकाजी राह देखते होंगे कि कब तुम तैयार हो, फिर यह शुरू करें।* मुझे उस समय वो बात जँची नहीं थी, हर्ट हो गया था कि वे ऐसा कैसे कह सकते हैं कि हम तैयार नहीं थे, सो काकाजी ने नहीं किया। पर, उनकी बात सही थी, हक़ीक़त वही है।

हाँ, तो तब मैं सोचता था कि पकई साहेब से-उनकी फॅमिली से हम कुछ अधिक एक्सपेक्ट नहीं कर सकते हैं। पर, आज जब पकई साहेब का बर्थडे है और उनकी मिसीस ने स्पेश्यली हार भेजा है कि मेरी तो अब उम्र भी हो गई है; मैं कोई ऐसे ज़ेवर वगैरह पहनने वाली हूँ नहीं; सो यह हार स्वीकार लो और 12 तारीख को ठाकुरजी को लगाना। हार की क़ीमत नहीं देखनी, पर काकाजी ने जो कहा था वो मूल्य समझना है। इससे अधिक, उन्होंने बताया कि मैंने विल में भी लिखवा दिया है कि –

जैसा कि काकाजी ने कहा था, मुकुंदजीवन को तुम्हारे पाँचवा लड़का समझना, मेरे जाने के बाद हमारी मिल्कत के पाँच हिस्से हों और पाँचवा हिस्सा मुकुंदजीवन का हो।

अपनी लड़कियों से बातचीत करके उन्होंने विल में यह लिखवाया है। मेरा मानना ऐसा है कि **हम काकाजी को ठीक से समझ ही नहीं पाए।** बेशक, जैसे भरतभाई ने बात की कि काकाजी का ढंग भी कुछ ऐसा था कि एकदम से उनकी बातों पर यक़ीन भी नहीं होता था। लेकिन, साथ-साथ यह भी है कि **हर एक गुणातीत पुरुष अलग-अलग ढंग से चैतन्यों के साथ का संबंध दृढ़ करते हैं।**

अभी इन्होंने (दीपक सेठजी) पावर हाऊस की बात की – जैसे कि **काकाजी** कहते थे कि ***'धिस पावरहाऊस इज़ कॉन्सटन्ट एन्ड कन्टीन्यूअस।'*** पर, इस बात का मक़सद वे समझे नहीं। मैं यह कह रहा था कि यह पावरहाऊस जाने वाला नहीं है। मानो, एक स्वरूप किसी सेवक का स्पीरीच्युअल प्यॉरिफिकेशन कर रहे हों और वे सडनली अदृश्य हो जाएँ, तो उसकी प्रगति रूक जाएगी क्या? नहीं। अपने यहाँ ऐसी हायरारकी कन्टीन्यूड है, जो उस प्रॉसेस को जारी रखे। कोई काम रूकता नहीं है।

अभी की एक छोटी-सी बात करता हूँ। बिम्पल ने जो भजन गाया, वह मुझे बहुत पसंद आया। एक-दो बार तो मुझे मन में हुआ कि भजन कम्पलीट होने के बाद इसे बुला कर थापा लगा कर पॅसीफाई करुं। पर, पता नहीं मुझसे यह होता ही नहीं है। एक मज़े की बात करता हूँ। एक बार अर्जुन सिंह के पास हम गए थे, जो मिनिस्टर रह चुके हैं। भगतजी के थ्रू कोई काम करवाना था, तो उन्होंने कहा कि इस हेतु आप जाकर अर्जुन सिंह से मिलो। भगतजी ने फोन कर दिया था, सो हमें देखते ही उन्होंने नज़दीक बुला लिया। हमने हार पहनाया, तो अर्जुन सिंह ने एकदम नीचे झुक करके पाँव छुए और फिर वे उठे ही नहीं। मैं देखा करूँ कि कब उठेंगे? इतने में मैंने देखा कि उसकी पीठ पर फट् से एक थापा पड़ा और वो खड़ा हो गया। मैं सोचूँ कि मैंने तो कुछ किया नहीं है, यह थापा लगाया किसने? और... पता चला कि साथ में आए उत्तमस्वामी ने लगाया था। उस समय तो वो बात निपट गई थी। फिर मैंने उत्तमस्वामी से पूछा – *आपने किस तरह थापा लगा दिया?* उन्होंने कहा – *क्या करता, तुम तो ताबूत की तरह खड़े रहे, किसी को तो कुछ करना पड़े!* यूँ महाराज अपना काम करते ही रहते हैं। मैं बिम्पल को थापा मार नहीं पाया, क्योंकि मुझे जमता ही नहीं है। तो, हंसा दीदी ने उसे बुला कर वो काम कर दिया! बाकी, इतने सारे संत बैठे हों और दीदी मॅसेज देकर बुलाएँ, वह संभव नहीं लगता। यूँ, अपने यहाँ **महाराज पावरहाऊस बंद करने वाले हैं नहीं। सो, इस बारे में तो निश्चिंत रहना है।**

भरतभाई ने अच्छी बात की। एक्चुअली मुझे जो बातें करनी थीं, उसका मर्म ही भरतभाई ने बता तो दिया। उन्होंने मुझे कार्ड भेजा था, उसमें लिखा था – 'प्रगट ब्रह्मस्वरूप' गुरुजी। मुझे हुआ –
ये **तो हमारे निज़ी कहे जाएँ, काकाजी को धाए हुए हैं। वे काकाजी की बात को न समझे हों ऐसा तो है नहीं। पर, यदि इन्हें भी इसी रवैये से चलना है, तो कह दें कि हम काकाजी की बात नहीं मानते।**

दरअसल हमने काकाजी की बात का तोल किया ही नहीं। काकाजी कहते थे – बड़े पुरुष और अति बड़े पुरुष - इनमें खूब फर्क है। अति बड़े पुरुष – गुणातीतानंदस्वामिजी जैसे। एक बार उन्होंने प्र.5 की 64वीं बात का ज़िक्र करके कहा था –

ऐसे पुरुषों की तुलना में अन्यों को उनके बराबर कहना या ऐसे बड़े संत को उनसे न्यून कहें, वो तो हम 'साधु का द्रोह' करते हैं।

आज आप मुझसे कहो – आप काकाजी जैसे हो गए या आप पप्पाजी का स्वरूप हो गए – ऐसा कह कर आप पप्पाजी-काकाजी का द्रोह कर रहे हो।

इस बात से **मैं खूब चिढ़ जाता हूँ।** मेरे आक्रमक टोन से भी आपको ख्याल आ गया होगा कि यह बात से गुरुजी एक्साईट हो जाते हैं। सो, मैं तो यही कहना चाहता हूँ कि कहाँ काकाजी, कहाँ पप्पाजी ? बेशक, आज ऐसे हरिप्रसादस्वामी, अक्षरविहारीस्वामिजी और साहेब हैं। उनकी महिमा भी दिल की सच्चाई से गाएँ। **महिमा गाएँ ही नहीं, महिमा समझें। केवल लिख कर आडंबर करें, उसका क्या अर्थ है ?**

हम किस प्रकार आडंबर करते हैं, वो बात करता हूँ। मैंने शांतिभाई से यह बात पहले की थी। आपने मेरे मुँह से अभी-अभी सुना कि हरिप्रसादस्वामी, अक्षरविहारीस्वामी, साहेब अतिशय बड़े पुरुष के रूप में मेरे दिल में बैठे हुए हैं; उस बारे में कोई संदेह है नहीं। लेकिन, किसी विभूति को न्यून दिखाने के लिए हम किस प्रकार महिमा गाते हैं, यह बात मैंने उन्हें की थी। एक बार कोई मेरे पास आया था। मैं स्वाभाविक रूप से काकाजी की महिमा गाता हूँ, उनकी बातें करता हूँ। इट् इज़ बट् नॅचरल। मैं काकाजी की महिमा गा रहा था, तो बीच में फट् से वे बोले – हमारे यहाँ 'साहेब' भी ऐसे तैयार हो गए हैं। मैं समझ गया कि ये साहेब की महिमा नहीं गा रहे, पर कहना यह चाहते हैं कि 'काकाजी' की कक्षा के चैतन्य तो 'हमारे गुरु' गढ़ते हैं। सो, 'हमारे गुरु' – जो ऐसे शिल्पी हैं, वे काकाजी से तो कितने ऊपर होंगे ! मैं तुम्हें समझा पाता हूँ या नहीं, वह मुझे पता नहीं है, पर मैं परफॅक्ट्ली समझा हूँ कि यह तरीका गलत है।

महिमा गाओ, तो दिल से गाओ। केवल उन्हें खुश करने या अच्छाईपेशी के लिए या किसी विभूति को न्यून बताने के लिए नहीं। ऐसी अपनी नादानी में - चालाकी में हम बड़े पुरुष का द्रोह करते हैं। हमारे सात्विक अहम् की पुष्टि में द्रोह करते हैं। कहाँ स्वामी ? कहाँ पप्पाजी ? कहाँ काकाजी ? और हम सब कहाँ ?

तो, इस बात का हम खूब ध्यान रखें। इसलिए मैंने कार्ड वापिस भेजा कि तुम तो काकाजी को जानते हो। काकाजी की बातों को हम समझे हुए हैं; पर, हमें इन बातों का ज़्यादा विश्वास आता नहीं – यह हक़ीक़त है। दिल की भावना से यदि विश्वास हो, तो हमारा काम हो भी जाए, क्योंकि हमारा ज्ञान बिल्कुल परफॅक्ट है।

काकाजी ध्यान कराने के बाद पूछते थे – *तुम कौन ? तुम किसके ? वे कैसे ?* दिल्ली में एक बार मैंने काकाजी से रात को पूछा – *काकाजी आप रिपीटेड्ली ऐसा पूछते हैं, तो आपको विश्वास नहीं कि हम हैं ही आपके, उसमें बार-बार क्या पूछना ?*

तो वे बोले – *तुम मानते हो, पर तुम पूर्णतया मेरे हो नहीं।*

सभी को ख्याल होगा कि – 84 के बाद काकाजी सभी को खूब डाँटते थे, सभा में भी डाँटते। सभी सचेत भी हो गए थे कि काकाजी तो डाँटते ही रहते हैं। काकाजी और कांतिभाई देसाई के बीच तौलिए की बात हुई थी, तब मैं

हाज़िर था। तो, मैंने कहा था – *कांतिभाई ऐसा पूछना चाहते हैं कि हम ऐसा क्या करें कि आप हमें डाँटो नहीं।* मतलब – हम ऐसा कैसे वर्तें कि आप डाँटो नहीं। तो, कांतिभाई बोले थे – *यह तो संभव ही नहीं, हमें इतना ही पक्का करना है कि तौलिया उठा कर डाँट खानी है या तौलिया हटाए बिना खानी है ?* काकाजी डाँटेंगे नहीं – उस बात में तो माल ही नहीं है।

तो, मैंने जब पूछा – *आप बार-बार क्यों पूछते हो कि तुम किसके हो ?*

तब काकाजी ने कहा – *तुम दिल से मानते हो ?*

फिर गुणातीतानंदस्वामिजी व जागास्वामी का प्रसंग बताया कि एक साधु को घर चले जाने का संकल्प हुआ था। भीतर में वासना जाग्रत हुई और... उसे ऐसा हुआ कि अब यहाँ नहीं रहा जाएगा। उसने जागास्वामी से बात की, तो उन्होंने कहा – *तू एक काम कर; रात को गुणातीतानंदस्वामिजी जब बाथरूम जाने के लिए उठें, तो तू वहाँ जाना। स्वामी तुझसे पूछेंगे – कौन ? तब तू कहना – स्वामी, जो भी हूँ, मैं आपका हूँ। फिर तुझे जो बात करनी, हो वह करना।*

उस समय इलेक्ट्रीसीटी की फॅसीलिटी नहीं थी, तो कम उजाले में स्वामी को धुंधला-सा दिखाई दिया होगा कि कोई आया है।

सो, स्वामी ने पूछा – *कौन ?*

उसे मन में था कि जागास्वामी ने मुझे यहाँ भेजा है और स्वामी बहुत बड़े हैं।

सो, साधु ने दिल से कहा – *स्वामी, मैं आपका हूँ।*

स्वामी एकदम बोले – *अहोहो ! तू मेरा !! जा, सात जड़कोटि से परे हो गया।*

इस बात पर काकाजी बोले – *देखो, बिना किसी साधना सिर्फ ऐसे अतिशय बड़े संत के अनुग्रह से हो गया न ! और वह भी-तत्काल !*

मैंने कहा – *यह तो आप और मैं मानेंगे, पर किसने देखा है कि हुआ या नहीं हुआ।*

तो, काकाजी बोले – *अच्छा, यह बात जाने दो।*

फिर उन्होंने मुझे मध्य 7, प्रथम 58, 62 के वचनामृत का रॅफरन्स दिया। उनमें महाराज ने कहा है न कि **अतिशय बड़े पुरुष** यदि राज़ी हो जाएँ, तो हमारा काम हो जाए और **'तत्काल'** हो जाए। हम अभी 'तत्काल' रिज़र्वेशन की बात करते हैं, जबकि महाराज ने उस समय यह दर्शाने के लिए इस शब्द का प्रयोग किया था।

मैंने कहा – *पर, यह सेवक वाली बात दिमाग़ में बैठती नहीं। आप कोई दूसरा उदाहरण दो।*

तब बोले – *चलो, यह बात जाने दो। महाराज राजकोट गए थे, बेरी के नीचे बैठे थे। उस बेरी के काँटे पाघ में चुभे तो गोपाळानंदस्वामी ने निकाले और बोले – ये साक्षात् पुरुषोत्तम नारायण तेरे नीचे बैठे, तो भी चुभाने का तेरा स्वभाव गया नहीं ? यह कहते ही कांटे झड़ गए – यह ऐतिहासिक बात है। वो कांटे आज भी मौजूद हैं। वह तो तुम्हें मानना पड़ेगा न ? पर, तुम सच में हमारे होते नहीं।*

हम यदि सच में उनके हैं, तो हर एक के अंदर हम उन्हें देखें।

'योगीवाणी' में लिखा है कि **बड़े पुरुष को निर्दोष माना हो, तो हम निर्दोष हो जाएँ।**

बापा ने कहा– ***लेकिन होते नहीं। कारण–वे जैसे हैं, वैसा उन्हें जाना नहीं।*** 'जैसे हैं वैसे' मतलब – भगतजी महाराज देखते तो स्वामी को थे, लेकिन वे उन्हें कहते – 'महाराज'! हम स्वामी को 'स्वामी' कहते हैं। भगतजी महाराज देखते तो स्वामी को, पर उन्हें महाराज ही मानते, सो 'महाराज' कहते! वह भी इतनी हद्द तक कि मंदिर के निर्माण कार्य में चूने की भट्‌टी का काम चलता था। उन्हें तसला देने वाला तो सोचता कि स्वामी का यह बहुत चहेता बनता है; सो ईर्ष्या से ज़्यादा भर-भर कर देता। तब भी भगतजी महाराज कहते– *लाओ, महाराज!* मतलब – मैं तो तुम्हें देखता ही नहीं; मैं तो मेरे स्वामी को ही देखता हूँ, जिन्हें मैं महाराज का स्वरूप मानता हूँ। यूं बोलने के लिए नहीं,

पर **जब तक दिल की सच्चाई से-ऑनेस्ट्‌ली, सीन्सियरली यह नहीं मानेंगे, तब तक कुछ नहीं होगा। हमारी गाड़ी जहाँ खड़ी है-जितनी प्रगति हुई है, वहाँ से पीछे नहीं जाने वाली – यह बात भी पक्की है। जो भी एड्वान्स्मेन्ट काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी ने हमारी कर दी है उससे पीछे तो नहीं; लेकिन आगे भी नहीं जाएँगे,** यह बात भी हम खूब समझ रखें।

आगे बढ़ने के लिए हमारे लिए तो यह एक ही प्रोसेस है कि हम काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी या साहेब – जिन्हें भी मानते हैं, उस स्वरूप को प्रत्यक्ष मान कर जीने लगें। हम बोलते तो हैं – 'दास का दास' या पप्पाजी का सूत्र भी बोला करते हैं – सामने आए मुक्त को संबंध से स्वरूप मान कर उसकी सेवा किया करें। आप आओ और मैं आपका रख-रखाव करके आपको खुश कर दूँ; **आप मेरे ऐसे छलाव में आ जाओगे, मैं खुद भी मेरे छलाव में फंस जाऊँ, पर ये स्वरूप मूर्ख बनने वाले नहीं हैं। वे देख पाते हैं कि– हम ढोंग करते हैं।** अपने स्वरूप के बारे में हमें इतनी समझ तो होनी चाहिए कि हमारा स्वरूप हमारी बनावटों से खुश नहीं होने वाला। पर, यदि हमारा भाव सच्चा होगा तो जरूर, जरूर, जरूर हम एड्वान्समेन्ट करते जाएँगे। वर्ना–

हम भले ही बोला करें कि हमारे काकाजी गए नहीं, प्रगट हैं; पप्पाजी गए नहीं, प्रगट हैं। पर, इससे भीतर की सोरण (वियोग का दर्द) दूर नहीं होगी, भले ही मन को कितना भी फुसलाएँगे, तो भी नहीं होगी। वह तो सब चालाकियाँ छोड़ कर, पप्पाजी को हाज़िर मान कर या पप्पाजी हमें बहुत कुछ जो सिखा गए हैं-उनके जीवन की ओर नज़र रखेंगे तो होगा।

काकाजी कितना कुछ सिखा गए हैं! हिंमतभाई जैसे के लिए काकाजी ने इतनी भागदौड़ की, तो हमारे लिए तो उन्होंने कितना कुछ किया होगा! कई जगह बुरे भी दिखाई दिए होंगे न? मैंने पहले भी बताया था कि रामतीर्थ की सॅन्टीनरी के लिए काकाजी ने ताड़देव की सारी मशीनरी यहाँ लगा दी थी-मुंबई के हरिभक्त काम में लगा दिए थे। हर एक को प्रश्न तो हुआ होगा न कि स्वामी रामतीर्थ के काम के लिए काकाजी क्यों इतने लगे हुए हैं? लेकिन, काकाजी तो सिंह जैसे, तो उनसे पूछने की तो किसी को हिम्मत नहीं थी। गोरधनकाका जानते थे कि इस बारे में भक्तों की आपस में बातें होती रहती हैं

और...

काकाजी ने सभा में अचानक बात की कि – *ये रामतीर्थ का लेकर मैं इतना लगा हुआ हूँ, पर उनकी शताब्दी से मेरा कोई लेना-देना नहीं है। मुकुंदजीवन 'साधु समाज' में रहता है, तो स्वामी आनंद – जो कि रामतीर्थ शताब्दी के सेक्रेटरी हैं, वे मुकुंदजीवन को सहायभूत हों, इस हेतु से यह सब करता हूँ।*

विचार तो करो कि **काकाजी को हमसे कितना लगाव होगा!** मैंने मेरा एग्ज़ाम्पल दिया, पर हर एक के साथ – हिंमतभाई को तो योगीजी महाराज का अल्प संबंध!

दूसरी बात, मैंने एक बार काकाजी से पूछा था – *आप हिसाब लिखने पर मुझे खूब ज़ोर देते हो, लेकिन किसी भी दिन हिसाब तो पूछा ही नहीं।*

तो वे बोले – *हिसाब लिखने की बात ऐसी है कि हमें महाराज ने 'शिक्षापत्री' में कहा है, सो हमें लिखना है और नहीं जो पूछता – उसके लिए ऐसा है कि मैं ऐसा मानता हूँ कि तुम सब मुझे सौंपी गई योगीजी महाराज की अमानत हो; सो मैं तुम्हारी जितनी सेवा करूँ, उतने बापा मुझ पर राज़ी होंगे।*

देखो, यह था उनका सेवाभाव-उनकी आत्मीयता!

ऐसे ही पप्पाजी का... काकाजी के अंतर्धान होने के बाद एक बार हम विद्यानगर जाने वाले थे, तब मल्कानी भी प्लेन में साथ गए थे। प्लेन सुबह साढ़े सात बजे अमदावाद एयरपोर्ट पहुँचा। पप्पाजी विद्यानगर से सुबह निकल कर अमदावाद आ गए थे। पप्पाजी को देख कर मैं तो सन्न हो गया और बोल पड़ा भी – *पप्पाजी आप क्यों आए ?*

वे बोले – *मैं तो काका को रिसीव करने के लिए आया हूँ।*

वे शब्द आज भी मुझे याद हैं। भले ही इसे हम किसी भी प्रकार इन्टरप्रीट करें; पर, इतनी बात तो पक्की है कि **उन्होंने काकाजी के साथ के संबंध पर प्रकाश फैंका था कि काकाजी के संबंध वाले के साथ हमें ऐसे अपनेपन से वर्तना चाहिए। काकाजी यानि – गुणातीत स्वरूपों के संबंध वाले के साथ।** मेरे पास बात भी आई थी कि यह तो पप्पाजी मुकुंदजीवन को संभालने के लिए करते हैं। मुझे हुआ कि ये बेवकूफ हैं – डब्बे जैसे हैं। इतना तो सोचो कि पप्पाजी ऐसे ही किसी को संभालने के लिए कभी भी परिश्रम करें ही नहीं। उन्हें किसी पैसे वाले की भी परवाह नहीं थी। पर, **उन्हें संबंध की कैसी महिमा थी!** आप ऐसा कह कर पप्पाजी को डिग्रेड करते हो, पप्पाजी को समझे ही नहीं हो। मेरा तो यही कहना है, टाईम भी काफी हुआ। बातें यही करनी थी, लेकिन टाईम मिलता तो और ठीक से कर लेता।

संक्षिप्त में, दिल की सच्चाई से हम मानें कि हमारा 'योगी परिवार' एक-एक-एक। किसी भी प्रकार के ज्ञान की आड़ में भेदभाव के बिना ऐसी एकता रख कर जिएँ, वो हम सच में काकाजी और पप्पाजी के।

मैंने आज दोपहर को भी बात की थी कि पहले बात चल रही थी कि साहेब की पॅटर्न अलग, हरिप्रसादस्वामिजी की अलग, काकाजी की अलग...

तो, मैंने एक बार काकाजी से पूछा था – *काकाजी, आपकी तो कोई स्थिर पॅटर्न दिखाई देती नहीं। आपकी क्या पॅटर्न है – वह तो बताओ।*

काकाजी ने कहा – *सुन, गुणातीतभाव में कोई पॅटर्न रहती ही नहीं।*

तो, यदि हम कहें – 'इनकी यह पॅटर्न' – तो हम अपने स्वरूप को डिवॅल्युएट करते हैं न कि वे गुणातीतभाव में नहीं हैं। क्यों ऐसे करते हो?

पर, ये सारी चीजें - लॅट बाय गॉन्स बी बाय गॉन्स। शॅक्सपीयर को तो भगवान मिले नहीं थे, तब भी उसने कहा कि लॅट बाय गॉन्स बी बाय गॉन्स, तो हमें तो भगवान मिले हैं। सो, **हम भी लॅट बाय गॉन्स करके नए उठाव से चलें।** यह नहीं समझें कि फिर आरंभ करना है और फिर से सब कुछ पाना है। हमारे यहाँ कायदा पूरा अलग है। **हम दिल से भूल कबूल करके सच में यू टर्न ले लेंगे, तो जितना पीछे गया, वह बैंक के रॅट्रोस्पेक्टीव इफेक्ट की तरह हम वर्ते हों और मिले – यूं तुरंत यानि – अब ही प्राप्त हो जाएगा!**

अभी शताब्दी का हिन्दी भजन गाया कि 66 से 71-72 तक हम कैसी एकता से रहे। बाद में फिर धीरे-धीरे, अलगाव भले हुआ। पर हमने जो किया, बड़े पुरुषों को उसकी तनिक भी परवाह नहीं।

आज, भले **हम सबको जताएँगे कि 'हमारी ऐसी प्रगति हुई – ऐसा हुआ', पर तुम्हारे भीतर का 'जोगी' बताएगा कि नहीं हुआ है, हम वहीं के वहीं हैं। लेकिन, यह कर लेंगे तो अपूर्णपन और कल्पना अपने आप तत्काल टल जाएगी।**

मेरी बातों में एग्रेसीवनेस-आक्रमकता हुई है, तो उसके लिए माफ़ करना। मुझे आप सब की तरह सॉफ्ट्ली बोलना नहीं आता। **साहेब बहुत सॉफ्ट स्पीकींग हैं – उनकी यह नॅचरालटी है। 'मैं ऐसा होऊँ' – इस हेतु कई बार रात को मैं भजन भी करता हूँ।** एक अच्छी बात बताता हूँ – एक बार साहेब ने किसी फंक्शन में प्रवचन किया। मैं सोच रहा था कि साहेब हैं तो बहुत बुद्धिशाली, लेकिन इतनी बात उन्हें समझ नहीं आई? फिर मैंने साहेब से कहा – *आपने यह बात की, पर क्या आपको लगता है कि जैसा आपने कहा, ऐसा है?*

वे बोले – *मैं इनडायरॅक्टली यही कहना चाहता था कि ऐसा होना चाहिए, लेकिन ऐसा कहना पड़ता है और मेरे कहने का मर्म तो वो भी समझ गए होंगे।*

तब, मुझे हुआ कि साहेब से यह सीखने जैसा है; उनमें बनावट नहीं, सॉफ्टनेस है। सो, विध ड्यु एपोलॉजी... पर, मुझे ऐसा रहता है कि सच्ची बात हम क्यों नहीं समझते?

सीधी-सादी बात है कि क्या हम ही हमारे जेस्चर्स से काकाजी या पप्पाजी के लिए समाज में ऐसा मॅसेज देंगे कि हमारे यहाँ अब उनकी कोई क़ीमत नहीं। हमारा समाज, जो काकाजी या पप्पाजी के साथ जुड़ा है, उसे तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा, लेकिन क्या संस्था को हमें यही मॅसेज देना है कि हमारे यहाँ काकाजी की कोई क़ीमत नहीं, हमारे यहाँ बाबुभाई की कोई क़ीमत नहीं। जिन पुरुषों ने हमारे लिए – हम ही कहते हैं कि हमारे लिए अपने लहू का पानी किया, उन्हें बदले में हम यह दे रहे हैं? सो, अब हम मुड़ जाएँ। हम बोलते हैं – 'एकता ही एकांतिकभाव है।' सीने पर हाथ रख कर कहना कि मैं एकांतिकभाव की पराकाष्ठा की सर्वोच्च भूमिका पर पहुँचा हूँ? लेबल लगाने से कुछ नहीं होगा।

...एक बार मैंने काकाजी से पूछा था – *यह प्रगट की थियॅरी - भगवान प्रगट किस प्रकार से है?*

काकाजी ने कहा – *सुन,*

✻ *हर जगह भगवान प्रगट हैं। पर, **जगत के जीवों में** वो **कर्मफल प्रदाता** के रूप में हैं।*

✻ ***मुक्तों में साक्षीरूप** से हैं। जिसे ऐसे संत के साथ निष्ठायुक्त संबंध होगा, वह यदि कुछ गलत करेगा तो उसका साक्षी उसे सिग्नल तो देगा ही। फिर वह उस पर ध्यान दे या न दे, वह बात अलग है।*

✻ ***एकांतिकों में तारतम्यता** से है – जितने रखें उतने।*

और

✻ ***गुणातीत विभूति में सांगोपांग!***

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी (सांकरदा)

...मैं सिर्फ एक बात कहना चाहता हूँ। गुरुजी ने आशीर्वाद देते हुए आज हमें जो बात बताई - मैं समझता हूँ **यह बात इतनी आसान नहीं है, जो हम सबको समझ में आ जाए और कल से हम सब इसका अनुसरण करने लग जाएं।** तो, आज मुकुंदजीवनस्वामी के जन्मदिन पर मैं अपने **सब दिव्य स्वरूपों से प्रार्थना करता हूँ कि आपने जो बात बताई, वह हमें समझ आए या न आए, लेकिन आपकी कृपा से हमारे जीवन में उसका अमल हो जाए। सुबह आपने (प.पू. गुरुजी) बताया था कि जब बड़े पुरुषों की 'कृपा' होती है, तो पत्ते का पासा पलट जाता है, तो हम सब लोगों के जीवन में ऐसा बने,** ऐसी आप हमारे लिए प्रार्थना करो। यह जो बात आपने बताई – **हम सिर्फ समझ न रखें, हमें ऐक्शन में लेनी है।** हमारे ऐक्शन में आ जाए, इतनी हम पर कृपा करो। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के प्रत्युत्तर में प.पू. गुरुजी ने निम्न बात की –

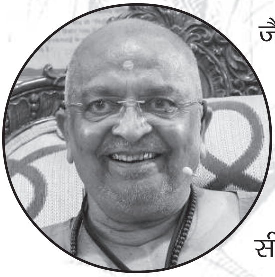

स्वामिजी ने बात करी कि काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी जैसे बड़े पुरुष की 'कृपा' हो, तो जैसे उल्टा हाथ फट् से सीधा हो जाता है, वैसे हमारी प्रकृति में आश्चर्यकारक रूप से बदलाव आ जाता है। मेरे कहने का मतलब ऐसा नहीं है। मैं यह कहना चाहता हूँ कि **हम इनके बारे दिल की सच्चाई से मानें कि वाकई ये संत हमारी प्रकृति-स्वभाव-दोष तत्काल टाल दें ऐसे अतिसमर्थ हैं,** तो हमारा हाथ हमसे तुरंत सीधा हो ही जाएगा।

हम सभी को उस दिशा में जाना तो है ही। अपने 'योगी परिवार' में कोई ऐसा नहीं होगा, जिसे इस रास्ते नहीं चलना। **'काकाजी-पप्पाजी राज़ी नहीं होंगे तो कोई बात नहीं' – ऐसा तो किसी को भी नहीं। लेकिन, किसी ग्रंथि के कारण हमें इनका ऐसा भरोसा नहीं बैठता। 'पर, यह भरोसा रखेंगे, तो यह हो जाएगा'।** यह भरोसा बैठ जाए उसके लिए स्वामिजी आप भजन करना।

✡✡✡

13 मार्च, 2015–प.पू. गुरुजी के 78वें प्राकट्योत्सव की प्रातः सभा

प.भ. समीर दवे (अमदावाद)

...इस अवसर पर इतने सारे स्वरूपों - हरिभक्तों का एक साथ दर्शन सहज ही साक्षात् अक्षरधाम की अनुभूति कराता है। वचनामृत में अक्षरधाम का वर्णन दिया हुआ है कि अक्षरधाम यहां से कितना दूर है। लेकिन, हमें तो उस अक्षरधाम की अनुभूति यहीं पर साक्षात् हो रही है। भीतर में फील होता है कि यहीं अक्षरधाम है। ये जो **प्रभुधारक विभूतियों के साथ हमें बैठना मिलता है, उनके दर्शन होते हैं, भक्तों का प्यार मिलता है – बस हमारे लिए यही 'अक्षरधाम' है।**

जब से मैं सत्संग में आया हूँ, तब से देखा है कि **गुरुजी के मुंह पर एक ही बात होती है– *'कुटुंबभाव से जीओ।'*** जगत की जो भी कुछ बुराइयाँ हम में हैं, उस ओर तो गुरुजी देखते ही नहीं हैं। हमें ना तो कभी उसके लिए टोकते हैं, न ही मना करते हैं। लेकिन, **जहां कहीं 'कुटुंबभाव' खंडित होता दिखता है, तो उससे गुरुजी की मूर्ति मायूस-सी हो जाती है।** सो, गुरुजी को राज़ी करने का मैंने यह एक तरीका सोचा है कि यदि हम 'कुटुंबभाव' को समझ लें और उसे पकड़ कर आगे चलें, तो हमारी स्पीरीच्युअल प्रोग्रेस शायद बहुत फास्ट हो जाए।

छोटा-सा एग्ज़ाम्पल देता हूँ। जब मैं गुरुजी के साथ नया-नया सत्संग से जुड़ा, तब हम लोग मुंबई रहते थे। जैसे कि अभी राकेशभाई ने गाया कि गुरुजी की मूर्ति खींचती है। ऐसे ही गुरुजी के प्रथम दर्शन से मैं उनकी ओर खींचा चला गया था। फिर गुरुजी जब मुंबई से लौट रहे थे, तब मुझे ताड़देव ले गए और वहां वशीभाई, भरतभाई, ताड़देव के भाइयों से मेरी पहचान करा कर मुझसे कहा– ***अब से तुम यहां आते रहना। यह अपना मंदिर है।*** बुधवार की साप्ताहिक सभा हम वहां एटेंड करते थे। भाइयों ने कभी ऐसा लगने नहीं दिया कि मैं मुंबई में हूँ और गुरुजी दिल्ली में हैं। ताड़देव की सभा में जाता, तो ऐसा नहीं लगता था कि कोई अलग सेंटर है। **गुरुजी ने हमें इतने करीब से ताड़देव मंडल के साथ जोड़ दिया था कि** जब हम मुंबई से माइग्रेट होकर अमदावाद के लिए निकले, तो **भरतभाई हमें छोड़ने आए थे; वशीभाई भी घर पर दर्शन देने आए थे। अश्विनभाई** के बारे में तो दिनकरदादा ने बात की कि अश्विनभाई में 'सेवकभाव' है। उन्हों**ने हमारे सामान की शिफ्टिंग में भी इतनी हेल्प की थी कि सामान का टॅम्पो हमारे घर से निकल कर अमदावाद पहुँचा, तब तक की सारी जिम्मेदारी उन्होंने ले ली।** काकाजी और कांतिकाका के जो प्रसंग हम पढ़ते हैं, वो कुटुंबभाव का हमें यहां पर दर्शन होता है। गुरुजी ने कभी ऐसा नहीं कहा कि तुम दिल्ली आना, तुम दिल्ली – मेरे साथ जुड़े रहना। **गुरुजी** ने फट् से कह दिया था– ***'वशी एटले हुं , हुं एटले वशी। तू वशीभाई के कॉन्टेक्ट में रहना, तो तुझे शांति रहेगी।'*** जगत में जो दूसरे सत्संग होते हैं, उसमें संत, भक्तों को पकड़े रखने की कोशिश में लगे रहते हैं। वो **खींचातानी गुरुजी में हमने कभी नहीं देखी। उनका तो 'कुटुंबभाव' का जो**

एक मंत्र है, उसी को उन्होंने पकड़ा हुआ है कि हमें बस 'कुटुंबभाव' से जीना है। फिर **चाहे वो ताड़देव हो, हरिधाम हो-गुणातीत समाज के किसी भी सेंटर में जाना हो, गुरुजी के लिए वे सारे एक हैं** और उसी प्रकार से हमें जोड़ने की गुरुजी की कोशिश रहती है।

एक बहुत ही इंटर्नल छोटी-सी बात है, वो मुझे शेयर करनी चाहिए कि नहीं, पता नहीं। लेकिन, मैं नया-नया सत्संग में था, उस समय गुरुजी के साथ विचरण में गया था। हमारे सेंटरों में एक जगह पर मुझे काकाजी की मूर्ति के कहीं दर्शन नहीं हुए। इससे मैं एकदम मायूस हो गया और मैंने गुरुजी से कहा– *गुरुजी, यहां पर काकाजी की मूर्ति नहीं दिखती है। यहां मज़ा नहीं आ रहा है।* तो, मुझे गुरुजी ने डांट कर चुप कर दिया और कहा– *इन सब बातों में तुझे पड़ने की जरूरत नहीं है। यह सारा हमारा एक परिवार-हमारा कुटुंब है और वही मानकर हमें आगे चलते रहना है।* बीस साल के सत्संग में गुरुजी से जो ये ट्रेनिंग मुझे मिली, उसकी वजह से मुझे कभी ऐसा अलगाव महसूस ही नहीं होता कि वो एक अलग सेंटर है। सारा 'गुणातीत समाज' हमारा एक 'परिवार' और उसी परिवार का दर्शन जब यहां होता है, तो दिल को बड़ी तसल्ली मिलती है।

सभी के चरणों में यही प्रार्थना है कि गुरुजी ये जो उठाव लेने के लिए लगे हुए हैं, बस गुरुजी को हम राज़ी कर लें। **सारे गुणातीत समाज के अलग-अलग सेंटर्स के जो भी हम भगत हैं और सेंटर्स के 'स्वरूप' हैं, वो सब एक ही हैं–यह बात हमारे दिल में बैठ जाए**, यही गुरुजी के चरणों में प्रार्थना।

प.भ. जयप्रकाश मल्होत्रा (दिल्ली)

...गुरुजी का अनुभव तो यहाँ सभी को है। कोई भी बिना अनुभव के यहाँ टिक नहीं सकता... आप सभी को अपने-अपने हिसाब से अनुभव होंगे। जैसे पंजाब से विकासजी आए हैं। मैं उस वक्त मौजूद था, जब ये गुरुजी से पहली बार मिले और अशोकजी के घर पर गुरुजी ने उन्हें कंठी दी थी। ऐसा बहुत कम होता है। लोग एक-दो साल तक देखते-परखते हैं। **काकाजी भी कहते थे कि साधु को ठोक-बजाकर कर गुरु करना।** पर, ये जरूर पूर्व के होंगे, जो उन्हें पहले ही दिन कंठी दे दी। उनकी निष्ठा भी देखो–उनका एक्सीडेंट हुआ था और वे हॉस्पिटल में थे। तो, उनकी वाइफ मोनिका ने गुरुजी से कहलवाया– *ऐसे-ऐसे एक्सीडेंट हो गया है और मल्टीपल फ्रॅक्चर हैं।* गुरुजी ने कहलवाया– *किसी अच्छे हॉस्पिटल में ले जाओ और कल मुझे बताना।* उन्हें पी.जी.आई. में शिफ्ट किया। डॉक्टर ने कहा था– *स्टील की रॉड डलेगी और आपको सिर्फ यह बताना है कि इम्पोर्टेड लगानी है या इंडियन।* उन्होंने गुरुजी से कहलवाया– *रॉड डलेगी और आप कुछ करो।* तो, गुरुजी ने लाईट वे में कहलवाया– *तुम भजन तो करते नहीं और मुझसे कहते हो।* सो, इनके परिवार वाले सब बाहर बैठकर भजन-धुन करने लगे। गुरुजी को याद कर रहे थे कि अंदर से डॉक्टर ने आकर बताया कि विधाऊट पुटिंग एनी रॉड ऑपरेशन हो गया! **इसे हम चमत्कार न गिनें, पर परेशानी में भजन का सहारा लेने की सीख समझें।**

आजकल गुरुजी ने मंदिर में मुझे ट्रांसपोर्ट की थोड़ी ड्यूटी दी है। जिन्हें जॉब करते हुए ऑफिस से गाडियाँ

मिली हुई हैं, वे यहाँ पर खुद ड्राइविंग की सेवा में हैं। खुद वैभव, ऋषभ, दीपक अग्रवाल एज़ ए ड्राइवर जाते हैं। मुझे तो कहते हुए शर्म भी आती है कि विजय शर्मा जाओ, फलां को छोड़कर आओ या ले कर आओ। पर, वे हंसकर जाते हैं। **इस सब के पीछे गुरुजी का परिश्रम है।** गुरुजी ने उन्हें ऐसे अनुभव कराए हैं... मैं तो गर्वन्मेन्ट सर्विस में था, मेरे नीचे स्टाफ काम करता था; पर अब मैं स्टाफ बन गया हूँ। किसी के आने पर मन में होता है कि उसका ब्रीफकेस अंदर ले जाने के लिए किसी को ढूंढने जाऊँ, पर साथ-साथ **यह भी होता है कि तब तक में यदि वे खुद ही अंदर ले जाएँगे, तो मेरी तो सेवा छूट जाएगी।**

ये सब जो हो रहा है, मुझे महाभारत के बर्बरीक की भाँति लगता है कि संत ही यह सब कुछ कर रहे हैं। **इस गेट के अंदर जितनी भी एक्टिविटीज़ हो रही हैं, वो गुरुजी ही करवा रहे हैं।** ऐसा कोई नहीं कह सकता–मैं कर रहा हूँ, मैंने बहुत अच्छा कर लिया वगैरह-वगैरह। धेर इज़ ओनली वन सिंगल फोर्स बीहाइन्ड इट एन्ड धॅट इज़–जिनका आज बर्थडे है। गुरुजी ने कहा था कि मेरे बारे में बात मत करना। सभी कहते हैं–'अच्छा-अच्छा'–पर हम करें क्या? हमारे लिए तो, **हमारे जीवन में गुरुजी ही हैं, धेर इज़ नो बडी एल्स, सब छूट गया-कुछ नहीं बचा।**

मैं 2012 में रिटायर्ड हुआ। तब तक मैंने भी नहीं सोचा था कि क्या करूँगा और आई हॅड धी ऑफर कि आगे मुझे और एक्सटेंशन मिल सकता था। पर, मेरा मन भी नहीं था। जब मैं उस दिन शाम को आया, तो गुरुजी ने शायद मेरा मन जानकर कहा–*तुम रिटायर नहीं हुए। जैसे ऑफिस जाते थे, वैसे ही कल से यहाँ आ जाना।* और... बड़ी कृपा करके मुझे फ्रंट ऑफिस में बिठाया। गुरुजी ने साथ ही एक दूसरी ड्यूटी भी मुझे दी कि कोई भी नए हरिभक्त आते हैं, तो उन्हें यहाँ के बारे में बताऊँ। कल दीपकजी भी बता रहे थे कि उन्हें अपने स्वरूपों की महिमा, यहाँ की महिमा मैंने बताई। पर, उसमें भी मैं हर समय ध्यान रख कर प्रार्थना करता हूँ कि– **गुरुजी, आप और दीदी प्लीज़ मेरी हेल्प करना कि कहीं अपने अभिनिवेश में मुझे गर्व न आ जाए कि मैं बहुत अच्छी सेवा करता हूँ या मैं बहुत अच्छी तरह एक्सप्लेइन कर लेता हूँ... मैं बहुत अच्छी बातें करके भक्तों को गुरुजी के पास ले जाता हूँ।** मेरे अंदर यह बात पक्की ही रहें कि **गुरुजी ही मुझसे यह करवा रहे हैं और मेरा काम इन्हें भगवान से मिला देना मात्र है। उसके बाद भगवान जाने और भगत; उसके बाद मेरा कोई रोल रहता नहीं है। यह मुझे याद रहे–ऐसी प्रार्थना।**

भगवान में दो गुण होते हैं। एक तो वज्र की तरह कठोर-स्ट्राँग, दूसरा मक्खन की तरह एकदम कोमल। वो दोनों गुण गुरुजी में नज़र आते हैं। काफी साल पहले की बात है, सुहृद्स्वामी को डायाबिटीज़ की प्रॉब्लेम हुई और शुगर इतनी बढ़ गई कि उन्हें रोज़ इंजेक्शन लगाना पड़ता था, ऐसी स्टेज आ गई। एक दिन गुरुजी के सामने सुहृद्स्वामी इंजेक्शन लगा रहे थे। गुरुजी को हुआ–*अरे! तुझे इतनी तकलीफ?* गुरुजी ने सुहृद्स्वामी से कहा–*अब तुझे इंजेक्शन नहीं लगवाने, दवाई करनी है।* उन्होंने कहा–*ठीक है गुरुजी, जो आप कहो।* उन्होंने इंजेक्शन लगाना बंद कर दिया और डॉक्टर से कह दिया कि मुझे इंजेक्शन नहीं लगवाना और दवाई पर आ गए। आज उनकी शुगर अंडर कंट्रोल है। उसके बाद कोई इंजेक्शन नहीं लगा और खूब सेवा करते हैं। सुबह से शाम तक खड़े रहते हैं, दिन में सोते नहीं हैं, कोई आराम नहीं करते। ऐसे हमारे छोटे से संत-मैत्रीस्वामी की

क्या उम्र है ? लेकिन खूब प्यार से गुरुजी की इच्छा के मुताबिक महापूजा सीख ली। **साढ़े आठ बजे वो अपनी घंटी बजा देते हैं, आप घड़ी मिला सकते हैं।** टाइम से ठाकुरजी को खिलाना, सुलाना। एक दिन वशीभाई ने बात की थी कि महाराज थोड़े से मोटे हो गए, काकाजी, पप्पाजी मोटे हो गए हैं। ऐसी भावना-प्यार से खिलाते हैं कि उन्हें खाना ही पड़ता है। परेशभाई कल बात कर रहे थे कि उनका जीवन कैसे गुरुजी ने बदल दिया। हमें पता नहीं चलता कि वे हमारे जीवन में कर क्या रहे हैं। हम तो सिर्फ एक बात यह पकड़ लें कि– **अपनी समझदारी से नहीं चलना, संत की समझदारी से चलना है।** वे कहें 'हाँ' तो 'हाँ'- वे कहें 'ना तो ना', उससे आगे कुछ नहीं।

हेतवी में शैलेषभाई और परिमलभाई के इकट्ठे फ्लॅट्स बहुत अच्छे बन गए। गुरुजी जब वहाँ जाते हैं, तब फ्लैट्स कम्बाइन्ड कर देने से 'अक्षरधाम' ही हो जाता है। हम यहाँ से पन्द्रह किलोमीटर दूर यमुना पार रहते थे। एक घंटा जाने में लगता था और एक घंटा आने में लगता था। हम वहाँ भी बहुत सुखी थे। पर गुरुजी ने कहा मकान बदल लो और मंदिर के पास में आ जाओ। अब जब यहाँ पर आ गए, तब पता चलता है कि मंदिर अभी गए और अभी आ गए ! पहले भागने की भी जल्दी होती थी, अब कोई दिक्कत ही नहीं। गुरुजी ने कितनी सुख-सुविधा कर दी ! मकान के लिए भी मैंने कुछ नहीं किया। वी.के. अग्रवालजी ने कहा– *हमारी गली में एक मकान है।* बहनों ने ही मकान देखा... इन्होंने कहा आ जाओ और हमने 'हाँ' में 'हाँ' कर दी। यूँ गुरुजी के कहने पर मकान बदल लिया, तो कितने सुखी हो गए ! मैं सिर्फ यह अपनी बात नहीं कर रहा हूँ। **हम सब गुरुजी की 'हाँ' में 'हाँ' मिला कर गुरुजी के सामने अपनी समझदारी छोड़ दें।** उनकी आध्यात्मिक और सांसारिक समझदारी हमसे बहुत आगे है। गुणातीतानंदस्वामिजी ने भी कहा था– *आप आ जाओ बस। आपका कारोबार कैसे चलाना, वो हम देखेंगे। इसमें इतना ही दृढ़ करना है कि निष्ठा पक्की रहे।* **हमारा** दूसरा **काम है – अपने स्वभाव छोड़ना। सामने आए हुए मुक्त को माथे का मुकुट मानना है।** पप्पाजी - काकाजी यही कहते और गुरुजी भी यही समझाते हैं। कल भी बात हुई थी कि **हम सबको कहीं न कहीं, किसी का कुछ न कुछ चुभता है। जब हम यह देख लेंगे कि इगो की कील हमारे भीतर है, सो उस पर कपड़ा अटकता है। इस कील को हमें हटाना है या ऐसा मानें कि यही बात मुझे काकाजी या गुरुजी ने कही होती तो नहीं चुभती न ?**

हर चीज़ के पीछे गुरुजी ही हैं। मेरे मुँह से गुरुजी का नाम इसलिए निकल रहा है कि मैं यहाँ पर रह रहा हूँ, वर्ना इस कॉम्पलेक्स में ब्रह्मांड के तीनों नियंता तो बैठे ही हैं। सो, इनके चरणों में यही प्रार्थना है कि गुरुजी ने हमें सेवा दी हुई है - रखा हुआ है, तो उनकी रूचि के अनुसार, जैसा वे चाहते हैं - हम निष्ठापूर्वक उनके अभिप्राय में अपनी समझदारी न लगाएँ और सेवा करते रहें। लोग मंदिर में जूते बाहर निकाल कर जाते हैं, यूँ **हम अपनी व्यावहारिक बुद्धि को बाहर ही रखकर आएँ।** बस यही आशीर्वाद दो कि मैं और मेरा परिवार ऐसे ही गुरुजी के चरणों में सेवा करता रहे।

एक और बात कहता हूँ कि पिछले कई दिनों से इंटरनेट पर आ रहा था कि खूब बारिश आने वाली है - थंडर स्ट्रोम। पर, जब हमारे यहाँ ओपन में संतों ने रसोई बनाई है। तो, प्रभु आज रहम करें...

पू. ब्रह्मानंदस्वामिजी (सांकरदा)

...हर साल गुरुजी के प्राकट्य पर्व पर हम सब यहाँ आते हैं, लेकिन उसके पीछे का रीज़न क्या है - क्यों आते हैं ? **क्या एक प्रोटोकॉल निभाने के लिए हम आते हैं ?**

...गुणातीत स्वरुपों का मूलभूत संकल्प था कि **हमारे पूरे गुणातीत समाज में 'संप, सुहृद्भाव और एकता' होनी चाहिए... यह सच में हम रखते हैं या नहीं, इस बात को सोचते नहीं हैं।** अक्षरविहारीस्वामिजी का अभी प्रागट्य पर्व हुआ, तब गुरुजी ने एक मार्मिक बात बताई। उस पर किसी ने ध्यान दिया या नहीं, पर मैंने तो ध्यान दिया कि **गुरुजी ने** अपने प्रवचन में **एक बात कही कि अब मुझे भी 78 वर्ष हो गए। बहुत सोचने की बात है यह।** तो, अब हम सोचें कि कब तक हम बातें ही करते रहेंगे ?

...हम गुजरात से बाई रोड आ रहे थे। सांकरदा से गाड़ी लेकर नॉन स्टॉप आने में अट्ठारह से बीस घंटे तो लगते ही हैं। पर, हर दो घंटे पर गुरुजी का फोन आता था कि कहाँ पहुँचे, कहाँ ठहरे हो, खाना खाया या नहीं खाया। ये सब चीजें गुरुजी को पूछने की जरूरत नहीं है, फिर भी एक आत्मीयता के नाते कि स्वामिजी के संत आ रहे हैं, तो मेरा फर्ज़ है। शाम को छः बजे हम जयपुर आए। जयपुर से गुड़गांव तक तो हम ठीकठाक आए। गुड़गांव से हमें इतना ट्रैफिक मिला कि मैंने फोन पर सुहृद्स्वामी और सेवक से कहा कि आप गुरुजी से कहिए कि वे आराम में चले जाएँ, हम लोग आकर खाना खाकर सो जाएँगे। पर, जब हम यहाँ मंदिर में बारह बजकर बीस मिनट पर पहुँचे, तो गुरुजी हमारा इन्तज़ार करते हुए बैठे थे। उन्हें बैठने की क्या जरूरत है – यह सोचने की बात है। और, ये चीजें हम क्यों नहीं कर सकते ? क्योंकि **हमें भगवान के भक्त का इतना माहात्म्य नहीं है, जो गुरुजी-अक्षरविहारीस्वामिजी, साहेब को है। हम उन्हें फॉलो करते हैं, उनकी बातें सुनते हैं, लेकिन उनकी बातों को फॉलो नहीं करते हैं...**

दूसरी बात – हम लोग जहाँ ठहरे हैं, उसका नाम गुरुजी ने **'अपना घर'** रखा है। यह नाम मुझे बहुत अच्छा लगा – 'अपना घर' यानि – पूरे समाज का घर है। दिल्ली में हमारा एक का घर नहीं है। गुरुजी ने तो जिस भी मिनिंग से रखा हो, लेकिन 'अपना घर' है तो यह सोचना हमारा फर्ज़ है कि **हम दिल्ली को 'अपना घर' मानते हैं कि नहीं मानते हैं ?**

...यहां दिल्ली में भक्तों का बहुत ज़बरदस्त माहात्म्य खड़ा किया है। तीन दिन से हम यहां के हरिभक्तों-सेवकों-संतों को देख रहे हैं। इतना माहात्म्य है कि हमारा सिर झुक जाता है। **यह सब गुरुजी की मेहनत का फल है...**

हम काकाजी-पप्पाजी का शताब्दी पर्व मनाएँगे; लाखों रुपये खर्चेंगे, इसका कोई मतलब नहीं, जब तक कि काकाजी-पप्पाजी को जो कराना था, वह हम अपने अंतर में नहीं उतारेंगे... अभी गुरुजी ने जो बोला कि मैं भी 78 का हो गया, **यह बात मुझे दिमाग़ में बहुत बैठ गई है...** तो, मेरे मन में जो था, मैंने अपने मन और दिल की बात बता दी...

प.पू. गुरुजी

(पू. ब्रह्मानंदस्वामी की कही बातों का प्रत्युत्तर)

इन्होंने (पू. ब्रह्मानंदस्वामी) 'मन की बात' करी। इन्होंने कहा कि कल हमारी राह देखते हुए गुरुजी देर रात तक जगे हुए थे... वगैरह-वगैरह। पहले भी मैंने यह बात करी थी। एक बार दिनकरभाई शिकागो से मुंबई आने वाले थे। मैं उस समय ताड़देव था। जनरली काकाजी सबके साथ समय से सो जाते और फिर आधी रात को एक-डेढ़ बजे दोबारा जागते। पर, काकाजी उस रात सोए ही नहीं। हम तो पढ़ते थे या कोई किताब छपनी होगी इसलिए जगे हुए थे। दरवाज़े की झिरी से देखा कि काकाजी के कमरे की लाइट जली हुई थी। काकाजी जगे हों, तो स्वाभाविक था कि सोने का मन नहीं हुआ। एक बार तो मैंने अंदर जाकर पूछा भी– *सोना नहीं है?* वे बोले– *दिनकरभाई आने वाले हैं।* तक़रीबन डेढ़-दो बजे दिनकरभाई पहुँचे। काकाजी अपने कमरे में बैठे हुए थे। मुझे दिनकरभाई की महिमा उस दिन समझ आई थी। मुझे हुआ कि काकाजी जब इतना वॅईट करते हैं, यह जरूर ख़ास व्यक्ति होंगे। काकाजी के पास जाकर वे बैठे, तो काकाजी ने उनसे पूछा– *क्या पिओगे? चाय-कॉफी?* मेरा दिमाग़ ऐसा है कि कोई बात बने कि तुरंत मेरा थिंकिंग प्रोसेस शुरू हो जाता है। मुझे हुआ कि रात के डेढ़-दो बजे हैं, तो ये कह देंगे कि अभी कोई इच्छा नहीं है। पर, इन्होंने कहा– *चाय पीऊँगा।* मैं खूब विचार में पड़ गया कि भले 'मना' नहीं की, पर ऐसा कहना चाहिए कि *'आपकी जैसी इच्छा हो।'* दिनकरभाई का नॅचर भी ऐसा है कि *'आपकी जो इच्छा'*–यूँ कहें। पर, 'चाय पीऊँगा'–यह कैसे कह दिया? ये तो सब सो गए और... काज़ी दुबला क्यों कि सारे गाँव की फ़िक्र। यूँ, सुबह तक मेरा दिमाग़ चलता रहा कि इन्होंने ऐसा क्यों कहा कि मैं चाय पीऊँगा। सब इन्हें इतना बड़ा समझते हैं और इन्होंने कह दिया– *'मैं चाय पीऊँगा।'* यह बात मेरे दिमाग़ में घूमती रही थी। फिर अंतर्यामी रूप से कहो, इन्होंने दूसरे दिन खुद बताया–जब कुछ बात चली तब– *काकाजी ने रात को दो बजे मुझसे पूछा था कि क्या पिओगे, चाय या कॉफी। तो मैंने कहा–चाय; क्योंकि काकाजी की मरज़ी थी कि मैं चाय पीऊँ।*

संत के अंतर्यामी बन जाने की यह तो और भी ऊँची बात कही जाए! जैसे गुणातीतानंदस्वामिजी की बात है। महाराज ने पूछा– *काल लाऊँ या बुखार?* तब स्वामी ने कहा– *बुखार भले आए।* लेकिन, कई अधिक सयाने भी होते हैं, उन्होंने कहा कि महाराज ने जब पूछा ही था– *तो मना कर देना था कि कुछ भी नहीं आने देना।* यह बात तो लॉजिकली ठीक भी थी कि संत जब ऐसा पूछते ही हैं, तो हमें मना कर देना चाहिए, जिससे कि हरिभक्त परेशान न हों। तब स्वामी ने कहा था– *महाराज की मरज़ी थी।*

और... मुझे हुआ कि ये दिनकरभाई कैसे?

...यह बात पहले भी करी थी कि गले में बॅज लगा कर जो ड्रेस काकाजी ने 1977 के बाद पहननी शुरू की थी, उस ड्रेस में काकाजी के दर्शन किसी को 1947 में हुए थे! 1947 में तो काकाजी लीलन का सफारी सूट–और वो भी क्रीम रंग का पहनते थे। 1947 में उसे ऐसे बॅज वाले ड्रेस में काकाजी का दर्शन हुआ–यह कमाल की बात है। प्रेमपुरी आश्रम में काकाजी की ऐसी मूर्ति देख कर वह व्यक्ति दिनकरभाई से मिला और उसने पूछा– *इन्हें*

मिलना हो तो कहाँ मिलेंगे ? दिनकरभाई ने यह नहीं कहा कि काकाजी ने तो शरीर छोड़ दिया है। उन्होंने तो कहा – *चलो, ताड़देव।* हम ऐसा नहीं कह सकेंगे। आज भी मैं नहीं कह सकता कि काकाजी से मिलना हो, तो आओ दिल्ली मंदिर में।

तो, ये सारी चीज़ें मेरे दिमाग़ में इतनी हद्द तक बैठ गई हैं कि काकाजी जिस रास्ते पर चले – जैसे कि दिनकरभाई के लिए रात को दो बजे तक वे जगे। **आत्मीयता से जुड़े मुक्तों के प्रति ऐसा अपनापन हमारा होना ही चाहिए।** सो, मैं इसलिए जगा था।

अब **'अपना घर'** की जो बात है – इन्होंने (पू. ब्रह्मानंदस्वामी) भले कैसी ही भावना से बात की, लेकिन मैंने यह नाम इसलिए रखा है कि **'अपना घर' जो है, वो तीर्थयात्रा पर या घूमने-करने आ-जा रहे आम लोगों के लिए नहीं है।** हाँ, **गुणातीत समाज के कोई कहीं से भी होंगे, उनके लिए यानि – अपने परिवार के लिए है।** पर, कई बार कैसा होता है कि आगे जाकर समाज यदि बढ़ता जाए, तो किसी कार्यकर्ता के मन में ऐसा भी हो सकता है कि इतना सारा खर्च अब हम उठा नहीं सकते, तो 'टोकन' में तो कुछ लेना रखें। यह सोच कर यदि कोई रखें भी, तो **किसी न किसी दिन, कोई तो पूछेगा कि फिर यह 'अपना घर' क्यों लिखा है ? अपने घर में पैसे देने पड़ते हैं क्या ?** यह न बने, इसलिए यह नाम दिया है और अभी 26 जनवरी की बात हुई कि **काकाजी** ने अपने आशीर्वचन में कहा है – ***'यहाँ कॉमर्शियल एटीट्यूड बिल्कुल नहीं चलेगा।'*** सो, मैंने सोचा कि इस बात पर हमें खूब ध्यान देना चाहिए कि हमें ऐसा कुछ नहीं करना है।

प.पू. शांतिदादा (ब्रह्मज्योति)

...अभी मल्होत्रा साहेब ने बात करी और पहले भी बातें हुईं। गुरुजी को केन्द्र में रख कर कैसी साधना-प्रसंग या किस प्रकार रक्षा होती है, ऐसी बातें हुई। गुरुजी के बारे में हम जितना समझे हैं, उसके मुताबिक वर्णन करते हैं। हमारे समग्र तंत्र को शुद्ध करने के लिए महाराज ऐसे दिव्य पुरुषों को इस ब्रह्मांड में भेजते हैं। उनके जोग में आने के बाद हम जैसे-जैसे उनका माहात्म्य समझेंगे, उन्हें समर्पण करते रहेंगे। शुरुआत में स्थूल समर्पण और फिर मन-बुद्धि का समर्पण जैसे-जैसे होता जाए, वैसे-वैसे महाराज से लेकर अब तक के प्रगट स्वरूपों की महिमा समझ आएगी। दूसरी ओर, जैसे-जैसे महिमा समझ आती जाएगी, वैसे-वैसे समर्पण होता जाएगा - ये दोनों प्रोसेस साथ-साथ ही हैं।

दीपकजी ने बहुत अच्छी बात कही कि गुरुजी ने मुझे किसी भी दिन ऐसा नहीं कहा कि तू यह छोड़ दे, लेकिन अपने आप वो छूट गया! **गुणातीत संत की यह सहज अवस्था है।** कई बार कह कर या आज्ञा करके संत किसी के चैतन्य को स्पर्श कर सकते हैं, उसके दोष टाल सकते हैं। लेकिन, जब वे आज्ञा करते हैं, तब अकेली आज्ञा नहीं, उस आज्ञा के पीछे प्रार्थना का बल रखते हैं, तभी वह संभव है। यह गुणातीत अवस्था का सहज लक्षण है। **उपदेश तो दुनिया में कई देते हैं कि संसार में से आसक्ति तोड़ो। पर, भगवान में ही निमग्न रहोगे, तो ही तुम निवृत्त हो पाओगे। यहाँ ऐसे गुणातीत सत्पुरुष की जरूरत है।** वे जो कहते हैं, उसके पीछे उतना बल भी देते हैं। योगीबापा सिखाते थे कि कोई समर्पण करता है, तो संत उसे उतना बल भी

देते हैं। योगीबापा संतों को सिखाते थे कि कोई काढ़ा इत्यादि पिलाए तो ग्यारह माला का फल दे देना; खिचड़ी खिलाए तो पच्चीस माला का फल दे देना। इसके अतिरिक्त भोजन कराए, तो पचास माला का फल दे देना। हम से कुछ भी ऐसे नहीं लेते, इसलिए हमारे चैतन्य का रूपांतर होता है।

गुरुजी की बातें बार-बार सुनी हैं। कल भी बहुत अच्छी बातें की। हृदय में स्थिर हो जाएं ऐसी बातें की। 'समझ कर मुझे जीना है'–ऐसी दृढ़तायुक्त बातें कीं। **इनकी बातें जब शुरू हों, तब सजग हो जाना पड़ता है।** कब क्या बात आए, वो ध्यान रखनी पड़ती है। कैसा जीना चाहिए–ऐसी इनकी बातें होती हैं। सजग इसलिए होना कि–एक तो हमारा मन स्थिर हो जाए और **उसके साथ अंदर से हम भजन भी करें कि प्रभु ! आज वे जो कहें, उसे आप मेरे हृदय में स्थिर करना। 'मुझे उसी प्रकार जीना है'–ऐसी प्रार्थना करनी पड़ती है।** पाँच-पाँच जन्म से गुणातीत के साथ जो आ रहे हैं–ऐसे पुरुष की बातों के मुताबिक हम क्यों जी नहीं पाते? कारण–ऐसे पुरुषों का यथार्थ माहात्म्य जो अंदर स्थिर होना चाहिए, वह नहीं हुआ है।

हमारी 'प्रगट' और 'प्रत्यक्ष' की उपासना है। श्रीजी महाराज ने वरदान दिया है कि 'परब्रह्म तत्त्व' जो प्रगट हुआ है, वो गुणातीत साधु द्वारा हमेशा 'प्रगट' रहेगा। हम सब भी मानते हैं कि महाराज गुणातीत में प्रगट रहे, भगतजी महाराज, जागास्वामी, कृष्णजी अदा, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज द्वारा प्रगट रहे। काकाजी, पप्पाजी, प्रमुखस्वामिजी, महंतस्वामिजी, हरिप्रसादस्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, साहेब द्वारा प्रगट रहे–ऐसा हम मानते हैं। यहाँ सारे समाज के लिए गुरुजी 'प्रगट' हैं। मल्होत्राजी ने कहा कि गुरुजी मना करते हैं कि 'प्रगट ब्रह्मस्वरूप' नहीं कहना, पर कहे बिना रह नहीं सकते, क्योंकि उनके लिए तो यहाँ गुरुजी 'प्रगट' हैं।

लेकिन, गुणातीत से लेकर **आज तक के सभी प्रगट स्वरूपों ने 'प्रत्यक्षभाव' की जो बात की है, वह सिद्ध करना बहुत कठिन है।** आज एक-एक में 'प्रगट' हैं और एक-एक में प्रति-अक्ष, आँख के सामने–यानि 'प्रत्यक्ष' हैं। मनोजभाई ने काकाजी और बा की समाधि पर (ब्रह्मज्योति) नीचे लिखवाया है–प्रागट्य: इस दिन से इस पल पर्यंत, अर्थात्–अभी भी प्रगट हैं। तो फिर 'प्रत्यक्ष' कहाँ? काकाजी प्रगट तो हैं, लेकिन 'प्रत्यक्ष' कहाँ? गुरुजी में 'प्रत्यक्ष', नक्षु में भी 'प्रत्यक्ष'।

ब्रह्मानंदस्वामी बोले कि हम सांकरदा से–यहाँ आने जब से निकले, तो दो-दो घंटे पर गुरुजी का फोन आता रहा। गुरुजी ने इनमें काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी को 'प्रत्यक्ष' देखा। सभी के साथ वे ऐसा ही व्यवहार करते हैं। **'प्रत्यक्ष' माने जाएँ और सभी के साथ ऐसा व्यवहार हो, वह 'गुणातीत अवस्था' है। सहज अवस्था से गुरुजी का सभी के साथ एक जैसा व्यवहार है।** कल सभी प्रसंग बता रहे थे, इससे हमें ख्याल आया कि उन्होंने काकाजी का सर्वत्र दर्शन किया, पप्पाजी का सभी में दर्शन किया। गुरुजी का सुहृद्‌भाव भी इतना कि मुझे जो मिला है, वह तुम सभी के लिए है। काकाजी भी ऐसा कहते थे–मुझे जो मिला वह आप सभी के लिए है। **यह गुणातीत अवस्था है।** हम सभी को यहाँ पहुँचना है। प्रभु की हम पर परम कृपा है कि हमें ऐसे दिव्य पुरुषों की गोद में अखंड रखा है और बुद्धियोग मिलने के कारण हम जीने भी लगे हैं। जैसे-जैसे जीते जाएँगे, वैसे-वैसे दोष टलते जाएंगे; स्वभाव छूटते जाएँगे। सभी के साथ ऐसे 'सुहृद्' बन कर रह पाएँगे, उसका सुख भी मिलता जाएगा। **पर, हमारी दृष्टि केवल उनकी ओर रहनी चाहिए।**

'तेरी-मेरी प्रीत पूर्व की, नित्य-नित्य हो सवाई' – भजन की यह पंक्ति परम सत्य है। गुणातीत के समय से यह हमारी बात चली आ रही है कि तेरी-मेरी प्रीत पूर्व की, नित्य-नित्य हो सवाई; दिव्य जीवन देने वाले स्वामी - स्वरूप की पहचान करा दो। ये स्वरूप की पहचान हो जाए, तो आख़िर में क्या मांगना है कि– 'तेरे भक्तों की भक्ति करते हुए जीवन बिता दूँ।' गुरुजी का प्राकट्य अवसर है, तो हम सभी गुरुजी की महिमा की बातें करते हैं। 15 फरवरी को अक्षरविहारीस्वामिजी का प्राकट्य पर्व था, तब उनकी महिमा की बातें हमने सुनीं। इन दिव्य पुरुषों की महिमा की बातें सुन कर हमें यही करना है कि– 'तेरे भक्तों की भक्ति करते हुए –जीवन बिताते हुए, हम प्रत्येक भक्त में उन्हें (भगवत्स्वरूप संत को) 'प्रत्यक्ष' देखें।' मेरे लिए परम तत्त्व इस ब्रह्मांड में जैसा **'प्रगट'** रहा है, ऐसा का ऐसा सभी में मेरे लिए वे **'प्रत्यक्ष'** हैं। ऐसा **सुहृद्भाव–उन्होंने जीकर बताया, आत्मीयता–उन्होंने जीकर बताई है। यह एक-एक गुण गुणातीत का है।** कल गुरुजी ने बात करते हुए कहा कि पप्पाजी ने 1977 में उभराट की शिविर में हमें सूत्र दिया था– *'संबंध वाले भक्तों में महाराज को देखो।'* आज तक भी तीन शब्द की यह साधना ज़ारी है और जिस दिन संबंध वाले में पप्पाजी का प्रत्यक्ष दर्शन करने लग जाएँगे, उस दिन साधना पूरी हो जाएगी। पर, इस साधना में सतत जाग्रतता रखनी पड़ती है, ऐसे दिव्य पुरुषों की ओर दृष्टि रखनी पड़ती है।

उनका अनुग्रह तो इतना अधिक है कि वे हमारे जीवन में जैसे हमारी देह की स्थूल रक्षा करते हैं, वैसी ही रक्षा आत्मा की भी करते हैं। पर, आत्मा का दर्शन हमें है नहीं, हमें तो सिर्फ बाहरी यह सब दिखाई देता है; लेकिन भीतर में रह रही आत्मा की रक्षा भी वे ऐसे ही करते हैं।

ऐसे पुरुषों के समक्ष हम सतत प्रार्थना करते रहें। उनके व उनके भक्तों के समक्ष रंक रहें, अहंकार छोड़ें, उनका दास बनें... बापा कहते–बड़प्पन क्या ? 'दास का दास बनना' –वो बड़प्पन है। गुणातीत स्वरूपों की दृष्टि में यही बड़प्पन है, जबकि हमें तो (लौकिक) बड़प्पन का ही दर्शन है, क्योंकि हम देहभाव से चिपके हुए हैं।

बापा की दृष्टि में दास का दास बने –सेवकभाव रहे, वह बड़प्पन ! सबने योगीबापा के बारे में जब कहा था– *ये क्या संस्था चलाएँगे ? इनमें कोई बरकत नहीं है !* तब बापा ने कहा– *दयालु, मुझमें तो कोई बरकत नहीं, लेकिन आप सब हैं, तो शास्त्रीजी महाराज की शोभा बढ़ जाएगी।* **यह कितनी बड़ी बात है ?** कैसे सामान्य शब्द कि– *'आप सब हैं!'* और **अपनी अच्छाईपेशी के लिए उन्होंने यह नहीं बोला, बल्कि हृदय से कहते थे कि आप सब हैं, तो शोभा बढ़ जाएगी। यह गुणातीत अवस्था है।** यही है प्रभु का प्रत्यक्षभाव-यही है परम तत्त्व का प्रगटीकरण। जब तक हमारी देह है, तब तक साधना होती रहेगी। यदि हमारा तंत्र उसका स्वीकार करता जाएगा, तो बुद्धि भी करती जाएगी। हम गुरुजी जैसे विचक्षण न हों, सो बार-बार प्रश्न नहीं पूछते होंगे या ख्याल नहीं पड़ता होगा, इसलिए भी पूछते नहीं होंगे। लेकिन, अतंर से रंक रहकर कि– *'हे प्रभु ! मुझे कुछ ख्याल नहीं पड़ता, लेकिन एक संतोष - विश्वास है कि आप मेरे साथ हैं'* और... भगवान स्वामिनारायण - जो 234 वर्ष पहले प्रगट हुए, वह परब्रह्म तत्व धारण किए हुए आप दिव्य पुरुष हैं–ऐसा माहात्म्य का विचार करके, वे जो कहें, ऐसा करने की हम रुचि रखें।

ऐसा कहा जाता है कि बुद्धि छोड़ दो, ऐसा करो-वैसा करो, पर, बुद्धि को दिव्य किए बिना वह छूटती नहीं है और बुद्धि को दिव्य बनाने के लिए संत जैसा कहें वैसी आज्ञा पालनी पड़ती है, सेवा में जुड़ जाना ही पड़ता है।

काकाजी ने दिनकरभाई की प्रतीक्षा की, ब्रह्मानंदस्वामी आएँ तब गुरुजी प्रतीक्षा करें – यह देहातीत अवस्था है। काकाजी के हृदय में दिनकरभाई के प्रति जो माहात्म्य था, उस माहात्म्य का फोर्स कितना अधिक होगा कि उन्हें देह बाधित नहीं हुई, क्योंकि देहातीत अवस्था थी। गुरुजी को देह बाधारूप नहीं होती – ऐसी एक परम स्थिति पर ये पुरुष वर्तते हैं, जिसका दर्शन हमें सहज होता है। हृदय में हमसे अखंड यही प्रार्थना होती रहे कि हमारा अहोभाग्य है जो आपके साथ रहने का हमें सद्भाग्य प्राप्त हुआ। साथ रहते हुए हम इनका चिंतन करते हैं-प्रसंग देखते हैं, लेकिन हमारा देहभाव, अहंकार, 'स्व' का भाव इतना सख़्त है कि टूटता नहीं, छूटता नहीं है। इस हेतु हमें ऐसे पुरुषों की आज्ञा, सेवा और भजन कर ही लेना पड़े। **सोनाबा आधा घंटा भजन करने का खूब आग्रह रखती थीं।** ये सामान्य शब्द लगते थे, पर इसके बिना 'स्व' पिघलता नहीं है। शांति से भजन किए बिना 'स्व' पिघलता नहीं है। इन बड़े पुरुषों के जीवन में भी हमने देखा है कि काकाजी समय से सो जाते, पर फिर रात को उठ कर अपने लिए नहीं, हमारे लिए भजन करते थे। ये पुरुष तो हमारे लिए भजन करें, पर 'स्व' पिघलाने के लिए हमें भी अपने लिए भजन करना पड़ता है। यूँ, उनके आशीर्वाद और हमारे भजन का समन्वय होगा, तो हमारा 'स्व' पिघलेगा। उसके लिए बड़े पुरुष के साथ संबंध पक्का करना होता है। वे तो हमारे जीव को देख कर हमें स्वीकारते ही हैं।

तुम आओ और गुरुजी तुरंत कहें कि नौकरी छोड़ दो, वो कोई ऐसे ही नहीं बोल देते। वे यदि किसी को नौकरी छोड़ने के लिए कहें कि तुम रिटायर हो जाओ और कुछ मत करना – वे ऐसे ही नहीं कहते। वे तो चैतन्य को देखते हैं कि कितने जन्मों से ऐसे ही साधना के लिए ये आते हैं। मल्होत्राजी तो बड़े अफसर थे, कई लोग उनके नीचे काम करते होंगे और अब उन्हें सौ जने हुक्म करें। पर, तब भी आज आनंदपूर्वक यहाँ बैठे हैं, बात कर सकते हैं – ऐसी ऊँची स्थिति ऐसे दिव्य पुरुषों द्वारा प्राप्त होती है।

यह सेवकभाव व दासभाव है। **दासत्वभाव के बिना अखंड 'गुणातीत अवस्था' में रह नहीं सकते।** हम सभी का अल्टीमेट एइम यही है – प्राप्ति तो यही करनी है कि 'गुणातीत अवस्था' में रहते हो जाएँ; इस जन्म में या सौ जन्म में। गुणातीत ने भी यही कहा कि संबंध देख कर हम सतत उनके साथ रह सकें, सतत वर्त सकें।

दिल्ली में भक्तों को ढूँढने के लिए काकाजी ने गुरुजी को यहाँ भेजा। हम तो शुरू से गुरुजी का दर्शन करते रहे हैं कि उन्होंने देह से खूब कसनी सही है। जब कोई व्यवस्था नहीं थी, ऐसी स्थिति में वे रहे हैं – यह हम सब जानते हैं। तब गुरुजी को यही था कि काकाजी को राज़ी करना है। इसी एक अनुसंधान के कारण गुरुजी की देह, मन, बुद्धि कुछ भी बाधारूप नहीं हुए। पर, उसी के बल से इतना सुंदर परिणाम आया। यही करना चाहिए-यही एक रीति है। **बड़े पुरुष का माहात्म्य यदि सच में समझा हो, तो उनके वचन में मन-बुद्धि छोड़ना कठिन नहीं लगता।** वर्ना अहंकार छूटता ही नहीं है। यह छोड़ने के लिए – अपनी मनमानी छोड़ने के लिए उनका उतना ही माहात्म्य होना चाहिए। वे भी हमारी आत्मा से उतना ही प्रेम करते हैं। यह परस्पर का संबंध है। 'तेरी-मेरी प्रीत पूर्व की है' – तभी यह बात संभव होती है। ऐसी परम स्थिति प्राप्त करके गुरुजी हमारे बीच विराजमान हैं। हम सौ प्रतिशत मानें कि उन्हें हमारे चैतन्य की बहुत चिंता है – उन्हें हमारे चैतन्य की शुद्धि करने

की ही एक रुचि है और सतत उसी का अनुसंधान है। उनका समग्र तंत्र दिव्य है, केवल प्रभु के आकार से वे वर्तते हैं। उस बच्चे (आत्मन्) को पैसे लेने के लिए भेजा और वह ले आया। **उनकी ऐसी एक-एक क्रिया में मूर्ति देने के सिवा और कोई हेतु नहीं होता। उनका जीवन एकदम निर्वासनिक है। उन्हें सिर्फ एक प्रभु की वासना है।** प्रभु को प्रसन्न करने की एक सतत सहजावस्था है और उनका समग्र तंत्र दिव्य हुआ है; **उनके द्वारा जो कुछ भी होता है, वो हमारे जैसे सभी चैतन्यों की प्रगति के लिए है।** इस सत्य का हम स्वीकार कर सकें, ऐसा बल मिले-ऐसी एक ख़ास प्रार्थना करते हैं... सभी स्वरूपों के चरणों में एक ही प्रार्थना करनी है कि सभी प्रगट स्वरूपों के लिए हमें परम भाव, ऐसा ही दिव्यभाव, ऐसी ही महिमा का भाव रहे, पर सर्वोपरि स्वीकार गुरुजी का रहे। यहाँ जितने भी साथ में काम करते हैं, उन सभी में गुरुजी को 'प्रत्यक्ष' निहारें। उनके साथ वैसा ही व्यवहार करें, जैसा गुरुजी के साथ करते हो। ऐसा व्यवहार हम छोटे से छोटे भक्त के साथ करें – वो मैंने गुरुजी को 'प्रत्यक्ष' माना! गुरुजी भले ही मंदिर में प्रत्यक्ष बैठे हैं, पर हम जहाँ भी हों वहाँ, एक-एक मुक्त के साथ-सेवा में जहाँ भी हों, वहाँ मैं गुरुजी के साथ बोलता हूँ, गुरुजी के साथ व्यवहार कर रहा हूँ – यूँ मानें। **वह बुलाए तो ऐसा लगे कि मुझे गुरुजी ने बुलाया – इस प्रकार के भाव से हमारा वर्तन हो। इसका अर्थ यह हुआ कि – हमने गुरुजी का प्रत्यक्षभाव से स्वीकार किया है।**

गुरुजी के प्राकट्य के अवसर पर हम आज यही प्रार्थना करें... आपने हमें काकाजी भेंट में दिए, महाराज, स्वामी, योगीबापा दिए। ये दिव्य पुरुष जो हमें भेंट में मिले हैं, उनका स्वीकार हमारा समग्र तंत्र करे और अब एक क्षण भी आपको छोड़ कर यानि – आपको भूल कर हमें कुछ करना ही नहीं है। हमारी दृष्टि सतत आपको प्रसन्न करने के लिए रहे – यही सावधानी हमारे समग्र तंत्र को दिव्य बनाएगी। यूँ, दिव्य बना कर उस मूर्ति के सुख की अखंड अनुभूति हमें कराओ – यही प्रार्थना!

पू. प्रेमस्वामिजी (हरिधाम)

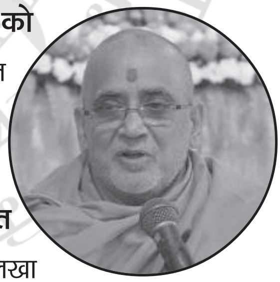

शांतिभाई ने **अद्भुत गोष्ठि** हमें करी। मेरी तो विनती है कि **हर एक मुक्त को सप्ताह में एक बार इसे सुनना चाहिए।** जिस समझ से हमें जीना है, वो बहुत स्पष्ट सूझ उन्होंने दी। जहाँ हम हैं वहाँ महाराज ने हमारे लिए जो निर्धारित किया है, उसकी बहुत सचोट सूझ हमें दी।

...हमें स्वभाव देखने की आदत है, सो स्वभाव ही दिखाई देते हैं। **गुणातीत स्वरुपों को 'संबंध' के सिवा और कुछ दिखाई देता ही नहीं।** योगीगीता में लिखा है कि **दास का दास** होना ही बड़प्पन है। योगीजी महाराज वडोदरा के मांडवी चार रास्ते पर शास्त्रीजी महाराज के गृहस्थ हरिभक्त को दंडवत् करते थे, वो कैसा माहात्म्य होगा! उन्होंने कैसा संबंध देखा होगा?

...क्रियाशक्ति, ज्ञानशक्ति और इच्छाशक्ति उनके आधीन थीं। फिर भी सबसे परे होकर शास्त्रीजी महाराज के सामने तो ठीक, लेकिन उनके संबंध वालों के पास भी – 'मैं कुछ नहीं' – ऐसा मान कर हर पल, हर क्षण जिए ऐसा दर्शन कराया...

स्वामिजी कहते हैं कि वचनामृत में अक्षरधाम के मुक्त का वर्णन है, गुणातीत का तो वर्णन हो ही नहीं सकता

और महाराज तो कल्पनातीत हैं... काकाजी, पप्पाजी और स्वामिजी को हमसे यह कराना है कि संबंध वाले के सामने 'मैं कुछ नहीं'... स्वामिजी कहते हैं कि हरिधाम के नीम के पेड़ का भी दोष देखने का तुम्हें अधिकार नहीं है...

प.भ. राम वर्मा (दिल्ली)

...रात को जब मैं यहाँ से घर पहुँचा, तो साढ़े बारह बजे मेरी बेटी गुरुजी के लिए ग्रीटिंग कार्ड बना रही थी... बिल्कुल नया कॉन्सेप्ट उसके दिमाग़ में आया और रात तीन बजे तक उसने अपनी अन्तरात्मा की आवाज़ से जो भाव लिखे वो पढ़ कर सुना रहा हूँ–

❖ *आकाश मंडल का चमकता हुआ **ध्रुवतारा गुरुजी**! काकाजी के **लाड़ले गुरुजी**!*

❖ *गुणातीत समाज के सौरमंडल में चमकता **सूर्य गुरुजी**! संतों में **कोहिनूर गुरुजी**!*

❖ *मंदिर के **प्राण गुरुजी**! आनंदी दीदी की **साँसों के तार गुरुजी**!*

❖ *नक्षु के **मुरीद गुरुजी**! भक्तों के जीवन के **आधार गुरुजी**!*

❖ *ग्रंथों का **सार गुरुजी**! अंधकार में **जलता दीया गुरुजी**! हमारी **सरकार गुरुजी**!*

❖ *आपकी छवि में दिखते **भगवान गुरुजी**! हमारे कुटुंब के **सरदार गुरुजी**!*

❖ *भक्तों के **रखवाले गुरुजी**! रात-रात जागकर **धुन करते गुरुजी**!*

❖ *सतत मंत्रजाप करा कर भक्तों की हर समस्या का **समाधान कराते गुरुजी**!*

❖ ***ताड़देव में** बैठे-बैठे चारों धाम की **यात्रा कराते गुरुजी**!*

❖ ***365 × 24 घंटे – उपलब्ध हैं गुरुजी**!*

❖ *आज 13 मार्च 2015 को **अठहत्तर के हो गए गुरुजी**!*

❖ *दुनिया के लिए अनलकी तेरह (नंबर), लेकिन **हम सबके लिए 'लकी' हैं गुरुजी**!*

तेरह नंबर बहुत देशों में तो रखते ही नहीं हैं, लेकिन हम लोगों का अहोभाग्य है कि **तेरह तारीख को आपका बर्थडे आता है और हम सब लोगों के लिए बहुत ही लकी है।**

❖ *पापा राम को महापूजा के साथ-साथ **लघु रुद्री का सुख देते गुरुजी**!*

गुरुजी ये आपने इतनी बड़ी कृपा मुझ पर की है। मैं उसका ऋण कभी उतार नहीं पाऊँगा। मैं गौरीशंकर मंदिर में जाता था। वहाँ इतनी भीड़ होती थी कि ढंग से जल भी नहीं चढ़ा पाता था। इतने सालों से मैं मंदिर जा रहा हूँ, कावड़ लेकर आ रहा हूँ। **कभी भी मैं रुद्राभिषेक नहीं करवा पाया। लेकिन, आपके पास आते ही मुझे जीवन का आनंद-सुख मिल गया।** आपने दिव्य लघुरुद्र मुझसे करवाया, उसके लिए बहुत-बहुत कोटि-कोटि धन्यवाद! एक और बात मेरी बेटी ने लिखी थी–

❖ *आइसक्रीम, गोलगप्पे और कॉफी के **शौकीन गुरुजी**!*

❖ *दिल्ली भक्त मंडल आपको पाकर हो गया **धन्य गुरुजी**!*

❖ *काकाजी की **सौगात गुरुजी**!*

आपके अठहत्तरवें जन्मदिन पर खूब-खूब जय स्वामिनारायण।

मैं एक बात और कहना चाहूँगा कि आज यहाँ पर आप सबके बीच में मुझे ये जो लाभ मिल रहा है, वह मेरी बेटी की वजह से ही है। 7 अप्रैल 2011 को 'गति' (प.भ. राजेश वर्माजी की बेटी) का बर्थडे मनाने कि लिए मैं और मेरी फॅमिली इन्वाइटेड थी। मेरी बेटी का जन्मदिन 10 अप्रैल को आता है। उसने देखा कि यहाँ जन्मदिन कैसे सेलिब्रेट करते हैं! तो, उसने मुझे घर जाकर कहा– *पापा, मुझे भी ऐसे ही सॅलिब्रेट करना है।* मैंने कहा– *बेटा, यह पॉसिबल नहीं है, वे राजेश अंकल के गुरुजी हैं। वे हमारा बर्थडे ऐसे क्यों सेलिब्रेट करेंगे?* पर, वह मेरे पीछे पड़ गई। मैंने उससे कहा– *अच्छा, मैं राजेश अंकल से बात करता हूँ।* तो, उन्होंने कहा ऐसा नहीं होता, वो तो 7 तारीख को ही हम सबका एक साथ सेलिब्रेट करते हैं। अब अगली 7 तारीख आएगी तब, पर उसका बर्थडे जा चुका होगा। फिर भी, वो मेरे इतना पीछे पड़ गई कि मैं परेशान हो गया। **पता नहीं था कि हमें क्या मिलने जा रहा है!** पिता होने के नाते मैं बच्चे की भावनाओं में बह गया और राजेशजी से बात की कि कैसे भी करके एक बार आप गुरुजी से बात करो। इत्तफाक से 10 तारीख को जे.पी. मल्होत्राजी जो कि रूप नगर में रहते हैं, उनके घर गुरुजी की पधरामनी थी और वहाँ गुरुजी ने मुझे बुलाया। **इससे पहले मैं किसी गुरु को नहीं मानता था।** भगवान शंकर को ही सब कुछ मानता था और ज़्यादा भटकता भी नहीं था। एक ही लक्ष्य– भगवान शंकर; उनके अलावा जीवन में कुछ नहीं था। बारिश, आंधी-तूफान में भी वहाँ जाता ही था। मैंने बहुत सारे गुरुओं के बारे में सुना था। सो, **मेरा मन गुरुओं से थोड़ा सा दूर हो गया था। पर, 10 अप्रैल 2011 को गुरुजी ने मुझ पर क्या किया कि मैं उनका हो गया!**

शुरुआत में मैं बड़ा विचलित था। मेरा मन परेशान था कि मैं कहाँ पर आ गया हूँ? यहाँ भगवान शंकर-रामजी की बातें नहीं होती हैं। तो, मेरा मन दुःखी था। एक दिन बापुस्वामी ने मुझे गुरुजी की महिमा समझाई और यहाँ के संतों के बारे में बताया, फिर भी मेरा मन थोड़ा-सा विचलित रहता था कि– नहीं-नहीं, भगवान शंकर सर्वोपरि हैं। भगवान शंकर देवों के देव-महादेव हैं, वे किसी के चेले नहीं हैं, सबके गुरु हैं, मैं तो उन्हीं को गुरु मानता हूँ। पर, **गुरुजी इतनी आसानी से आप जो मुझे मिल गए, मैं आपको खोना भी नहीं चाहता था।** 12 या 13 तारीख की बात है– यहाँ पर कोई फंक्शन था; गुरुजी ने मुझे बुलाया और महापूजा में बिठा दिया। मंदिर में आने का वह मेरा दूसरा दिन था। जब महापूजा करके नीचे गया, तो कम से कम 10 लोगों ने मेरे पैर छूकर मेरे भाग्य की सराहना की। किसी ने कहा कि– *आप कितने धन्य हो कि आपको ऐसा मौका मिला।* **बापुस्वामी** ने मेरी अंतरात्मा को झंझोड़ दिया और एकदम कहा–

राम, कुछ नहीं है, सिर्फ गुरुजी के चरणों में सब कुछ है। अगर तुम भगवान शंकर की सच में भक्ति करते हो, तो उनके बिना पत्ता नहीं हिल सकता। *उन्होंने ही आपको यहाँ भेजा है।*

मैं अभी मंदिर रोज़ नहीं जा पाता हूँ। यहाँ भी कम आता हूँ, लेकिन गौरीशंकर मंदिर भी डेइली नहीं जा पाता हूँ... मुझ पर व मेरे परिवार पर गुरुजी कृपा बनाए रखना...

મૂળ ગુજરાતી :

સંવેદના

પ.પૂ. કાકાશ્રીનું એક વાક્ય મને ઘણાં દિવસોથી યાદ આવ્યા કરે છે. તમોને (જૂના જોગીઓને) ખ્યાલ હશે કે **પ.પૂ. કાકાશ્રી** કહ્યા કરતા– ***'આપણે સ્વામિનારાયણના સાત ટુકડા કર્યા.'*** મૂળ ગાદી, અક્ષરપુરૂષોત્તમના, મુક્તિજીવનસ્વામીવાળા, વઢવાણવાળા–એમ અલગ-અલગ. વારંવાર આ વાત કર્યા કરવા પાછળ એમનો હેતુ એ હતો કે–

'આપણે હવે ગુણાતીત સમાજના આમ ટુકડા ન કરીએ.'

'યોગી પરિવાર'માંથી પાંગરેલા ગુણાતીત સમાજના આપણે, નાનાં-મોટાં રજવાડાંઓની જેમ, જૂદા-જૂદા 'પરિવાર'ના નેજા હેઠળ ફંટાઈ જઈશું, એનાથી આપણી આગવી પ્રતિભા જરૂર ઝળહળશે, પણ સાથોસાથ આપણી વચ્ચે જૂદારો ય આવી જશે. અને છેવટે 'ગુણાતીત સમાજ'ની કોઈ ઓળખ નહીં રહે–એ વિસરાઈ જશે.

'ગુણાતીત સમાજ' તો **કાકાજી-પપ્પાજીનું** એક અદ્વિતીય ને અદ્‌ભુત **સર્જન** છે, જેને એમણે એમના લોહીથી સિંચ્યો છે અને આપણા સહુ માટે એમની **'જીવંત સ્મૃતિ'** છે. કાકાશ્રી-પપ્પાજીને લઈને તો સંપ્રદાયમાં-સમાજમાં આજે આપણો મહિમા છે–આપણી ગણના છે. કાકાશ્રી અને પપ્પાજી ભેળા આપણને જો સંસ્થાએ દૂર ન કર્યા હોત, તો આજે આપણી જે આધ્યાત્મિક ઊંચાઈ છે, ઓળખાણ છે–એ હોત કે?

શું હવે આપણે જ એમના નામને ભૂંસીશું-એમના કાર્યને ભૂલાડીશું?

– પ.પૂ. ગુરુજી, ૧૩ માર્ચ ૨૦૧૫

संवेदना

प.पू. काकाजी का एक सन्टेन्स मुझे काफी दिनों से याद आ रहा है। आपको (पुराने जोगियों को) ख्याल होगा कि **प.पू. काकाजी** अकसर यह सन्टेन्स बोला करते थे –

'हमने स्वामिनारायण के सात टुकड़े कर दिए।'

ओरिजिनल गद्दी, अक्षरपुरुषोत्तम के, मुक्तिजीवनस्वामिजी के, वढवाण वाले और ऐसे अलग-अलग। यह बात दोहराया करने के पीछे उनका मक़सद यह था कि –

'अब हम गुणातीत समाज के ऐसे टुकड़े न करें।'

'योगी परिवार' में से विकसित गुणातीत समाज को छोटी-बड़ी रियासतों की भाँति, भिन्न-भिन्न 'परिवार' के टाईटल्स से बांट देने पर, हमारी अलग प्रतिभा तो जरूर चमकेगी, पर साथ ही साथ हमारे बीच अलगाव आ जाएगा। आख़िरकार, 'गुणातीत समाज' की कोई पहचान रहेगी ही नहीं–वह भुला जाएगा।

'गुणातीत समाज' तो **काकाजी-पप्पाजी का** एक अद्वितीय व अद्‌भुत **सर्जन** है, जिसे उन्होंने अपने लहू से सींचा है और आज हम सबके लिए उनकी **'जीवंत स्मृति'** है। काकाजी-पप्पाजी की बदौलत तो संप्रदाय में-समाज में आज हमारी महिमा है-स्टेटस है। काकाजी-पप्पाजी के साथ संस्था ने हमें दूर न किया होता, तो आज हमारी जो अध्यात्म कक्षा है, पहचान बनी है–वह होती क्या?

क्या अब हम ही उनके नाम को मिटा देंगे-उनके कार्य को भुला देंगे?

– प.पू. गुरुजी, 13 मार्च 2015

13 मार्च, 2015 – प.पू. गुरुजी का 78वाँ प्राकट्योत्सव

प.भ. ऋषभ गोयल (पानीपत)

...आई कन्सीडर मायसेल्फ एज़ वन ऑफ धी लकीएस्ट पर्सन ऑफ धी वर्ल्ड। भगवान पाने के लिए उन्हें क्या-क्या करना पड़ता है? मंदिरों में भी घंटों तक लाइन में खड़े रहते हैं, तप करते हैं, फास्टिंग करते हैं, पता नहीं क्या-क्या करते हैं? हमें यहां पर गुरुजी ने बहुत कम्फर्टेबली भगवान दे दिए हैं। सब भगवान को खुश करने में लगे रहते हैं कि हम क्या करें जिससे भगवान हमसे खुश रहें, राज़ी रहें। पर, यहां पर तो सिस्टम ही उल्टा है। **यहां पर गुरुजी हमें खुश करने में लगे रहते हैं।** सबकी पसंद-नापसंद गुरुजी को पता है। गुरुजी हमेशा यही सोचते रहते हैं कि मैं इसके लिए ऐसा क्या करूं जिससे यह खुश रहे। सबको ऐसे एक्सपीरियन्सिज़ हुए होंगे कि **गुरुजी हरेक इंडीवीड्युअल की कितनी कॅयर करते हैं।** तो **हमें जो सत्संग मिला है, हमें उसकी इम्पोर्टन्स को रियलाइज़ करना बहुत जरूरी है।** बचपन से ही गुरुजी और दीदी का पर्सनली खूब ज़्यादा प्यार मिला है। जैसे – हम हर सेटर्डे पानीपत से आते थे, तो हर सण्डे को गुरुजी हमें रास्ते के लिए चॉकलेट, बिस्किट वगैरह देते थे या जब भी हॉस्टल जाना होता था तब चॉकलेट देते थे। एक बार मेरे बर्थडे पर गुरुजी ने हॉल भी सजवाया था। गुरुजी कुछ न कुछ ऐसा करते ही रहते हैं, जो हमें अच्छा लगे और ऐसा ही दीदी का है। दीदी से बात करने पर धी बेस्ट फीलिंग आती है। दीदी की स्माइल देख कर जो अंदर खुशी मिलती है, धेट इज़ धी बेस्ट फीलिंग इन धी वर्ल्ड। गुरुजी और दीदी का प्यार तो मिलता ही है, पर इससे भी ज़्यादा इम्पोर्टन्ट है – सत्संगियों का जो प्यार मिलता है और भक्त सब एक-दूसरे की जो सॅल्फलेस्ली सेवा करते हैं। हर सत्संगी एक-दूसरे के लिए कुछ न कुछ करता है। मैं किसका नाम लूं, किसका ना लूं? लेकिन जो थोड़े बहुत याद हैं, उन्हें मैं शेयर करूंगा...

मीना आंटी को पता है कि मुझे थेपले बहुत पसंद है, तो वे मेरे लिए थेपले बना कर देती रहती हैं। जहां पर मैं पढ़ रहा हूँ, उसके सामने ही ट्यूलीप एपार्टमेंट में **शोभना आंटी** और **भास्कर अंकल** की फॅमिलीज़ रहती हैं। उनसे भी कॉन्सटंट्ली बहुत सपोर्ट मिलता है। मुझे मंदिर आना हो, तो बस शोभना आंटी को बोल देता हूँ कि – 'आंटी, मुझे मंदिर जाना है' – तो फिर वे अपनी रॅस्पाँसीबिलिटी ले लेती हैं कि अब इसे कैसे भी मंदिर पहुंचाना है। यूँ सारे सत्संगियों में खूब क्लोज़नेस हो चुकी है। एक फॅमिली-सा रिश्ता जुड़ा हुआ है। फॉर एग्ज़ाम्पल, अगर मुझे कुछ हेल्प चाहिए, तो जितनी कम्फर्टेबली मैं अपने रियल भाई वैभव भइया से कह पाऊंगा, उतना ही कम्फर्टेबली विपिन भइया या और किसी से कह पाता हूँ। मुझे पता है कि वो भी मुझे उतना ही प्यार करते हैं। **गुरुजी ने यह जो फॅमिली सेटअप बनाया है, वह हमारे सत्संग की सबसे यूनीक और सबसे इम्पॉर्टन्ट कॅरेक्टरस्टिक है।** एक-दूसरे को अपनी फॅमिली मानकर चलें और एक-दूसरे से इतना

ज़्यादा प्यार रखें - यह बहुत इम्पॉर्टन्ट बात है। जैसे **काकाजी** के भजन की एक लाइन है – **कुछ और ना सीखा हो हमने, आत्मीयता निभानी सीखी है।** यह सच है और हमें आत्मीयता **अभी और भी अच्छी तरह से निभानी सीखनी है।** बट, ऑलरेडी जितना यहां पर है, वो वर्ल्ड में और कहीं आपको नहीं मिलेगा। इवन अपने फॅमिली रिलेशन्स में भी आपको जितना नहीं मिलता, वह आपको यहां सत्संग में डेफीनेट्ली मिलेगा।

एक बात खूब समझना – **आप यहां पर हैं क्योंकि आप यहां के लिए एलीजिबल हैं। हर कोई यहां पर नहीं आ सकता।** जैसे कि गुरुजी समझाते हैं – पूर्व का जिनका रिलेशन होता है, वे ही यहाँ आते हैं।

हमें कैसे संत मिले हैं! फॉर एग्ज़ाम्पल – एक बार गुणातीतानंदस्वामिजी खाना खाकर, अपना पत्तल धो रहे थे, तो एकदम नीचे से कुछ हाथ आए और स्वामी का जूठा पत्तल लेकर चले गए। किसी ने यह देखा, तो उसने पूछा – स्वामी, वो हाथ किसके थे ? स्वामी ने बताया कि ऐसे देवी - देवता आते रहते हैं; मेरी झूठन लेने के लिए वे तरसते हैं। मतलब आसानी से उन्हें नसीब नहीं होता। ऐसा ही एक और प्रसंग है – तीन जनों को गुणातीतानंदस्वामिजी के दर्शन करने थे। मंदिर के बाहर माली काम कर रहा था। उन्होंने माली से कहा कि हमें अंदर दर्शन कराने के लिए हाथ पकड़ कर ले चलो, हम अपने आप नहीं जा सकते। बाद में गुणातीतानंदस्वामिजी ने बताया था कि वे तीनों – ब्रह्मा, विष्णु, महेश थे। मतलब इतने बड़े संत - काकाजी हमें मिले हैं, जिनके दर्शन बड़े देवी - देवताओं को नसीब नहीं होते… हम कितने लकी हैं यह आप रियलाइज़ कीजिए। यह सत्संग हमें आसानी से मिला है, तो हम ये सारी चीजें फॉर ग्रांटेड न ले लें और रियलाइज़ करें कि हमारे लिए यह कितना इम्पॉर्टन्ट है। इस सत्संग की वजह से हमारी लाइफ कितनी इज़ी हो गई है !

मैं कभी - कभी सोचता हूँ कि हम जिंदगी में टेंशन क्यों लेते हैं या किसी चीज़ की चिंता भी करते हैं, तो क्यों करते हैं ? जबकि हमें पता है कि हम 'सर्वोपरि स्वामिनारायण' के भक्त हैं। हमें काकाजी जैसे संत मिले हैं, जिनकी पावर बहुत ही एक्स्ट्राऑर्डिनरी है, फिर भी हम चिंता क्यों करते हैं ? **यदि चिंता करते हैं, तो हमारी ही निष्ठा में कमी है** कि हम ही उन्हें प्रोपर्ली मान नहीं पाते हैं। गुरुजी समझाते भी हैं कि **धुन हर** समस्या को हल करेगी। हम इन बातों को टोटली मान पाएँ, तो हमें लाइफ में कोई भी चिंता करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। अगर **हमें बाहर की - वर्ल्ड की चीजें अभी भी इफेक्ट कर जाती हैं, तो इसका मतलब हम अभी तक टोटली गुरुजी के नहीं हो पाए हैं।**

गुरुजी से मैं यही प्रार्थना करूंगा कि हम एक - दूसरे में गुरुजी को देख पाएँ। **हम एक - दूसरे को डिवाइन बीईंग समझ पाएँ।** हमारे यहां पर प्रेक्टिस (परंपरा) है कि हम एक - दूसरे के पैर छूते हैं। बड़े से बड़ा आदमी छोटे बच्चे के भी पैर छूता है। यह एक बहुत ही एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी प्रेक्टिस है। यह कहीं और नहीं मिलेगी। **हम एक - दूसरे के अंदर भगवान को, गुरुजी को देख पाएँ, इसलिये वो प्रेक्टिस हम करते हैं।** तो, हम ऐसा कर पाएँ, ऐसा हम सबको आप आशीर्वाद देना – यही गुरुजी के चरणों में प्रार्थना…

लास्ट में, हमारे मंदिर के सेवक चेतन भइया का भी आज बर्थडे है, तो उन्हें हार्दिक जय स्वामिनारायण।

श्री महेन्द्र नागपालजी (पूर्व विधायक–दिल्ली सरकार)

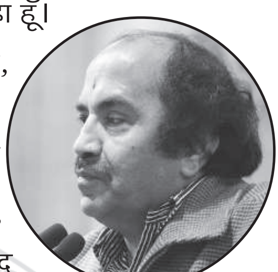

...आज का इतना सुंदर आयोजन देखने के बाद मैं सुखद अनुभव कर रहा हूँ। सामाजिक क्षेत्र में अनेक प्रकार के कार्यक्रम देखने जाने का मुझे अनुभव है। लेकिन, **इस प्रकार पूरी तरह एक धार्मिक प्रवृत्ति, शांतिमय वातावरण को मैं ईश्वर का चमत्कार मानता हूँ।** हमारी जो श्रद्धा-भावना जुड़ी हुई है, उसे हम यहाँ एकत्रित होकर भाईचारे के रूप में महसूस कर रहे हैं। गुरुजी से मेरा आज ही नहीं, बल्कि बहुत पुराने समय से मिलना रहा है और समय-समय पर उनका आशीर्वाद भी मिलता रहा है।

आज के इस अवसर पर मैं तो एक श्रोता के रूप में आया हूँ। कुछ सुनने के लिए आया हूँ, ताकि कुछ सीख सकूँ। जो लोग यहाँ पर उपस्थित हैं, उनके समक्ष कुछ अधिक कहना मैं उचित नहीं मानता। लेकिन, मुझे यहाँ पर दो शब्द कहने के लिए कहा गया है। तो, मैं तो वही पुरानी बात, जो पहले भी कह कर गया था उसे रीपीट करता हूँ क्योंकि कुछ नए लोग यहाँ पर उपस्थित हैं।

आज इस व्यस्तता के युग में भगवान ने हमें बहुत कुछ दिया है, लेकिन हमारे पास समय बहुत कम होता जा रहा है। अधिकतर या तो हम अपने कारोबार में या मोबाईल पर होते हैं और घर में पहुँच कर टी.वी. के सामने बैठ जाते हैं। कोई अपने कमरे में बैठ कर सीरियल देखता है, तो कोई न्यूज़ देखता है और कोई अपना मनपसंद कार्यक्रम देखता है। बच्चे अपने लॅपटोप या मोबाईल लेकर बैठ जाते हैं। यूँ, अपने परिवार में हम एक-दूजे से कटा-सा महसूस करने लगे हैं। लेकिन, मैं तो कहूँगा कि **परिवार के अंदर रह कर जो सुख मिलता है, वो कहीं नहीं मिल सकता।** हम आपस में बहुत कम बात कर पाते हैं। **सो, सप्ताह में हम एक दिन ऐसा जरूर निकालें कि अपना टी.वी., मोबाईल बंद कर दें और बैठ कर इकट्ठे भोजन करें, परिवार के सुख-दुःख को बाँटें।** अगर हम यह करने लग जाएँ, विशेष तौर पर नई पीढ़ी को अपने साथ बिठा कर संस्कार देने की कोशिश करें, तो उसका लाभ पूरे समाज को मिलेगा। इस प्रकार के जब आयोजन होते हैं, उसमें भी अनेक प्रकार की बातें हमें सीखने को मिलती हैं। तो, मैं आपसे यही निवेदन करना चाहता हूँ कि अपना एक दिन का समय परिवार को जरूर दें।

आज यहाँ जो उपस्थित हैं, उनसे मैं यही आशीर्वाद लेने के लिए आया हूँ कि मैं समाज सेवा के लिए जो कार्य कर रहा हूँ, ईमानदारी से उस सेवा को आगे भी करता रहूँ।

प.पू. वशीभाई (पवई)

... दिल्ली आना होता है, तो बहुत सारी स्मृतियाँ और गुरुजी की एक लंबी मंज़िल नज़र के सामने आती है। आज सुबह मैं अनुपम मिशन के पंकजभाई और सुरेशभाई को मंदिर के ऊपर के फ्लोर में गोंडल, गढडा... दिखा रहा था। वे इतने खुश हो गये कि एकदम बोल पड़े – *'गुरुजी इज़ ए क्रियेटीविटी।'*

आज का सूत्र है – **स्वरूप से संबंध! यहीं से जर्नी शुरु होती है। संबंध वाली दृष्टि**

से जीना, एक बड़ी लंबी यात्रा है।

...हम लोग कहते हैं कि आज गुरुजी का 78 बर्थडे है, लेकिन **एकॉर्डिंग टु मी, धेर आर सर्टन पीपल हू डोन्ट एइज**, जिसे जैनी लोगों में कहते हैं कि उन्हें काल का धर्म नहीं लगता है। वो कैसे? **गुरुजी इज़ यंग बाय हिज़ थॉट्स, बाय हिज़ एटीट्यूड।** गुरुजी रात को कई बार जोक्स सुनते हैं। नक्षु जोक सुना रहा था। हम लोग उसका जोक समझे नहीं, लेकिन गुरुजी समझ गए और उसे रिप्लाई दिया, तो वह खुश हो गया। यूं, गुरुजी कॅन गो टु धी लेवल ऑफ नक्षु ऑल्सो, धेट्स व्हाय ही इज़ यंग। **गुरुजी इज़ यंग इवन बाय टॅक्नोलॉजी।** आज यह माहौल देख रहे हैं। जहां भी टॅक्नोलॉजी का यूज़ कर सकते हैं, तो गुरुजी सबसे कहते हैं – यू यूज़ टॅक्नोलॉजी। टुडे वी आर लिविंग इन धी वर्ल्ड ऑफ टॅक्नोलॉजी। यु कन्सीव धी आइडिया फ्रॉम जापान, यु मॅन्युफेक्चर इन इंडिया एण्ड सेल एल्स वॅर। **गुरुजी कोई हार्वर्ड स्कूल में गए नहीं हैं, लेकिन वे यही इम्प्लीमेंट करते हैं।** कैसे? कल की बात है – मेरी और दिलीप बापु की रिर्टन टिकिट का कुछ माज़रा था। समीर ने कुछ टूर-ट्रावेल्स का काम शुरू किया है, तो उसे ट्रेन में फोन किया कि दिल्ली टू बॉम्बे की टिकिट मिलती हो, तो तू अभी देख कर बता। इमीडियेट्ली उसने टिकिट बुक की और यहां आकर उसकी कॉपी दे दी! मैं ये बात इसलिए बताता हूँ कि **एलाँग विध धी स्पीरीच्युआलिटी, इन धिस वॅरी वर्ल्डली लाइफ ऑलसो, गुरुजी कैसे कदम मिला कर काम करते हैं!** 'बिज़नेस एट धी स्पीड ऑफ थॉट डॉट कॉम'- ऐसी एक पुस्तक बिलगेट्स ने लिखी है। उसका इम्प्लीमेंटेशन आप यहाँ देख सकते हैं। यहाँ कैसे देख सकते हो? तो ये जो फ्लावर्स का आज डॅकोरेशन देख रहे हैं, उसके लिए गुरुजी ने चेतन और नित्या दीदी से कहा कि तुम चाइना जाकर डॅकोरेशन के फ्लावर्स लेकर आओ। **धीस रिक्वायर्स गट्स, गुरुजी इज़ बोल्ड कि** मंदिर के पैसे बचें और साथ-साथ इनकी सोच यह भी है कि कम पैसों में बड़ा काम हो। एक महीने पहले यदि हम रीज़र्वेशन करा दें, तो एट धी कॉस्ट ऑफ ट्रेन टिकिट, यु केन ट्रॉवल इन फ्लाइट। **ऐसे ही आइडियाज़ से गुरुजी यंग हैं।** ऐसे आइडियाज़ से वे भक्तों की सेवा करते हैं - रक्षा करते हैं, भक्तों को आगे लेते हैं और भक्तों को बल देते हैं।

गुरुजी इज़ यंग बाय हिज़ थिंकिंग, ही इज़ ए प्रोलिफिक थिंकर। हम लोग कुछ सोचते हैं, तो थोड़ा सोच कर रुक जाते हैं, लेकिन गुरुजी एक-एक बात पर – जैसे प्रत्यक्ष की बात की, तो उन्हें रात को नींद नहीं आई और गीता का श्लोक ढूंढ कर उसमें से पाया – 'सी ऑल इन मी, एन्ड मी इन ऑल।' काकाजी की 'प्रत्यक्ष' की जो बात थी, वह उन्होंने गीता के छट्ठे अध्याय के 30वें श्लोक से ढूँढ कर निकाली। काकाजी के जो भी टॅक्नीकल रहस्य, या जो बातें उन्हें समझ में नहीं आतीं थी, वो गुरुजी ने काकाजी से पूछीं। जैसे भागवत में कहीं भी राधाजी का नाम नहीं है, प्रगट का भाव, काकाजी की बातों में – भावना को हाथ-पैर और फिर पंख आएँ, ये सब रहस्य वाली बातें गुरुजी ने हमारे सामने, समाज के सामने खोल कर रखी हैं। **उन्होंने हमें दिखाया कि काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी या अपने गुरु का सेवन और संबंध कैसे करना है और इस मार्ग पर आगे कैसे चलना है।**

गुरुजी की जर्नी देखा जाए तो – इट कॅन बी डिवाईडेड इन टु 4 पार्ट्स। फर्स्ट 20 इयर्स ऑफ हिज़

एज्युकेशन। फिर योगीजी महाराज के साथ जो संबंध हुआ। योगीजी महाराज और काकाजी की मरजी जान कर साधु हो गए। लेकिन, संबंध की जर्नी का पहला स्टेप था – गुरु पर अटूट विश्वास, गुरु के साथ लव - इन्टीमसी। गुरुजी को योगीजी महाराज और काकाजी से इतना लगाव कि बापा ने कहा– *आप संस्कृत पढ़ो।* गुरुजी बोले– *यह सब छोड़ कर यहाँ आया, मुझे अब पढ़ाई में इन्ट्रेस्ट नहीं है। मैं साइंस का स्टूडन्ट हूँ, हाउ विल आई स्टडी संस्कृत?* लेकिन, एक गुरु पर विश्वास, उनके प्रति के लगाव से संस्कृत पढ़नी शुरू की और संस्कृत में वे शास्त्री बन गए। यूँ, बापा के पास रह कर उनका सेवन किया। फिर 1966 में संस्था ने दूर किया। 1967 में अचानक काकाजी ने कहा– *यु गो टु दिल्ली।* यहाँ कुछ नहीं था, कुछ मालूम नहीं था कि आगे क्या होने वाला है, पर काकाजी का भरोसा करके गुरुजी 1967 में यहाँ आए। तब **'भारत साधु समाज' में रात को दो-दो बजे तक वे भजन करते।** यह देख कर 'अखिल भारत साधु समाज' के जनरल सेक्रेटरी स्वामी हरिनारायणनंदाजी को गुरुजी के प्रति सद्भाव हुआ, वो सब इतिहास हमें मालूम है। मैं कहना यह चाहता हूँ कि गुरु से संबंध डेवलप करके, आज्ञापालन और विश्वास करते हुए काकाजी को राज़ी करने की उनकी तमन्ना किस हद्द तक होगी कि काकाजी की जो विभावना थी कि उत्तरभारत – दिल्ली में गुणातीत समाज का एक अच्छा केन्द्र हो, तो यहाँ कुछ न होते हुए भी वे आए और उस भाव को फ्रुक्टीफाई किया। पहले थोड़े दिन के लिए आते थे, बाद में स्थायी रूप से रहने लगे और फिर 1986 में तो काकाजी धाम चले गए।

उसके बाद की जो जर्नी है – 1986 टु 2015 वो भी दो पार्ट में बांटी जा सकती है। 1986 टु 1993 - जब तक यह मन्दिर बना और 1993 से 2015 तक और जो आज हम देख रहे हैं। उस **जर्नी में ज़ीरो में से - शून्य में से सर्जन करने की बात है।** स्थावर में उन्होंने यह मंदिर, स्वामिनारायण मार्ग, काकाजी लेन और 3 फरवरी पार्क - जो कि पहले इतना गंदा था और जहाँ बदबू आती थी, उसे इतना बढ़िया पार्क बना दिया! सब भक्तों को भी वे ऐसा ही बना रहे हैं। आज सुबह हमारा हितेन खुश हो गया और बोला कि मैत्रीस्वामी नए हैं – छोटे हैं, पर इतनी अच्छी महापूजा करते हैं कि दिल खुश हो जाता है। मेरा एक फ्रेंड राजेशभाई बड़ौदा से आया था, वो बोला– *मैं एक घंटा महापूजा में बैठा, पर पता नहीं चला कि एक घंटा कब बीत गया!* संतों - सुहृद्स्वामिजी, आनंदी व अन्य बहनों को ऐसा तैयार किया है। ऋषभ ने बताया कि गौरी दीदी एक-एक घंटा उसके साथ खड़े रह कर ट्रेन की राह देखती थीं। ऐसी बहनों और ऐसे युवकों का यहाँ एक इतिहास है।

अभी किसी ने बताया कि **यूथ इज़ ए पावर।** 35 करोड़ पॉप्यूलेशन ऑफ इंडिया इज़ यूथ। इफ यू डोन्ट गिव धेम डायरेक्शन, वॉट विल हॅपन? हरिप्रसादस्वामिजी भी यूथ पर इसीलिए ज़ोर देते हैं। इट्स ए ह्यूज मूवमेन्ट और **गुरुजी बोले बिना यह सब करते हैं!** टी.वी., विडीयो, ऑडियो या फूल की सेवा में, बिना कहे जो यूथ आज काम करते हैं, वे सभी अच्छे घरों के बेटे हैं।

महेन्द्र नागपाल साहब ने बोला न आजकल पीपल आर गॅटिंग डिज़िटली डिसइन्टीग्रेटेड। क्या होता है कि – मुंबई में बड़ी-बड़ी कम्पनियों में, ड्यूरिंग वर्किंग अवर्स, फोन नहीं कर सकते। यू कॅन फोन ओनली इन लंच अवर्स। तो जैसे ही लंच के लिए बैठते हैं, एक-दूसरे से कोई किसी से कुछ बात करता नहीं है कि हॅलो हाउ आर यू? इमीडिएटली वो फोन में बिज़ी हो जाते हैं। योगीजी महाराज ने युवकों को सभा करने की आज्ञा की थी।

गुरुजी भी यहाँ युवकों को सभा में बुला कर एक-दूसरे से जोड़ते हैं। आत्मीयता से एक-दूसरे के बारे में पूछना-करना... फलस्वरूप यहाँ एक फॅमीली-बॉन्ड बना है।

दरअसल, **महाराज के समय से कुटुंबभावना चली आ रही है।** महाराज, दादा खाचर के घर में उनकी बहनों-भाइयों के साथ कुटुंब की तरह ही रहे। वैसे ही **काकाजी व सबने भी ताड़देव में कुटुंबभाव से रहना शुरू किया और वही कुटुंबभावना दिल्ली में गुरुजी ने लार्ज स्केल पर करके दिखाई है।** रीकी सरदारजी तो फोटोग्राफी के लिए आए थे, पर गुरुजी ने उन्हें ऐसा जोड़ दिया कि वे भी सत्संगी हो गए। उन्हें यहाँ ऐसा लगता है कि धिस इज़ माई अनधर हाउस, आई बिलाँग टु गुरुजी। तो, ऐसे संतों, युवकों, बहनों और गृहस्थों द्वारा गुरुजी ने सॉफ्टवेयर-जंगम मंदिर तैयार किया है। **गुरुजी की यह एक बड़ी लाइफ टाइम एचीवमेंट है!**

पू. दासस्वामिजी (हरिधाम)

...बहुत साल पहले गुरुजी ने योगीबापा से कहा था– *साधु बन कर मैंने गलती की है।* क्योंकि–उस समय गुरुजी दिल से मानते थे कि उनमें साधुता का कोई लक्षण है ही नहीं। पर, बापा ने स्पष्ट रूप से तुरंत ही कह दिया था– *मकंद, तुमने भले गलती की, लेकिन शास्त्रीजी महाराज कभी गलती नहीं कर सकते।*

योगीजी महाराज अपना नाम तो देते नहीं थे, सो शास्त्रीजी महाराज के नाम से उन्होंने कहा–और आज हम देख रहे हैं। गलती की तो हम क्या बात करें ? सिर्फ देख ही नहीं रहे हैं, अनुभव भी कर रहे हैं कि **गुरुजी न केवल खुद ही सच्चे परम एकांतिक साधु बन गए, बल्कि उनके सम्पर्क में आबाल-वृद्ध जो भी आता है, उन सभी को वे ब्रह्मरूप होने के राजमार्ग पर बहुत आसानी से हंसते-खेलते चला रहे हैं।**

उन्होंने क्या किया ? क्या साधना की ? उनका शरीर भी ऐसा नहीं कि सेवा, साधना या उपवास कर सकें। भीड़ाभक्ति (कसनी की भक्ति) के लिए उनका शरीर काबिल नहीं था और आज भी नहीं है। लेकिन, **उन्होंने योगीबापा के साथ एकदम निष्कपटभाव का संबंध दृढ़ कर लिया और वैसे ही काकाजी के साथ वे निरावरण वर्ते।** मन-बुद्धि, साधना, अंतर्दृष्टि–बाह्यदृष्टि, प्रकृति-स्वभाव, कोई वृत्ति-आसक्ति, ऐश्वर्य–प्रताप का कोई भी आवरण उन्होंने नहीं रखा। आज हम देखते हैं कि सब रिद्धि-सिद्धियां उनके चरणों में आती हैं, लेकिन गढडा प्रथम के 62वें वचनामृत की जो बात पृष्ठभूमि पर लिखी हुई है, ऐसा संबंध वे कर पाए, तो उसका परिणाम क्या हुआ!

मैं बहुत साल पहले की बात करता हूँ। 1978 और 1984 के बीच की बात है। मैं ताड़देव में संस्कृत का अभ्यास करता था। वहाँ टेलीफोन के कमरे से आगे, लॉबी के बगल में, एक बहुत छोटा रूम था। वहां संस्कृत का अभ्यास कराने वाले शास्त्रीजी आते थे। एक बार शास्त्रीजी के आने में देर थी। मुकुंदजीवनस्वामी और मैं वहाँ बैठे थे कि काकाजी एकदम हॉल में से आकर शास्त्रीजी के आसन पर बैठ गए और कहने लगे– *आज मैं आप*

*लोगों को '**ब्रह्मविद्या**' का एक पाठ पढ़ाता हूँ।* यह उनकी बहुत कृपा - करुणा थी... अपने बारे में बात करते हुए वे एकदम पूछने लगे – *आप जानते हो, काकाजी – यानि क्या ?*

काकाजी यानि – सुहृद्‌भाव !

काकाजी यानि – स्वरूपनिष्ठा !

काकाजी यानि – मैत्रीभाव !

काकाजी यानि – निर्दोषबुद्धि !

काकाजी यानि – स्नेहलभाव !

मालूम है आपको ? जो भी ताड़देव के 84 स्टॅप्स चढ़ कर आता है, वो काकाजी के लिए माथे का मुकुट !

इतना कहकर काकाजी तो वापिस हॉल में चले गए। उन्होंने ब्रह्मविद्या का यह पाठ हमें सिखाया।

काकाजी के कहे मुताबिक वह पाठ मैंने कितना सिद्ध किया वो तो काकाजी - स्वामिजी जानें, लेकिन इस स्टेटमेंट के आधार पर मैं अकेला ही नहीं, बल्कि प्रेमस्वामी से लेकर सब जो पुराने संत हैं या भरतभाई, वशीभाई – ताड़देव के योगेश्वर मुक्त और दिनकरभाई जैसे वरिष्ठ भी दावे से - हृदय की एक आवाज़ से कहेंगे कि **काकाजी जो कहना चाहते थे, वो गुरुजी ने सिद्ध कर लिया।** तभी तो 12-13 साल की छोटी बच्ची जो गुरुजी से कभी प्रत्यक्ष मिलती नहीं है, मिली भी नहीं है, न मिलने वाली है, उसने रात को 2 घंटे बैठ कर मन में - दिल में कैसी प्रार्थना की ! मैं तो मानता हूँ कि हमारे लिए **रविन्द्रनाथ टॅगोर की 'गीतांजली' से भी ज़्यादा उसका महत्व है।** उस बच्ची ने रात को 12.30 से 2:30 तक जो भी प्रार्थना लिखी है वो सब ठीक है, लेकिन पूर्व की कोई बड़ी भाग्यशाली आत्मा होगी कि ऐसा लगाव, ऐसी महिमा उसके मन में आ गई और उसने अपनी प्रार्थना एक कार्ड में लिख दी। यह कोई साधारण बात नहीं है। वाकई, **गुरुजी का जीवन बिल्कुल पारदर्शी, जैसे अंदर - वैसे बाहर।**

...जैसे श्रीकृष्ण भगवान ने धर्म की स्थापना के लिए अर्जुन को पसंद किया था, इसी तरह **गुरुजी को काकाजी महाराज ने पसंद किया। हरिप्रसादस्वामिजी महाराज** कहते हैं कि **संपूर्ण गीता का सार क्या है ? सरलता !** सरल बनो। हमेशा सरल रहना बहुत कठिन बात है। 'सरल' शब्द सुनने - कहने में तो बहुत सरल है, लेकिन जीवन में उतारना बहुत कठिन बात है, पर **गुरुजी ने यह किया।** 1966 से 365 × 24 ऐसा संबंध बनाया। वो भी साधना को कठिन महसूस करते हुए ऐसा संबंध कर लिया। **काकाजी और पप्पाजी का उत्सव उन्होंने रोज़ मनाया और आज भी मनाते हैं।** यह ख़ाली प्रशंसा की बात नहीं है, **सबकी अनुभूति की बात यहाँ हो रही है।**

इसी भावना से, मैं प्रार्थना के रूप में गुरुजी, अक्षरविहारीस्वामिजी से विनती कर रहा हूँ और यह विनती स्वामिजी महाराज मुंबई में सुन ही रहे हैं, अक्षरधाम में बैठे योगीबापा, काकाजी और पप्पाजी भी सुन रहे हैं। श्रद्धा और निष्ठा वाले हम सब यहाँ बैठे हैं। तो, एक ही प्रार्थना है कि हम जहां भी हैं – चाहे विद्यानगर, सांकरदा, हरिधाम, दिल्ली, शिकागो – कहीं भी हैं, जिस स्वरूप के पास हैं उन सभी को – **पप्पाजी** द्वारा

संजीवनी मंत्र में कहे अनुसार– **हमें अपनी सेवा के लिए ऐसे गुणातीत स्वरूपों ने पसंद किया है, फिर हम शोक क्यों करें?** व्हाय शुड बी वी सॅड? वी शुड नॉट बी सॅड, वी शुड बी हॅपी और **यह ही गुरुजी ने किया।** योगीबापा ने उन्हें एक सूत्र दे दिया–*मकंद, मगन रहना!* यानि मस्त, आनंद में रहना, प्राप्ति के आनंद में रहना, दूसरा कुछ सोचना नहीं और... ये गुरुजी ने दिल से मान लिया। इसीलिए जब गुरुजी अभी थोड़े ही दिन पहले जब (युवा) महोत्सव में हरिधाम पधारे थे, तो उन्होंने एक ही बात बताई कि मेरे लिए तो एक साधना है – **'मैं स्वामी का और स्वामी मेरे'**। बस, यह पक्का करते रहना। लेकिन, सभी संजोगों में - विपरीत माहौल में भी – ऐसा मानना और जीना इतनी सरल बात नहीं है। उसमें बहुत संघर्ष करना पड़ता है। लेकिन, परिस्थितियाँ, प्रतिकूलता, शारीरिक प्रतिकूलता, वातावरण, माहौल, एकांत, विरोध कुछ भी देखे बिना, गुरुजी केवल योगीबापा, काकाजी और गुणातीत स्वरूपों को प्रसन्न करने के ध्येय से, उनकी ओर देखते रहे और वो ध्येय सिद्ध कर लिया।

...तो, आज के दिन कुछ ज़्यादा बात नहीं करनी है। यहां आने की बात मैंने जब गुरुजी को बताई, तो उन्होंने कहा कि आप भक्तों को ऐसी कोई कूंची बताना, ताकि हम सब के ताले खुल जाएँ। मैं तो प्रार्थना करने के लिए आया हूँ कि **आपके ताले तो क्या खोलें, क्योंकि आप तो दूसरों के ताले खोल रहे हैं।** हम आपको क्या कूंची बताएँ? आप हमें ऐसी कोई कूंची बताना कि हम भी श्रद्धा और विश्वास से आपकी तरह 'मगन' रह कर निष्ठा को दृढ़ करते रहें। **संप, सुहृद्भाव, एकता** व **सर्वदेशीयता** बोलने में नहीं, जीने में हो। प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने कितनी अच्छी बात बताई और सब बहुत प्रसन्न हो गए कि आज मैं मेरा अपना जन्मदिन ही मान रहा हूँ–यह अनुभूति हम सब सेवकों में आ जाए। योगीबापा, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी व सबकी अनुवृत्ति, अभिप्राय – **'संप, सुहृद्भाव और एकता'** है, तो **वह बोलने में नहीं – यथार्थ आप की तरह 365 × 24 घंटे मानते रहें, मानने में आएँ और इस तरह से जिएँ।**

दूसरी प्रार्थना है कि गुरुजी का 78वाँ प्राकट्य है, लेकिन जैसे प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी का स्वास्थ्य और प्रफुल्लित मुखारविंद देख कर आज हमें बहुत खुशी हुई, उसी तरह वे भी बहुत-बहुत सालों तक स्वस्थ व निरामय रहे –यह भी एक प्रार्थना।

प.पू. शांतिदादा (ब्रह्मज्योति)

...आज हम संतों, भक्तों, बहनें सब 'कल्पवृक्ष' की छाया में बैठे हैं। पू. वशीभाई, पू. दासस्वामी ने हमें जिसके माहात्म्य की बातें करी, उनका आज जन्मदिन है। **किसी के जन्मदिन पर स्वाभाविक रूप से उसके गुणगान होते हैं। लेकिन, आज बिल्कुल सच्चा गुणगान किया गया है।**

एक साधक साधना शुरू करता है और कहता है कि मुझसे भूल हो गई कि मैंने साधु की दीक्षा ले ली। यह जो बात की, वह बहुत सोचने जैसी है। साधु बनने के

बाद, उसी समय उन्हें मालूम था कि साधुता प्राप्त करनी कितनी कठिन है। **साधुता यानि – गुणातीत स्थिति!** वो उन्हें मालूम था। आप जैसे समझदार जब साधक या संत बनता है, तो वह सोचता है कि जिस हेतु से मैंने दीक्षा ली है, वह पार उतरने में कितनी कठिनाई है। यह पार कर सकूंगा या नहीं? **योगीबापा** ने कहा – ***क्या शास्त्रीजी महाराज गल्ती कर सकते हैं?*** **यह भी एक आशीर्वाद रूप वाणी थी।**

कॉलेज में पढ़ते दिलीप को बा व काकाजी से लगाव हो जाए और योगीबापा से दीक्षा ले। यह लगाव कितना गहरा-हृदय से है, वो योगीबापा तो जानते थे। **काकाजी के सिवा वो एक पल भी नहीं रह सकता।** बापा तो अंर्तयामी-सर्वज्ञ थे, यह जानते थे। शास्त्रीजी महाराज, योगीबापा, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी जैसे दिव्य पुरुष जानते हैं कि जो चैतन्य उनके पास आता है, उसका पिछला जन्म क्या था? कहाँ तक साधना की है? अब क्या होगा? कहां पहुँचेगा? वह सब जानते हैं, इसलिये कहा– *शास्त्रीजी महाराज कभी भूल नहीं करते!* साधक के लिए यह एक बहुत ऊंची स्थिति के आशीर्वाद थे। **योगीबापा को विश्वास था कि दिलीप - ये मुकुंद जिससे जुड़ा हुआ है, उन काकाजी में उसे साधुता देने का पूरा सामर्थ्य है।** योगीबापा तो दिव्य पुरुष थे ही, हम सबका अनुभव है।

काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, साहेबजी और अक्षरविहारीस्वामिजी इन सबके आश्रय में हम सब रहें, अंतर से एक बात का स्वीकार हुआ। इन दिव्य पुरुषों की महिमा जब हमारे अंतर में स्थिर हुई, तो धीरे-धीरे यह बात तो समझ में आ गई कि चाहे हम में कितनी भी कमियां हैं, लेकिन ये दिव्यपुरुष जो हमें मिले हैं, वे गुणातीत अवस्था के पुरुष हैं और हमारे सब दोष निकाल कर, हमें दिव्यता की ओर ले जाने का उनमें पूरा सामर्थ्य है। उनकी आज्ञा में रहेंगे; प्रसन्न करने का भाव रखेंगे, तो प्राप्ति जरूर होगी ही, ऐसी प्रतीति हम सबको धीरे-धीरे उन्होंने करवाई। ऐसे दिव्य पुरुष की महिमा जब अंतर में बढ़ती जाती है, तो साथ ही हमारे हठ, मान, ईर्ष्या, राग-द्वेषादिक सब दोष निकलते हैं, वह मालूम भी पड़ता है। सुहृद्‌भाव-एकता रखने में जो बाधारूप बनता है, वो अपने आप छूटता जाएगा। इन दिव्य पुरुषों की महिमा हमारे दिल में स्थिर व पक्की होने पर जरूर छूट जाता है। हम सब जो यहां बैठे हैं, उन सबका ऐसे गुणातीत पुरुषों के साथ संबंध है।

यहां के समाज के माहात्म्य की बातें आज सुनते हैं और गुरुजी के भजन में भी सुना। उन्होंने क्या काम किया है? **यहां के जो सब सेवक सेवा करते हैं, उन सबका अनुसंधान एक ही है कि गुरुजी को प्रसन्न करना है।** बहनें सब सेवा करती हैं, उनका भाव भी यही है कि गुरुजी को प्रसन्न करना है...

इस भाव से ही गुरुजी ने उन्हें स्वीकारा है कि उन्हें क्या करना है-कहां पहुँचना है। यह बात केवल उपदेश से नहीं, बल्कि प्रार्थना के बल से समझाई है। ऐसे दिव्य 'कल्पवृक्ष' के तले हम सब बैठे हैं। **'कल्पवृक्ष'** क्या है? जो कल्पना-इच्छा करो, वह प्राप्त हो जाता है, यह हम सब जानते हैं। तो, आज जो इच्छा, प्रार्थना अभिप्सा करेंगे, वह जरूर मिल जाएगा ऐसी श्रद्धा भी रखनी है...

'कल्पवृक्ष' की महिमा हमने सुनी है, तो इनके पास क्या मांगेंगे? ये तन की-धन की बीमारी टाल सकते हैं – यह तो बिल्कुल ठीक बात है कि कर सकते हैं। जैसे बाहर के बहुत **'सिद्धपुरुष'** कर सकते हैं, वैसे **'संत'**

भी कर सकते हैं। पर, **आत्मा की बीमारी - हमारे दोष टालने का सामर्थ्य इनके (ऐसे संत के) पास है।**

* हमें सुहृद्भाव रखना है, लेकिन संत उसमें बाधा डालने वाले मन को टाल कर दिव्य बना सकते हैं !
* हम प्रार्थना करते हैं, तो संशय रहता है कि भगवान सुनेंगे या नहीं, वो संशय भी वे दूर करते हैं !
* अध्यात्म की - दिव्यता की कोई भी बात मांगेंगे,
  तो वह देने का सामर्थ्य महाराज, स्वामी, योगीबापा, काकाजी और पप्पाजी ने उन्हें दिया है !
* अपने सामर्थ्य से वे हमारे रोग निकाल सकते हैं !
* हृदय की सब भावना वो पूरी कर सकते हैं !

जैसे कि दासस्वामी ने श्लोक बताया –

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रय विलक्षणं। विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा।

यह हमारी अंतिम और सर्वश्रेष्ठ मांग है। हर एक भक्त की यही मांग होनी चाहिए। क्या मांगना चाहिए, वह भी भगवान स्वामिनारायण ने शिक्षापत्री में बताया है। तो, आज गुरुजी के चरणों में यही मांगना है। गुरुजी, आप यह समझते हो कि मुझ में मेरा कुछ सामर्थ्य नहीं है, जो कुछ है वो तो महाराज का- गुणातीतानंदस्वामिजी का दिया हुआ है। काकाजी-पप्पाजी, स्वामिजी, साहेबजी ऐसे दिव्य पुरुषों की कृपा से प्राप्त किया हुआ है। योगीबापा द्वारा दिया गया सामर्थ्य है। यह आपका **दासत्व** है, पर हमें समझना है कि आप में पूरा सामर्थ्य है। जितना अहं का भाव है, 'स्व' का भाव है, उतना सामर्थ्य में कमी रह जाती है। लेकिन, **गुरुजी के वर्तन से हम हमेशा देखते रहते हैं कि सबके पास दास बन कर, सेवक बन कर, सुहृद् बन कर वे पल-पल जीते हैं। सो, उनमें पूर्ण सामर्थ्य है** – ऐसी श्रद्धा से आज हम मांगते हैं कि गुरुजी हमें सचमुच प्राप्ति करनी है।

...साहेबजी से हमारे मनोजभाई ने एक सवाल पूछा था –

साहेबजी, आप इस ब्रह्मांड में क्या करने के लिए आए हैं? क्या ध्येय लेकर आए हैं? आप यहां क्या करेंगे?

तो, साहेबजी ने एक ही बात बताई – *शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज ने जो उपासना का कार्य यहां सबके हृदय में दृढ़ कराने का संकल्प किया है, वह हमेशा बहता (गतिमान) रहे, किसी के पास किसी प्रकार की - कोई अपेक्षा न रहे और यह कार्य हमेशा चलता रहे, वही हमारा कार्य है, वही हम करते हैं - करते रहेंगे और वही करना है।*

तो, आज गुरुजी से यह प्रार्थना करते हैं कि सबसे बड़ा काम तो यह है कि हमें आप जैसे दिव्य पुरुषों का संबंध हुआ, तो यह निष्ठा हुई।

हम क्या थे और आज हमारे हृदय में कैसी प्रशांति है ! आप जैसे दिव्य पुरुषों के संबंध से यह अनुभव हुआ। आपके साथ जब पहली मुलाकात हुई, तब से आज तक आपके प्रति की दिव्य भावना दिन - प्रतिदिन बढ़ती रही है... यहां का समाज निष्ठा, भावना, दासत्वभाव से सेवा करता है, सुहृद्भाव रखता है। **जिन गुणों की अपेक्षा गुणातीतानंदस्वामिजी, योगीबापा, काकाजी-पप्पाजी रखते थे, वे गुण यहां सब मुक्तों - संतों में देख रहे हैं - दर्शन हो रहा है...**

प.पू. शांतिदादा अपनी निजी डायरी में हर रोज़ अपने अंतर का एहसास लिखते हैं।
उत्सव निमित्त वे दिल्ली मंदिर में ही ठहरे थे और... उन्होंने जो हृदय भावना - प्रार्थना लिखी थी, वह यहां प्रस्तुत है...

स्वामिश्रीजी

गुरुजी... मुकुंदजीवनस्वामिजी
एक साधु... जाग्रत साधु
सैद्धांतिक जीवन जीने वाले
उपासना को आत्मसात् करने वाले
स्व रहित... केवल शून्यभाव
दासत्व रोम-रोम में दिखे
सुहृद्‌भाव की आदर्श मूर्ति
महिमा का बहता झरना
काकाजी का संपूर्ण सेवन किया
पप्पाजी-स्वामिजी में प्रगटभाव
साहेबजी, अक्षरविहारीस्वामिजी में भी दिव्यभाव
ऐसा ही सभी संबंधियों का माहात्म्य
सबके आगे झुकते जैसे स्वरूपों के समक्ष...
बाह्यदृष्टि से देखने वाला गलतफ़हमी कर बैठे
अंतेवासी जाने...समझे
उन्हें जो समर्पित हुए
उन्होंने जिन्हें स्वीकारा
उनकी आत्मा का जतन करते हैं
गुणातीतज्ञान समझा कर, उससे भरपूर करते हैं
गुणातीतभाव में जीते करते हैं।
हे गुरुजी!
जिस प्रकार से आप हमेशा जीते हैं,
ऐसा प्राप्त कर लेने की झंखना है
साधुता से शोभित होना है...
दासत्व का बड़प्पन धारना है
जाग्रत बन कर प्रभु के बल से हर पल जीना है
बल देना... कृपा जो करी है,
उसे समझने की शक्ति भी देना।

'ताड़देव' – अशोकविहार मंदिर, दिल्ली।
प.पू. गुरुजी का प्रागट्य दिन 13.3.2015

यहाँ अक्षरधाम है
सर्वत्र सहजानंद है
भक्त ब्रह्मभाव से भीगे हुए हैं
सभी को सेवा करने की उमंग है
हृदय माहात्म्य से गीले-गीले हैं
श्रीजी के सिद्धांत से जीवन है
एकता का दर्शन होता है
सुहृद्‌भाव का वर्तन है
परस्पर महिमा समझते हैं
सेवा केवल प्रभु की प्रसन्नता पाने के लिए है
निष्ठा के पक्के बंधन हैं
गुरु के साथ प्रेमबंधन अटूट है
गुरु को राज़ी कर लेने का निशान है
कथावार्ता में रुचि है
भजन-प्रार्थना का बल लेते हैं
सभी में भजनीकभाव दिखता है
सभी दासभाव से वर्तते हैं
झुकना-सहना सहज है
गुरुआज्ञा से समर्पण है
गुरु संबंध से सभी को वंदन है
सर्वदेशीयता का व्यवहार है
यहाँ अक्षरधाम है
सर्वत्र सहजानंद है
क्योंकि... यहाँ गुरुजी जैसे संत विराजमान हैं
जो साधुता की असल मूरत है
उन्होंने योगीबापा-काकाजी को प्रगट रखे हैं
खुद दासभाव से सहज जीते हैं
ऐसे गुणातीत संत को अनंत वंदन हों

14.3.2015 अनिर्देश,
स्वामिनारायण मंदिर दिल्ली

प.पू. गुरुजी – मुकुंदजीवनस्वामिजी के 78वें प्रागट्य पर्व पर दो दिन दिल्ली मंदिर में लाभ लिया... तब का चिंतन

श्री राजेश गुप्ताजी (विधायक – दिल्ली सरकार)

...मैं एक बात जरूर बताना चाहूँगा कि मैं जब अपना कॅन्डीडेचर भरने जा रहा था, उसी दिन इनके (गुरुजी) पास आया। **आपने बहुत सारे गुरु देखे होंगे, लेकिन मैंने जब उन्हें देखा तो** उनकी मुस्कान देख कर, सिर्फ इतना आशीर्वाद मांगा कि मैं आराम से और ईमानदारी से अपनी जिंदगी को जीता रहूँ और... **अपनी मुस्कान के साथ ही उन्होंने मुझे एक कॉन्फीडॅन्स दिया।** उससे **मुझे लगा कि जो मैं उनसे चाहता हूँ, वो शायद आँखों से और मुस्कुराहट के साथ दे दिया है।** उन पर मेरा विश्वास एक बात से और हुआ कि साथ में जो पार्क बना हुआ है, जो कभी एक डम्पिंग ग्राउंड था। आप में से कइयों ने देखा होगा और उसकी पिक्चर्स भी देखीं होंगी। जिस तरीके से उन्होंने इस पार्क को-जिसमें हम बैठे हैं-एक डम्पिंग ग्राउंड, कूड़ेदान से एक सुंदर पार्क में तबदील कर दिया! मेरा विश्वास है कि यदि हम उनके सान्निध्य में रहें, तो उसी तरीके से हमारे मन के अंदर जो गंदगी है, दिल के अदंर जो डम्पिंग ग्राउंड्स हैं, उन्हें सिर्फ मुस्कान मात्र से ही हमारे दिल और आत्मा को सुंदर बगीचे में बदल सकते हैं।

हाँलाकि, वे जीवन और मृत्यु से काफी ऊपर हैं, फिर भी जन्मदिन की उन्हें बहुत शुभकामनाएँ। मैं चाहूँगा कि हमेशा उनके सान्निध्य में ज़्यादा से ज़्यादा आ पाऊँ और ये आशीर्वाद ले पाऊँ। जय स्वामिनारायण!

प.पू. भरतभाई (पवई)

...गुरुजी का प्राकट्य दिन मनाते हुए उन्हें हैप्पी बर्थडे तो विश करना ही है, लेकिन साथ-साथ ऐसी भी कुछ भावना है कि जैसे काकाजी हमेशा कहते थे कि आप यहां आए हैं, तो कुछ लेकर जाना और **गुरुजी** भी ऐसे हैं कि **हमेशा रिटर्न गिफ्ट देते हैं।** लेकिन, **वो गिफ्ट थोड़े समय के लिए नहीं, बल्कि हमारे जीवन में हमेशा रहे, ऐसी देना चाहते हैं।**

1967 - 68 में जब गुरुजी पहली बार आए, तब काकाजी ने कहा था कि यह शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज का संकल्प है कि दिल्ली में एक समाज की स्थापना करनी है - एक मंदिर बनाना है। शास्त्रीजी महाराज ने अक्षरपुरुषोत्तम की मूर्ति देते हुए नंदाजी से कहा था – *आप दिल्ली जा रहे हैं, तो वहां अक्षरपुरुषोत्तम को विराजमान करना।* इसी बात को पकड़ कर काकाजी ने गुरुजी को दिल्ली में भेजा। तब यहां बहुत मुश्किलें थीं – कोई अपना स्थान नहीं था, ऐसे कोई भक्त भी नहीं थे। केवल दो भक्त थे, फिर भी गुरुजी व सब संत आए। **यहां रुक कर उन्होंने जो कार्य किया, उसके लिए काकाजी को धन्यवाद है कि गुरुजी को इसके लिए पसंद किया।** गुरुजी को भी धन्यवाद है कि इतने लंबे समय तक सातत्य से वे रहे।

काकाजी हमेशा कहते थे – *गुरुजी बहुत ही विचक्षण हैं।* एक बार काकाजी सभा में बोले थे कि गुरुजी इतने बुद्धिशाली - विचक्षण हैं कि एक बार वे गुरुजी से मिलने बड़ौदा गए थे; जैसे ही उन्होंने गुरुजी से कुछ कहने की

शुरुआत की कि तुरंत गुरुजी कहने लगे कि ताड़देव की चौथी सीढ़ी पर आपने मुझे यह कहने का सोचा था कि मैं सबसे मिलजुल कर रहूँ और इस तरह से काम करुं। पर, उन्होंने काकाजी से कह दिया– *यह मुझसे हरगिज़ नहीं होगा।* काकाजी हम सब भाइयों - साधकों को बताते थे कि गुरुजी ने उन पर पूरा भरोसा रख कर दिल्ली में इतना परिश्रम किया, तो उनका पूरा कलेवर - जीवनशैली बदल गई। उनके स्वभाव - प्रकृति वगैरह सब बदल गए। स्वामिजी बहुत बार कहते हैं कि गुरुजी दूसरे के दुःख से दुःखी हों और दूसरे के सुहृद् बनें, वो बहुत ही कठिन काम है और काकाजी ने यह कार्य किया। काकाजी कहते थे कि अगर उनमें चेइन्ज आ सकता है, तो आप सब तो अच्छे स्वभाव वाले हो, आपका तो होगा ही। सच, गुरुजी को बहुत-बहुत धन्यवाद है कि उन्होंने इस तरह से जीवन जिया है।

एक वाक्य पढ़ा था कि सक्सेस इज़ नॉट एस्केलेटर, इट्स ए स्टेप। हर एक सीढ़ी के स्टेप चढ़ने पड़ते हैं और उसके लिए गुरुजी ने जो परिश्रम किया है, वह हमने अपनी आँखों से देखा है। 1975 से हम देखते आए हैं कि यहाँ रिक्शा या ऑटो में घूमते, कोई भी साधन नहीं... ऐसी परिस्थिति में यहाँ रह कर काम किया और ऐसा समाज तैयार किया।

गुरुजी की एक और विशिष्टता है कि **हमने गुरुजी को जब से देखा है, तब से गुरुजी की एक ही रहणी है।** एक ही रहणी से रहना बहुत मुश्किल है और गुरुजी ऐसे साधु हैं कि जो एक ही रहणी से रहे। **आप चाहे कितने भी बदल जाओ, मगर गुरुजी का आपके प्रति का भाव कभी चेइन्ज हुआ नहीं देखोगे।** मैं पहली बार गुरुजी से जब मिला, तो पहली बार जो मेरे प्रति भाव था वही आज भी है। ऐसा सभी के प्रति है। तो, गुरुजी को इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

गुरुजी की एक और विशिष्ट बात –**गुरुजी एक ऐसे साधु हैं कि** ऐसा गुरु मिलना बहुत मुश्किल है और अगर ऐसे गुरु मिल गए, **तो उनसे जुड़ने पर साधना में कोई कमी रह ही नहीं सकती।** यह मेरा हन्ड्रेड परसेंट दावा है कि गुरुजी ऐसे संत हैं। मैंने एक छोटी स्टोरी पढ़ी थी। एक आर्टिस्ट ने एक गुरु से पिक्चर बनाना - ड्रॉइंग करना सीखा। ड्रॉइंग कैसे करनी ? क्या बनाना ? ऐसा सब सीख लिया और टीचर भी बहुत खुश हुआ कि तुमने मुझसे सब कुछ सीख लिया है। नाव यु कॅन गो अहॅड, तुम तुम्हारी प्रेक्टीस या जो भी करना हो वह कर सकते हो, ऐसा सर्टिफिकेट भी दे दिया। उसने पहला पिक्चर बनाया और एक स्ट्रीट पर वो पेन्टिंग रख कर नीचे लिखा – *जिसे भी उसमें कुछ कमी नज़र आए, तो वहां क्रॉस कर देना।* सुबह से शाम होने के बाद जब वह वहाँ आया, देखा कि पूरी पिक्चर में क्रॉस लगे थे। अपने गुरु के पास जाकर वह बोला –*आपने कहा था कि बहुत अच्छे पेईंटर हो। मैंने पेइन्टिंग बना कर स्ट्रीट पर रखवाई और नीचे लिखा कि इसमें किसी को कोई कमी नज़र आए, तो वहाँ क्रोस मार कर बताना। 12 घंटे में तो पूरी पेइन्टिंग पर क्रॉस ही क्रॉस लग गए। आपने मुझे ऐसा सिखाया ? मुझमें क्या कमी है ?*

गुरुदेव उस जगह पर आए और सब देख कर बोले – *कोई बात नहीं। तुम बहुत अच्छे पेईंटर हो ही, तुम में कोई कमी नहीं है। तुम फिर ऐसी पेइंटिंग बनाओ और दोबारा यहाँ रख कर नीचे लिखना कि इसमें किसी को कुछ भी कमी नज़र आए, तो मैंने जो पेइन्ट और ब्रश रखा है, उससे वह ठीक कर दे।*

वह पिक्चर एक हफ्ता वहां रखी रही, पर उसे ठीक करने के लिए किसी ने ब्रश नहीं उठाया। इस दृष्टांत से मैं यह कहना चाहता हूँ कि **गुरुजी हमें हमारी मिस्टेक दिखाते हैं, लेकिन साथ-साथ वो मिस्टेक को कैसे सुधारना – उसके पीछे भी लगे रहते हैं।** यूँ हमें ठीक बनाने के लिए उनका परिश्रम हमेशा रहता ही है। हमारे मैत्रीस्वामी, अक्षरस्वामी और ऐसे कई संत लोग हैं... सुहृद्स्वामी रसोई में कितने एक्सपर्ट हो गए, उन्हें कितना भाव है ! ऐसे ही बहनों में दीदी, स्वातिबहन वगैरह सब और अन्य भक्त लोग। गुरुजी सबको मिस्टेक बताते जरूर हैं, लेकिन वो मिस्टेक कैसे ठीक करनी, इसे भी वो बताते हैं। मिस्टेक बता कर वे बैठ नहीं जाते। **मिस्टेक बता कर बैठने वाले बहुत हैं कि आपमें यह कमी है, लेकिन मिस्टेक को सुधारने की कला गुरुजी के पास है।**

सो, हम सब बहुत भाग्यशाली हैं कि हम ऐसे गुरु की शरण में हैं। तो गुरुजी, आज आपके चरणों में प्रार्थना करनी है कि हम आपकी शरण में हैं और हमें यह पूरा विश्वास है कि आप हमें कुछ भी बताएँगे, तो आप ऐसे ही पीछे पड़े रहना, जब तक हम ठीक न कर पाएं। हम हमारी गलती सुधार न लें या तो हम सुधरें नहीं...

चि. नक्षत्र

आप सभी को गुरुजी के बर्थडे के जय स्वामिनारायण! **गुरुजी हमेशा मुझे गाइड करते रहते हैं।** जैसे – एक बार मैं 'माय सॅल्फ' एसे लिख रहा था। मैंने वह गुरुजी को चॅक करने के लिए दिया, तो उन्होंने एक मिस्टेक बताई। मैंने लिखा था – *माय स्कूल्स नेइम इज़ 'कुलाची हंसराज मॉडल स्कूल'।* वह पढ़ कर गुरुजी ने कहा – *यह ठीक तो है, पर यह **'बाबु इंगलिश'** है। ऐसा लिखना चाहिए – धी नेइम ऑफ माय स्कूल इज़ 'कुलाची हंसराज मॉडल स्कूल'।*

गुरुजी ने मुझे समझाया – *लिविंग थिंग के साथ हमेशा 'अपोसट्रफि एस' आता है और नॉन लिविंग थिंग के साथ 'ऑफ' आता है।* गुरुजी ने फिर अपनी टेबल पर टक-टक करके बताया – *यह टेबल नॉन लिविंग थिंग है, इसके साथ हमेशा ऑफ आएगा।* फिर मेरा चश्मा निकाल कर बताया – *'धी ग्लासिस ऑफ स्पेक्टेकल्स'* – इसमें ऑफ आया।

गुरुजी हमेशा मुझे आशीर्वाद लिख कर देते हैं – *बड़े होकर तू दादा और पापा की तरह सबकी सेवा करना और **अच्छा पढ़ना**।* तो, आपके चरणों में यही प्रार्थना है कि मैं हमेशा ऐसा करूँ, आप ही करवा देना...

प.पू. दिनकरभाई (शिकागो)

...जब पहले दिन आया तब गुरुजी ने मुझे बताया कि आप नई मार्गदर्शिका थोड़ी सुन लेना, ताकि जब उसका अनावरण करो, तो उसके बारे में कुछ कहना हो, तो कह सको...

गुरुजी ने एक प्रसंग बताया है कि स्वरूप को पहचानने की कसर के कारण हम बार-बार जन्म लेते हैं और पप्पाजी से यह प्रार्थना की थी कि स्वरूप को पहचानने की कसर टालने का उपाय हमें बताना, ताकि हमें बार-बार जन्म नहीं लेना पड़े। **आज काकाजी और गुरुजी का संबंध ऐसा दिखता है कि उसमें ऐसी कोई कसर गुरुजी ने रखी नहीं है।** यह

बहुत बड़ी बात है और योगीजी महाराज ने गुरुजी के बारे में बताया था कि पूर्व जन्म में वे आनंदानंदस्वामी थे। अभी दो-तीन हफ्ते पहले अक्षरविहारीस्वामिजी की जन्म जयंती के दिन हम उनके साथ बैठे थे, तो उन्होंने एक बहुत अच्छा सुझाव दिया था कि पप्पाजी ने कहा था कि अक्षरविहारीस्वामिजी पूर्व के स्वरूपानंदस्वामी हैं, यह बात 200 साल पहले की थी। अब वे 'गुणातीत' के बनाए हुए 'गुणातीत समाज' के हैं और अब उन्हें स्वरूपानंदस्वामी कहना वो एक डीग्रेडेशन है। इसी प्रकार, **गुरुजी जैसे संत में स्वरूपों को समझने की कसर है–ऐसा हम न समझें। उन्हें गुणातीत भावना वाले गुणातीत सत्पुरुष मानें** और... **गुरुजी, अक्षरविहारीस्वामिजी–ये सब संत, ऐसे गुणातीत सत्पुरुष हैं।**

एक और बात, कल गुरुजी - भरतभाई ने हमारे कांतिभाई देसाई का काकाजी के बारे जो एक ओपीनियन था–वो बताया कि एक तौलिया नीचे पड़ा हो और हम काकाजी के पास जा रहे हों और वो तौलिया को यदि उठाएँगे, तो भी काकाजी से डांट खाएँगे कि क्यों उठाया और नहीं उठाएँगे तो कहेंगे कि क्यों उठाया नहीं? यूँ, डांट तो दोनों तरह से मिलने वाली है। लेकिन, यहाँ एक दूसरी दृष्टि भी है। हम ऐसा विचार लेकर जाते हैं, इसलिए गुणातीत सत्पुरुष हमसे उसी तरह से वर्ताव करते हैं। **गुणातीत पुरुष वर्तन से परे हैं, लेकिन जैसे हमारे अंतर में चल रहा होता है, वही भाव वे हम पर रिफ्लेक्ट करते हैं।** काकाजी के साथ के मेरे सारे जो अनुभव हुए हैं, उसमें **मैंने कभी भी नहीं देखा है कि उनसे मुझे ऐसी कुछ डांट मिली हो। भरतभाई को भी कोई डांट नहीं मिली है।** तो, यह भी एक समझदारी है कि गुरुजी का हमारे साथ का ऐसा संबंध हो कि गुरुजी कभी भी ऐसे डांटें नहीं और यदि डांटें भी तो हमें ऐसा लगे नहीं कि डांटा है। गुरुजी के साथ हमारा भी संबंध ऐसा है कि जब भी गुरुजी को हम देखते हैं या गुरुजी हमें देखते हैं, तो आनंद के फुव्वारे उड़ते हैं। फिर वे कुछ भी कहें, वो हमें मीठा ही लगेगा।

आज गुरुजी का 78वाँ प्राकट्य दिन है। नंबर भी अच्छा है, काकाजी की षष्ठीपूर्ति 1978 में थी। तो, 78 नंबर आज फिर आया है और जैसे हमारे **वशीभाई** ने अभी बताया कि **गुरुजी एवर यंग हैं-एवरग्रीन हैं। हमेशा नए-नए आइडियाज़ इम्प्लीमेंट करते हैं।** दीपक चोपड़ा की एक बुक थी – *एइजलॅस बॉडी एण्ड टाइमलॅस माइंड।* उसमें दीपक चोपड़ा ने एइज के बारे में बताया है कि हमारी उम्र की गिनती हम चार प्रकार से करते हैं।

पहला है–क्रॉनोलॉजीकली, जब हम पैदा हुए थे तब से लेकर आज तक जो हमारी उम्र है। ज़्यादातर लोगों की उम्र उसमें आगे-पीछे होते हैं, क्योंकि जब पैदा हुए थे और जो रजिस्टर में लिखा जाता है, उसमें फर्क होता है। जैसे अक्षरविहारीस्वामिजी ने बताया था कि पप्पाजी की उम्र 100 साल की 2015 में होने वाली है, लेकिन स्कूल में 2016 होगी।

दूसरी उम्र है कि हम कैसे दिखते हैं? कोई व्यक्ति देख कर हमें बोले कि आप 50 साल के हो, लेकिन 25 के दिखते हो या 60 के दिखते हो। यूँ किसी को देखने से कई लोग अंदाज़ा लगा लेते हैं कि आप कितनी उम्र के होंगे?

तीसरा है कि आप अपने आपको कितनी उम्र का मानते हैं? आप 50 साल के होंगे और कहेंगे कि अब थक गए हैं, अब तो रिटायर हो जाना है... यूँ हमारी उम्र बढ़ गई। पर, जब हम सोचेंगे कि हम 50 साल के नहीं हैं, अभी

25 साल के ही हैं; तो, हमारे अंदर ज़्यादा ज़ील - ज़्यादा उत्साह आएगा और हम बहुत अच्छे काम कर सकेंगे।

आज दासस्वामी ने राम वर्माजी की बेटी की बहुत अच्छी बात दोहराई कि एक बेटी ने रात को तीन-साढ़े तीन बजे तक जाग कर जो मॅसेज भेजा था और उसमें से एक मॅसेज दासस्वामिजी ने लिया कि **गुरुजी यानि – 365 × 24 अवर्स अवेलेबल !** सुबह ब्रह्मानंदस्वामिजी ने भी बहुत अच्छी बात करी कि रात को साढ़े बारह - एक बजे तक सब संत लोग आए, तब भी **गुरुजी** राह देख कर बैठे हुए थे। उन्हें खाना खिलाया - आनंद करवाया। उन**का भी शरीर लोहे या लकड़ी का नहीं है, हमारे जैसा ही है, उन्हें भी थकान लगती है।** हम देखते हैं कि जब भी गुरुजी के पास बैठे होते हैं, तो गुरुजी कभी भी ऐसा नहीं कहते कि अब जाओ, सोने का टाइम हुआ; लेकिन हम समझ जाते हैं। तो, गुरुजी के लिए कुछ ऐसा करें कि जिससे गुरुजी को ज़्यादा आराम मिले। अब **78 का जो नंबर है, उसे हम सब हरिभक्त ख्याल में रखें कि अब गुरुजी को ज़्यादा सुविधा - आराम दें।** उनकी तबियत अच्छी रहे ऐसा कुछ करें और गुरुजी के सेवक भी बहुत बड़े हैं, ख़ानदानी हैं। हमारे **अभिषेक** को मैं जब भी देखता हूँ, तो मैं मन में - मानसी में 10 बार उसके पांव छू लेता हूँ कि यह कितना शानदार सेवक है। कितने सालों से वो एक सरीखी सेवा करता आ रहा है और सब ऐसे हैं - सबकी बात ऐसी है और गुरुजी के साथ कितना प्यार है उनका।

दूसरा – देखना, गुरुजी शायद किसी के साथ भी कड़क दिखाई पड़ेंगे, मगर हमारे **नक्षु** के साथ गुरुजी खूब सॉफ्ट हैं। वह **उनका इतना लाड़ला है कि हम भी चाहते हैं कि हम बस नक्षु बन जाएँ।**

तो, आज गुरुजी के चरणों में प्रार्थना है कि आपने काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, साहेब सभी को जैसे राज़ी किया, इसी तरह से हम भी ट्रांस्पेरन्ट बनकर, जैसे हैं वैसी हमारी भावनाएँ बताएँ। पर, ट्रांस्पेरन्सी में एक सावधानी होनी चाहिए कि हमारी ट्रांस्पेरन्सी ऐसी नहीं हो कि हम उसे अच्छी तरह इम्प्लीमेंट नहीं कर सकें। **हमारी ट्रांस्पेरंसी प्योर एण्ड सॉफ्ट, जैसे गुरुजी जो भी हो, वो दिल से कहते हैं ...**

प.पू. गुरुजी

...अभी दिनकरभाई ने एक बात करी। पहले से मेरा एक नॅचर है कि कोई भी कन्फ्यूज़न, कॉम्प्लेक्स या डाऊट हो, तो उसे पहले क्लीयर कर दो।

सो, **'नक्षु'** के बारे में – मुझे भी समझ आता है कि एफेक्शन में नक्षु के लिए हमेशा मैं 'ओवर' रहा हूँ... उसकी एक वजह है। आप लोगों को मैंने कहा हुआ है कि किसी के बारे एक ओपीनियन मेरे दिमाग़ में बैठ जाए, तो उसे बदलना मेरे लिए बड़ा मुश्किल होता है। शुक्रगुज़ार करो कि आप सब मुझे खूब अच्छे लगे हो। आप सब यानि – आज जो भी आए हैं। जो आए हैं वे सब जानते भी हैं कि गुरुजी ने हमें खूब आग्रह करके, फोन करके, लेटर लिख के बुलाया है।

नक्षु के बारे में ऐसा है कि पहले मैं कुछ टाइम यहाँ रहता था, फिर स्वामिजी बुलाते तो मैं सोखड़ा चला जाता था। एक बार कुछ शरदपूर्णिमा तक मैं यहीं रुका हुआ था। तब तो नक्षु क्या, उसका पापा आशिष भी नहीं था।

मुझे स्वामिजी की ऐसी आज्ञा आई थी कि *अन्नकूट का समैया करने के लिए तू आ जाना...* क्योंकि अन्नकूट के बाद फिर प्रसाद बांटने भी जाना होता था। लेकिन, शरदपूर्णिमा का फंक्शन करके देर रात को नवीनभाई घर जा रहे थे कि कमला नगर के पास एक जीप से उनकी सबसे छोटी लड़की 'डिम्पल' का एक्सीडेंट हुआ और वो ऑन धी स्पॉट एक्सपायर हो गई। सत्संग में नवीनभाई की इन्ट्री एकदम नई-नई थी। बेशक, वे वॅरी क्लोज़ली एटैच्ड थे, लेकिन जैन समाज में इसकी थोड़ी खलबली मची थी। आप सब देखते हो, अब तो वे यहीं रहते हैं इसलिए बात अलग है, लेकिन तब वे अकसर जैन मंदिर की सेवा में जुड़े रहते थे – जैसे अब यहां जुड़े हैं वैसे। बगल के जैन मंदिर में वे कन्टीन्यूअस सेवा देते थे, धीरे-धीरे वो बंद हो गई, क्योंकि यहाँ जुड़ते गए। जैन समाज को ख्याल आया कि यह 'स्वामिनारायण मंदिर' में जाने लगा है और इसलिए धीरे-धीरे यहाँ से हटता गया है। सो, इस इंसीडन्ट से कइयों ने उनके दिमाग़ में भरने की कोशिश करी – *देखो, तुम वहां गए, क्या मिला?* इस बात का मुझे थोड़ा ख्याल भी था। दरअसल, मैं दूसरे -तीसरे दिन सोखड़ा के लिए निकलने वाला था, तो मैंने सोचा कि अब दो-चार दिन रुक कर जाऊं। तो, सोखड़ा फोन कर दिया कि ऐसा हुआ है, इसलिए मैं कल या परसों न निकल कर बाद में आता हूँ। नवीनभाई तो स्टेबल थे, पर इनकी मिसिस वगैरह काफी डूबे हुए जैसे रहते थे। तो, मैंने सोचा कि फॅमिली थोड़ी संभल जाए फिर मैं जाऊँगा। यूं करते - करते ज़्यादा टाइम निकल गया। उन दिनों सोखड़ा में पूज्य शास्त्रीस्वामिजी से फोन पर मेरी बात हुई, तो उन्होंने कहा – *लड़की का बारवां या तेरहवां करके ही आओगे क्या?* इन्होंने दोस्ती - दावे से कहा था, पर मुझे उस समय वो पिंच हो गया कि ये समझते क्यों नहीं? मैंने तब उन्हें तो कुछ बोला नहीं। पर एक बार काकाजी आए थे, तो मैंने वैसे ही बातों - बातों में कहा – *काका, ये इतना भी नहीं समझते?* तो काकाजी ने पूछा – *तूने क्या कहा?* मैंने कहा – *मैं कुछ बोला नहीं।* काकाजी बोले – *कहना चाहिए था न कि अब ये लड़की जो एक्सपायर हो गई है, उसके बदले में उसे एक लड़का देना है और बाद में उस लड़के के यहाँ किसे भेजना है – उसकी सॅटिंग करने में थोड़ा टाइम लगेगा।* काकाजी ने मुझे यह जवाब दिया था ! उस समय तो वो सब बातें लाइट वे में चली गई। फिर आशिष का जन्म हुआ, वो भी हमसे बड़ा क्लोज़ रहा। फिर आशिष की मॅरेज हुई और उसके यहां 'नक्षु' आया, तब मुझे काकाजी की वो बात एकदम याद आ गई कि काकाजी ने कहा था – इसके यहां किसे भेजना है, उसकी सॅटिंग करनी है। पहले भी मैंने कई बार कहा है कि –

बापा, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, कुछ कहें, वो बातें भले मुझसे सच न मानी जाएँ, पर मेरे दिमाग़ में ऐसा तो रहता है कि भले ही यह बात मुझसे मानी नहीं जाती और अभी मेरे दिमाग़ में नहीं बैठती, पर इन्होंने जो बोला है, वो ही सच होकर रहने वाला है। बस, इसी वजह से 'नक्षु' के साथ मेरा प्यार हमेशा रहा और बढ़ता रहा है कि काकाजी की भेजी हुए कोई स्पेशियल चेतना है।

मैं कहता हूँ ऐसा नहीं, हर एक को ख्याल भी पड़ता होगा कि इसका बिहॅव, बॉडी लेंग्वेज सत्संग से जुड़ाव और लड़कों से कुछ अलग है। आज आप भी देखते हो तीन-साढ़े तीन घंटे हो गए, उसे ऐसा रहता है कि यहीं

बैठना है। यह बोलेगा भी नहीं कि मैं खेलने जाऊं। ऐसी क्वॉलिटीज़ और काकाजी का कहा देखते हुए उससे मेरी एक इन्टीमसी है।

अब मेइन बात – दासस्वामी या आप लोगों में से किसी ने कहा भी – या कुछ भी कह दो – 'गुणातीत हो गए, ये हो गए - वो हो गए।' मैं ख़ुद कइयों को गुणातीत मानने को तैयार नहीं, तो अपने आपको कैसे मानूंगा? पर, थोड़ी बहुत भी जो **एडवांस्मेंट** हुई है, वो **स्टेप बाई स्टेप नहीं हुई है।** आपको ख्याल होगा अपने यहां एक छोटी - सी बुकलेट निकली थी – 'स्वामिनारायण सर्वोपरि क्यों?' उसमें एक सन्टेन्स है। **स्वामिनारायण हॅज़ प्रोवाईडेड अस ए 'लिफ्ट'। हमें कोई एफर्ट नहीं करना पड़ता,** वे उठा कर हमें रख देते हैं। इस बात का बस एक विश्वास रखना है। हम सुनते - बोलते - लिखते सब हैं, **लेकिन** यह मानते नहीं हैं। **मन में यह** तो **रहता ही है कि इतना तो करना ही पड़ेगा।** मैं कई बार यह एग्ज़ाम्पल दे चुका हूँ। **काकाजी से तो मुफ़्त में ले लेने वाली बात कइयों ने सुनी होगी।** मैं कहता हूँ न कि काकाजी और पप्पाजी में कुछ फर्क नहीं था। उनके या उनसे खूब क्लोज़ रहे होंगे – उन्हें ख्याल होगा कि दोनों की बात का मर्म एक ही रहता था।

सांकरदा में पप्पाजी का भक्ति उत्सव मनाया गया था। तब पू. विज्ञानस्वामी ने सभा में बातें करते हुए कहा कि मैं ये सब बातें तो करता हूँ, पप्पाजी से आशीर्वाद भी मांगता हूँ; लेकिन यह सब तो तब ही होगा, जब मैं जैसा बोल रहा हूँ वैसा वर्तूंगा।

पप्पाजी ने एकदम इन्टरप्ट करके कह दिया कि 'कृपा' हो जाए, तो वर्तन की जरूरत नहीं पड़ेगी। यह गुणातीत स्वरूपों का विटो है। यह हमारे दिमाग़ में बैठता नहीं है। जिसने 1983-86 दौरान काकाजी के दर्शन किए होंगे, उन्हें ख्याल होगा कि सोफे पर बैठ कर वे ख़ुद कहते थे – *'आवा मफतिया फरी नहीं मळे।'* (मुफ़्त में देने वाला ऐसा फिर नहीं मिलेगा) तब हम यह मानते थे कि काकाजी मूर्ति दे रहे हैं, लेकिन वे हमें सच्चाई बता रहे थे कि तुम लोग ले जाओ। वह बात भी जब हमने नहीं पकड़ी, तो आख़िर में वे बोलते – *हमें हरा (लीला) अनुग्रह करना है।* अनुग्रह की तो बात अलग, पर हरा (लीला) मीन्स इमीडियेट यूज़ करना शुरू कर दो। **ये सारी बातें ग्रेस की हैं।**

यह बात एकदम सही है कि मैंने पहले हमेशा मना ही करी थी कि मुझे साधु नहीं होना है। पर आज मुझे लगता है कि रियली में कितना लकी हूँगा कि **योगीबापा ने 51 संत जो बनाए, उसमें मेरा नंबर लग गया।** उस समय तो ऐसा लगता था कि फंस गया। बेशक, उस समय फंसाया ही गया था। पर, वो भी मैं अब मानता हूँ कि बहुत अच्छी बात बन गई। क्योंकि अब धीरे-धीरे समझ में आया कि **बड़े पुरुष के मिशन में हम शामिल हो जाएँ, तो भव्य प्राप्ति होती है।** यह एक विश्वास बैठ गया है। स्वामिजी कई बार बताते हैं कि शास्त्रीजी महाराज के अंतर्धान होने के बाद योगीजी महाराज ने कह दिया था – हमें 51 पढ़े-लिखे संत बनाने हैं और रफ लेंग्वेज में कहें तो बापा को एक धूनी जैसी लगी थी। जो भी कोई युवक मिलता, उसे कहते – *कहो, मैं साधु होऊंगा।* गुजराती में कहते – *कहो, थईस।* गांवों में बापा कहीं नीचे जमीन पर बैठे हों, तो उंगली से 51 का फीगर लिखते। सो, **काकाजी का ही खूब धन्यवाद आज माना जाए कि पटा - फंसा कर मुझे इसमें शामिल कर लिया।**

इससे भी आगे मैं पहले से कहता हूँ कि महाराज - गुणातीतानंदस्वामिजी के समय से, बापा के साथ मेरा जरूर पहले से कोई संबंध होगा, वर्ना तो इतनी फेवर हो नहीं सकती। सब जानते हैं कि चालाकियां करनी हों, तो तुम्हारे में से कोई मुझे जीत नहीं पाओगे। मैंने तो एक बार कहा भी था और दिनकरभाई को वो पसंद नहीं आया था कि मैं अगर शतरंज खेलूँ और सामने शकुनि भी उतर आए, तो वो मुझसे नहीं जीत सकता, क्योंकि मैं उससे ज्यादा प्रपंची हूँ। पर, **बापा ने** क्या किया कि **मुझे काकाजी के ग्रुप से एटैच कर दिया।** काकाजी रंगीले जरूर थे, पर दूसरी ओर – सत्संग में हम किसलिए आते हैं ? बापा का क्या लाभ लेना है ? क्या पाना है ? उस पर उनकी निगाह हमेशा रही है।

एक बार क्या हुआ ? अक्षरभुवन में काकाजी के अगेइंस्ट काफी हलचल होती थी और उसके कारण पू. हर्षदभाई के ग्रुप का हम लोगों के साथ टकराव रहता था। काकाजी को कैसे परेशानी में डाल दिया जाए, डीफेम-डीग्रेड किया जाए, वो सारे प्रपंच चलते थे। मुझे एक बार अंदर से बहुत गुस्सा आया। एक बार मैंने काकाजी से कहा – *काकाजी थोड़ी बात करनी है।* पू. अक्षरविहारीस्वामिजी नीचे जिस रुम में रहते थे वहाँ रेस्टोरां की ओर गैलरी थी, वहां मैं और काकाजी गए और बात शुरु की। मैंने कहा – *काकाजी एक काम है।* तो वे बोले – *क्या ?* मैंने कहा – *ये सिद्धेश्वरस्वामी को उसके घर भेज दूं ? वह अपने आप चला जाएगा और किसी से कह भी नहीं पाएगा कि मैं क्यों गया ? किसी को पता भी नहीं लगेगा कि हमने कुछ किया है।* काकाजी थोड़ी देर तो सुनते रहे। फिर उन्होंने एकदम कहना शुरु किया – *हम साधु इसलिए हुए हैं ? बापा से साधु की दीक्षा हमने इसलिए ली क्या ? यह तो कॉलेज में, घर में, जगत में भी करते। यह धंधा करने के लिए हम यहाँ आए हैं ?* हम लोग उस गैलरी में तक़रीबन सुबह दस-सवा दस बजे खड़े हुए थे। खड़े-खड़े बातें करी, क्योंकि उस समय ऐसा कुछ था नहीं कि नीचे बिछाएँ। तक़रीबन एक-सवा बज गया यानि – तीन घंटे तो हो ही गए। मैं भी थक गया था, पर काकाजी छोड़ते तो मैं जाता न ? कोठारीस्वामी को शायद याद होगा कि उन्होंने दरवाज़ा खोल कर देखा। उन्हें ऐसा कि इसे इतनी बड़ी क्या प्रॉब्लम आ गई है कि 3 घंटे से काकाजी को खड़ा रखा है। कोठारीस्वामी ने हाथ जोड़ कर अपने स्टाइल से कहा – *दयालु, तीन घंटे हो गए, काकाजी को तो देखो, उन्हें तो घर जाकर भोजन करना है।* मैं उन्हें क्या कहूँ कि दरअसल तो मुझे खूब भूख लगी है, पर ये छोड़ें तब न ? मेरे कहने का मक़सद यह है कि –

अगर काकाजी जैसे सच्चे संत का जोग नहीं होता या उनसे ऐसी मोहब्बत नहीं होती या उनसे अगर ऐसा एटैच्ड नहीं रहा होता, तो मैं इसी चक्कर में रहता। पर, मुझे भगवान पाने हैं, उन्हें प्रगटाने के मार्ग पर चलना है, उस दिशा में मैं जा ही नहीं सकता था।

यही एक फेवर थी, जिससे कि मैं टिक गया हूँ। वर्ना, आप कुछ भी बात कर दो कि गुरुजी ऐसा... ऐसा... – ऐसा कुछ नहीं था।

प्रेमस्वामी शुरुआत में हमारे साथ साधु समाज में आते थे। सब बातें करते हो कि मैंने खूब कसनी सही – एट्सेट्रा-एट्सेट्रा... पर **काकाजी-स्वामिजी ने हमें ऐसी कोई तकलीफ पड़ने नहीं दी। आज जो यहां खाते हैं, वो उस समय भी वहां बिना पैसे के मौज से खाया है।**

तब कैसे खाया था, वह बताता हूँ। यह बहुत पुरानी बात करता हूँ। रोज़ तो ये (पू. प्रेमस्वामी) खिचड़ी वगैरह सादा खाना बनाते। मुझे हुआ कि कहां तक यह खाते रहेंगे? तो, मैंने कहा– *प्रेमस्वरूप, कुछ वेढ़मी-बेढ़मी बनाओ।* इन्होंने कहा– *कहाँ से बनाएँ?* और... वे जानते हैं कि वेढ़मी बनाएँगे, तो इसमें जायफल डाल, ये डाल, वो डाल–ऐसे खूब नख़रे करेगा। मैंने कहा – *एक उपाय करते हैं।* नीचे एक तांत्रिक रहता था। वो माता की आराधना करता था। मैंने कहा– *चलो, नीचे जाकर पूरनपूरी का बंदोबस्त करते हैं।* उसकी पूजा में हम जाकर बैठे, मैंने देखा वहां दो जायफल रखे हैं। उसने आंख बंद करके जैसे ही धुनी लगाई, दोनों जायफल व साथ में पड़ी थोड़ी इलायची लेकर रख ली। उस समय भी तंत्र विद्या से हमें कोई डर नहीं था। क्योंकि हम जानते थे कि महाराज हैं, तो अपना कुछ बिगड़ नहीं सकता। हम लोगों ने आराम से वेढ़मी बना कर खाई।

कहने का मतलब कि **इन विभूतियों ने हमें कभी कोई तकलीफ वगैरह महसूस होने नहीं दी है, हमने मज़े से आनंद ही किया है।**

जैसे कि सब जानते हो कि आप लोगों को मैं बुलाता रहता हूँ। कल-परसों से तुम लोग जाना शुरू कर दोगे, हक़ीक़त में मेरा मन अंदर से मुरझा जाएगा कि ये सब तो चले जाएँगे। पर, काकाजी ने यहां सब सेट करके भी दिया हुआ है। जब हम यहां मंदिर में रहने आए, तो मैंने सोचा कि इतने बड़े मंदिर में हम तो चार-छः जने हैं, क्या करेंगे? रात को तो डर भी लगे। फिर मैंने एक तरकीब लगाई कि अपनी फॅमिलीज़ हैं, उनमें से दो-दो, तीन-तीन जेन्ट्स बाय टर्न एक-एक दिन सोने आएँ। यह बात जब से मंदिर बना तब की है। अब काफी जने आते-जाते रहते हैं, पर ये भगत लोग कैसे जुड़े हुए हैं कि आज भी वे सारे वीकली बाय-रोटेशन इनका जो टर्न लगाया है, वैसे आते रहते हैं। यह नहीं कहते कि गुरुजी अब तो यहां बस्ती है, क्यों बुलाया करते हो? और... मेरा नॅचर भी ऐसा है कि जिसकी बारी होगी, जैसे आज ये बच्छराज की बारी है, तो मैं शाम को 5 बजे फोन अचूक करूँगा कि तू रात को आएगा न? हो सकता है कि उसे कई बार एम्बरेसिंग भी लगता हो कि आज जाना ही पड़ेगा। पर, आ जाते हैं और अभी से नहीं, बचपन से मेरा ऐसा नॅचर है। सब कहते हैं कि हमारे गुरुजी एकदम साधु हैं, रूम है लेकिन हॉल में ही सोते हैं। पर, मुझे रूम में अकेले नींद ही नहीं आती, इसलिए हॉल में सोता हूँ। आज की यह बात नहीं है, मैं नक्षु जितना छोटा था तब से ऐसा है। तब घर में मैं और एक छोटा ब्रधर–बस हम दो थे, जनक तो तब था ही नहीं। घर में ख़ाली-ख़ाली लगता। इसलिए ज़्यादातर मैं अंकल के यहां जाता था, क्योंकि उनके यहां फौज थी, तो सबके साथ सोने को मिलता था। पर, रोज़ तो वहां जाया नहीं जाता था। मुंबई में जो रहे होंगे, उन्हें ख्याल होगा कि वहां चॉल सिस्टिम या ब्लॉक सिस्टिम में जहाँ आमने-सामने फ्लैट होता था, तो बीच में एक छोटा चौक या कॉमन वॉक वे जैसा होता है। अपना काम खत्म करके वहां होम सर्वन्ट्स रात को सोते हैं। उससे दो चीज़ें होती कि घर की चौकीदारी भी होती और वो घर के बाहर होते। तो, मैं अकसर कह देता – *मैं बाबू (सर्वन्ट) के साथ सोऊँगा...* क्योंकि बाहर तो पांच-छः सर्वन्ट्स सोते और घर में दो ही जने होते थे। फाधर वगैरह को ऐसा होता था कि नौकरों के साथ क्या सोने जाता है? घाटी अच्छा था, वो कहता–*अभी सो जाने दो, बाद में मैं अंदर छोड़ जाऊँगा।*

मेरे कहने का मक़सद यह है कि **मुझे समूह में रहना भाता है, पर उनसे मेरी या आपसी पहचान हो तो–किसी रिलेशन से बंधे हुए हों तो।** बाकी कोई कहे कि यहां पचास हज़ार आदमी इकट्ठे कर दें, तो

वो मुझे नहीं चाहिए। यह 'अपना घर' जो बनाया है, उसके लिए भी मैंने कह दिया कि यह घर जो बना है और आप मानो कि 40-50 आम यात्रिक हरिद्वार जाने या घूमने-करने के लिए निकले हों, इन्हें ठहरा सकेंगे, तो ऐसा नहीं होगा। स्वामिनारायण से जुड़े हुए या गुणातीत समाज के 100 जने भी आ जाएंगे, तो मुझे खूब आनंद है। बाकी **अननोइंग फेक्टर्स की 'भीड़' इकट्ठी हो, वह मेरे ब्लड में नहीं है।**

...जो कुछ भी है वो एक्च्युअली तो ऐसा है कि मुझे महाराज ने सब फेवर करके दिया हुआ है। इसीलिए, जैसा कि आप कहते हो – जो कुछ प्रगति हुई या मैं टिक भी गया वो इसलिए कि एक 'आत्मीय समाज' मुझे मिल गया। मैं भी तीन दिन से देखता हूँ यहां **आप जो मुंबई से, गुजरात से मेरे बर्थडे पर आए हैं, वे खूब अपनेपन से आए हैं।** ऐसा नहीं है कि चलो, एक साधु का प्राकट्य दिन है, तो जाना है। **अक्षरविहारीस्वामिजी भी आए और संतों ने कल बाजरे की रोटी वगैरह जिस अपनेपन से खिलाई, वो सोच कर तो दिल और आंख गीली हो जाएँ।** बीच में मैंने 'ज्योत' में भी फोन करवाया था। अभी तो आग्रह करने में मैं खुद भी थोड़ा हिचकता हूँ कि – 'एइज फेक्टर' है। फिर भी डरते-डरते कहा था कि तबियत अच्छी हो, तो जरूर आना। **यह आपस की मोहब्बत और प्रेम है। एक्च्युअली तो वही सत्संग है। इतनी आत्मबुद्धि से यहां आना या रिलेशन रखना या एक दूसरों की बात रखनी–वही अपनापन।** बाकी **हंसा दीदी** ऐसे ही आएँ ऐसे हैं नहीं–हक़ीक़त में कहता हूँ। वे बैठ कर सुन भी रहे हैं, बुरा भी लग सकता है। पर, इन्होंने एक चीज़ देखी न कि गुरुजी अपना है, फिर बाद में उससे सुनते रहना पड़े कि 'आप आए नहीं'–उसकी बजाय जा आएँ। यूँ, ख़ाली आने के लिए नहीं आए हैं, **मुझे राज़ी रखने हेतु एक अपनेपन से आए हैं।** दासस्वामी को भी ख्याल होगा, जब उनसे फोन पर बात हुई तो मैंने कहा कि तुमने स्वामी से पूछा कि नहीं ? मैंने तो आज किसी से कहा भी कि तुम स्वामिजी से कहो कि अब आप ठीक-ठाक रहो। क्या हमसे ज़्यादा आपको हॉस्पीटल जँच गया है ? मैं तक़रीबन 4 साल से देखता हूँ कि एक तो – साल में 6 महीने स्वामिजी बाहर विदेश में रहते हैं; इंडिया में जो 6 महीने रहते हैं, उसमें वे 4 महीने तो हॉस्पीटल में रहते हैं। सच है ना यह ? 3 महीने तो हैं ही। मेरा कहने का मक़सद वो है कि हमें कैसा आत्मीय समाज मिला हुआ है – इस बात को यहां के स्थानिक मुक्त समझें। मैं भी जानता हूँ कि आप सब मोहब्बत-प्रेम से खींचे चले आते हो, लेकिन यहां जो समाज है, **धरती पर ऐसा समाज कहीं नहीं मिलेगा, हक़ीक़त में नहीं मिलेगा।**

मैं कई दिनों से एक बात आप लोगों को समझाने की सोच रहा था, क्योंकि **मुझे भी ऐसा रहता है कि जब आप लोग यहां आते हो, तो आपकी करी हुई भक्ति का कुछ फ्रूट आपको मिलता जाए।** मैं जानता हूँ कि आप मानते हो कि **'स्वामिनारायण'** – भगवान हैं; पर **आप यह मानते हो कि जैसे दूसरे अवतार हो गए हैं, वैसे यह भी एक अवतार आया।** पर नहीं, **स्वामिनारायण टोटली एक अलग कोटि है!** हमारे गुजरात में कहते हैं **'अवतार-अवतारी का भेद'।** आप यह मत समझना कि – श्री राम, श्रीकृष्ण, विष्णु, माता, महादेव जैसे ही ये हैं, लेकिन थोड़ा ज़्यादा ऐश्वर्य लेकर आए हैं। यह तो एकदम अलग कोटि है। इस बात को अच्छी तरह और क्लीयरली समझाना मेरे लिए कठिन है। कोई बात समझानी हो, तो मैं कई बार कह चुका हूँ कि **जसभाई साहेब** बहुत अच्छी तरह समझा देते हैं। **उनका लैंग्वेज पर काबू है और एक सॉफ्टनेस है।** मैं कुछ ज़्यादा

समझाने की कोशिश करता हूँ तो एग्रेसिव हो जाता हूँ। फिर भी कोशिश करता हूँ। दिनकरभाई ने मुझे **स्वामी की बात – 11वें प्रकरण की 128-129** बताई, उसे हिन्दी में पढ़ कर सुनाता हूँ, ताकि यहां जो आप आ रहे हो, वो किसकी भक्ति कर रहे हो उसका ख्याल आ जाएगा। किस तरह का फर्क है और आप क्या मानते हो, वो बात समझ आएगी। इसमें लिखा है –

* मिश्री का प्रसाद देकर एक भगत को गिर के प्रदेश में सत्संग की बातें करने के लिए भेजा। मिश्री की प्रसादी खाकर वहां के बच्चे कहते हैं – *आपके प्रदेश का गोंद बहुत मीठा है, हमारे यहां नहीं होता है।* कहने का मक़सद क्या कि मिश्री खाई लेकिन उन्होंने यही समझा कि यह ऊंची क्वालिटी का गोंद है। पर, यह कॅटगरी - यह कोटि अलग है, यह बात वो लोग समझे नहीं। फिर समझाया है कि मिश्री खाई, लेकिन मीठा गोंद ही है यूं समझकर इन्होंने खाई, जैसे कि **आप समझते हो** कि ये **स्वामिनारायण आख़िर में एक ऐसा अवतार हो गया जो थोड़ा ज़्यादा ऐश्वर्य लेकर धरती पर आया। पर, ऐसी बात नहीं है, यह टोटली डिफरन्ट कॅटेगरी है।** भगवान स्वामिनारायण का भजन कई - कितने तो करते हैं; आप लोग भी आते हो, परंतु अवतार जैसा समझ कर स्वामिनारायण का भजन करते हैं। दृष्टांत से गुणातीतानंदस्वामिजी ने खूब क्लीयरली यह बात समझाई है। मतलब **अवतार अलग है और अवतारी – जिसमें से सारे अवतार उत्पन्न हुए, वो एक अलग चीज़ है।**
* ऐसी एक दूसरी बात करी – काठी के लड़के साधुओं के साथ रहते थे। एक बार वो गुजरात गए, वहां 'राण' – एक अलग ढंग का फल है, उसे देख कर वे बोले यह तो नीबोरी है, पर शायद इसे यहां 'राण' कहते होंगे। फिर किसी ने कहा कि नीबोरी तो छोटी होती है और यह तो बहुत मीठी और बड़ी है। यह सुन कर वो बोले : धरती - ज़मीन का फर्क होता है। वहां उसके बीज को पुष्टि - न्यूट्रीशियन नहीं मिलता होगा, इसलिए छोटी और कम मिठास की होती होगी। पर, है तो राण ही। वैसे हम समझते हैं – स्वामिनारायण को।

आप खूब विश्वास से मानना, मुझे तुम लोगों को गलत राह दिखा कर क्या मिलेगा? **आप भी जानते हो कि खूब भीड़ बढ़ाना, वो कभी मेरी चाह नहीं रही। इट इज़ ए लायबिलिटी। कभी कोई बात करते हैं कि ये ग्रुप का सेवक अपने यहां आ जाए; पर किसलिए? उसकी लायाबिलिटी हम क्यों लें, जिनका है उन्हें संभालने दो।** मेरा मन हमेशा ऐसा रहा है।

दिनकरभाई ने मुझे एक और बात करी कि गुरुजी, यह स्वामिनारायण वाली बात मैं, तुम और हम सब तो समझें हैं, पर काकाजी के बारे में ऐसा कोई समझता होगा क्या? **सब साधु हैं, पर हक़ीक़त में काकाजी अलग ही हैं। काकाजी मतलब – गुणातीत स्वरूपों की बात है यह।** काकाजी यहां आते रहते थे, सो 'काकाजी' का रेफरन्स रहता है। लेकिन यह जो बात है, वो काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी – ऐसे भगवत्स्वरूप या वड़वानल अग्नि जैसे संतों की है। मैंने नोट किया है कि यहाँ सब बोलते हैं – काकाजी बहुत ऊंचे संत हैं, काकाजी पल में चाहें वो कर देते हैं। पर, खूब विश्वास से मानना कि दूसरे संत चाहे कितने ही पहुंचे होंगे, लेकिन **काकाजी – जो कि 'गुणातीत स्वरूप' हैं, वह एक एन्टायरली अलग कॅटगरी है।** 'काकाजी बहुत बड़े...' पर, इतना तो समझना ही पड़ेगा कि **काकाजी गुणातीत स्वरूपों की जिस हैरारकी से आए, वो हैरारकी**

आम संतों जैसी नहीं है। लड़का नहीं है, तो लड़का दे देंगे, नौकरी नहीं होगी तो नौकरी मिल जाएगी, बीमार होंगे तो ठीक भी हो जाओगे–यह सब कोई 'सिद्ध महात्मा' भी कर देगा, लेकिन **भीतर के अंदर प्रभु बसा देना या भीतर में 'मैं प्रभु का हूँ प्रभु मेरे हैं –मेरे साथ हैं' यह निष्ठा पक्की करा देनी, वो भगवत्स्वरूप संत के सिवा हो नहीं पाएगा।** काकाजी ने यहां खूब काम किया है, लेकिन जिन-जिनके काम किए, वो आउटराइट-टोटली काकाजी से जुड़ गए।

बाकी सब जगह तो ऐसा है कि महात्मा को 5-10 लाख रुपयों का चढ़ावा दे दिया, काम हो गया; पर, फिर उस महात्मा के साथ उसे कोई लेन-देन नहीं होता। यह तो दुकान में जाकर एक चीज़ खरीदी–ऐसी बात हुई। अपने यहाँ तो–वह साधु तुम्हारे फॅमिली का-तुम्हारा एक पार्ट एन्ड पार्सल बन जाए, तुम्हें मन में फिट बैठा दे कि स्वामी मेरे हैं। गुणातीतानंदस्वामिजी ने कहा हुआ है कि इतना ही समझना है कि **'मैं स्वामी का और स्वामी मेरे'** और यह बात कठिन नहीं है। एक बार यह संबंध हो जाता है, फिर वो सारी मुसीबत इनकी है। हमें कुछ नहीं करना, भले हम उनका कहना ना भी मानें। काकाजी ने ही मुझे एक सीधी-सादी बात कही थी कि अर्जुन कहाँ सरल वर्ता था? वो तो ज़िद्द करके ही बैठा था कि–मैं नहीं लड़ूंगा। पर, वो तो कृष्ण को गरज़ थी, तो उसे कन्विन्स किया, पावर देकर काम करवाया। वैसे किसी भी तरह आप इस घेरे में आए हो–बस आपका काम पूरा हो गया।

गुणातीतानंदस्वामिजी की दो बातें मुझे हमेशा अच्छी लगी हैं और सोचता हूँ कि स्वामी ने क्या कमाल की बात करी है? हम उनकी (प्रभु या संत) तरफ देखें न देखें, वे हमारी तरफ देखते ही रहते हैं कि ये कब मेरी बात को पकड़ें और... वह भी कैसे देखते हैं? स्वामी ने साधु होते हुए ऐसी बात करी कि–जैसे किसी कामी को सुंदर लड़की-स्त्री को देख कर ऐसा हो कि यह लड़की कब मुझे देखे? कब मेरी तरफ निगाह करे? बस इसी तरह 'भगवान का स्वरूप' सेवक की तरफ देखते रहते हैं और एक बार देखा फिर क्या? फिर इन्होंने खुद कह दिया कि भूत अपना पिंड नहीं छोड़ता, तो साधु छोड़ेगा क्या? सो, हम लोग खूब निश्चिंत रहें। हमें कुछ नहीं करना है। आप भी देखते हो, मंदिर आते हो तो कथावार्ता हम बहुत थोड़ी करते हैं, पहले करते थे लंबी-चौड़ी। ये कैसेट निकलती हैं, तो मैं सोचता हूँ कि क्या मैंने इतनी लंबी-लंबी बातें करी हैं? मुझे याद है कि हम 'सवद्दी' गए थे। तो सुबह 6 बजे से जो कथा शुरु हुई, तो दोपहर दो-ढाई बजे तक चली। धर्मपाल ने पूछा भी था कि खाना नहीं खाना है? मेरा कहना यह है कि आप लोग खूब विश्वास से निश्चिंत होकर रहो। पर, **ऐसा संबंध कर लेना बहुत जरूरी है।**

और एक बात भूल गया... पू. दिनकरभाई ने मुझसे शिकागो से पूछा था कि इस बार तुम्हारा बर्थडे सेलीब्रेशन कब है? वर्ना इन्हें क्या जरूरत है, यदि चले भी जाते तो हम कोई शिकायत भी नहीं कर सकते और बुरा लगने वाली भी बात नहीं हो सकती। इतनी दूर से, अक्टूबर से आए हुए हैं, पर ये मार्च की राह देखी, यही अपनेपन की निशानी है। बस, ऐसे **अपनेपन से हम एक-दूसरों से जुड़े रहें-कन्सर्न्ड रहें, इसके सिवा हमें कुछ करना नहीं है।** सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

મૂળ ગુજરાતી :

સાવધાન !

ગુણાતીત સમાજને સંબોધતા **પ.પૂ. કાકાશ્રી** ઘણીવાર કહેતાં–

'શાસ્ત્રીજી મહારાજ અને યોગીજી મહારાજની શુદ્ધ પરંપરાને - એમની ભૂમિકાને સ્હેજ પણ - રંચમાત્ર ભૂલાયા સિવાય - આંચ લાવ્યા સિવાય એક આધ્યાત્મિક વિકાસ થયો...'

અને... આ વિકાસ આપણે જોયો ય ને માણ્યો ય.

પણ, આ વાત ખૂબ વિચાર માગી લે છે.

શું આપણે ક્યારે ય - ક્યાંય પણ શાસ્ત્રીજી મહારાજ - યોગીજી મહારાજને ભૂલ્યા છીએ ?

પણ, આ કહી - કહી એઓ આપણને ચેતવતા કે આપણી આ શુદ્ધ ગુરૂપરંપરા જે અખંડ રહી છે ને રહેવાની છે, એમાંથી ક્યારે ય કોઈ પણ વિભૂતિસ્વરૂપને પડતા મૂકવાની - સાઈડ લાઈન કરવાની - ઍવોઈડ કરવાની કે ઈગ્નોર કરવાની ચેષ્ટા તમો કરતા નહીં.

ખૂબ સમજી રાખીએ કે – એમની આ ચેતવણીને જો આપણે આંખ આડા કાન કરીશું, તો ખોટ આપણને જ જવાની છે – આપણો જ વિકાસ રૂંધાઈ જશે.

– પ.પૂ. ગુરુજી, ૧૩ માર્ચ ૨૦૧૫

सावधान !

गुणातीत समाज को संबोधित करते हुए **प.पू. काकाजी** कई बार दोहराते–

'शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की शुद्ध परंपरा को-उनकी भूमिका को तनिक भी-रंचमात्र भी भूले बिना-आँच लाए बिना एक आध्यात्मिक विकास हुआ...'

और... वह विकास हमने देखा एवं उसका आनंद भी लूटा है।

परंतु, हम खूब सोचें कि क्या हम कभी भी-कहीं भी शास्त्रीजी महाराज-योगीजी महाराज को भूलें हैं ?

दरअसल, यूँ दोहरा कर वे हमें सचेत करते थे कि यह शुद्ध गुरुपरंपरा, जो अखंड रही है और रहने वाली है, उसमें से कभी किसी भी विभूतिस्वरूप को मान्य न करने की - साईड लाईन करने की-एवॉईड करने की या इग्नोर करने की चेष्टा तुम कभी भी नहीं करना।

हम खूब समझ रखें कि – उनकी इस चेतावनी को यदि हम नज़रअंदाज़ करेंगे, तो नुकसान हमें ही होने वाला है – हमारा विकास रुँध जाएगा।

– प.पू. गुरुजी, 13 मार्च 2015

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी (सांकरदा)

...आज गुरुजी का सेवन्टी एइथ बर्थडे है। **7 + 8 = 15 – वो मेरा बर्थडे है। सो, आज मेरा भी बर्थडे है।** अभी फरवरी में मेरा 79th बर्थडे गया, 80th शुरू हुआ। 80 इयर्स कम्प्लीट होने के बाद, हमें ऐसे ही बड़े पंडाल में 15 फरवरी 2016 को समैया करना है। उसके लिए मैं आप सबको अपना मान कर बुलावा देता हूँ कि आप सब उस समैया में सांकरदा आए। बात असलियत में यह है कि यहां पर आप सब लोग गुरुजी की आज्ञा से एक-दूसरे के साथ मिल-जुल कर रहते हैं, लेकिन मेरी इच्छा यह है कि **हम सब गुणातीत समाज के यानि – 'योगी परिवार' के सदस्य हैं।** गुरुजी ने कल सुबह भी बताया था और हर बार कहते हैं कि मेरे जन्मदिन की मैं राह देखता हूँ क्योंकि तब सारा 'योगी परिवार' इकट्ठा होता है। जैसे यहां पर 'योगी परिवार' इकट्ठा होता है, ऐसे ही 'योगी परिवार' सांकरदा में इकट्ठा हो – ऐसी मेरी कुछ भावना है। इस भावना में आप सब लोग भी साथ दें। दीदी भी आई हैं; उन्हें भी कहता हूँ कि वो भी प्रार्थना करें और आशीर्वाद दें कि हम सब मिल कर एकजुट हों। **'योगी परिवार एक है' – ऐसी भावना हम सब लोगों में जाग्रत हो। यह बहुत कठिन बात है, पर हमें यह बात बनानी होगी।** काकाजी की गुरुजी पर बहुत कृपा है, वे आप सबके साथ आत्मीयता से काम करते हैं, लेकिन **'वसुधैव कुटुम्बकम्' की जो भावना है, उसमें हम सबको मिल कर जाना है। हमें अक्षरधाम का सुख, शांति और आनंद पाना है।** मेरी यह प्रार्थना है कि **वो दिन जल्दी आए** और हम सब एक होकर वह मनाएं ...

भगत के वश में हैं भगवान...

1984-85 के दौरान ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं प.पू. गुरुजी के स्वमुख से **गुरुवर्य योगीजी महाराज** द्वारा कथित *'चिड़िया के लिए ब्रह्मांड डुबाया...'* 'बोधकथा' कई बार सुनी थी कि –

एक चिड़िया पर्वत की चोटी पर बैठ कर भगवान का भजन करती थी। उसे प्यास लगी थी, पर उसने ज़िद्द की – 'भगवान मुझे ऊपर बैठी को यहाँ ही पानी पिलाओ।'

सोचें तो चिड़िया को भला कितना पानी पीना होगा? लेकिन भक्त थी, सो भगवान ने पूरा ब्रह्मांड डुबो कर भी चिड़िया को वहीं बैठी हुई को पानी पिलाया। कितने घर, गाँव इत्यादि डूब गए होंगे!

कथा का सार यही है कि **जिसे जिसका आश्रय होता है, वे हमेशा उस आश्रित की हर संजोगों में परवाह करते हैं।**

गुरुवर्य योगीजी महाराज की इस बोधकथा का एहसास प.पू. गुरुजी का **'सिंगापोर'** जाने का हेतु देख कर हुआ। **पंजाब में जगरांव स्थित प.भ. अशोक शर्माजी** का घर मानो दिल्ली मंदिर का ही एक अंग है। उनका परिवार ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं प.पू. गुरुजी के प्रति खूब निष्ठा से जुड़ा हुआ है। सो, उनकी बेटी सौ.

रुचिका की शादी के प्रसंग पर, उनकी पत्नी सौ. आदर्श भाभी की भांजी **'रचना'** प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी के संपर्क में आई। धीरे-धीरे वह प.पू. दीदी से ऐसी अत्यधिक जुड़ गई कि सिंगापोर में उसकी शादी हो जाने के बाद भी, इंडिया आने पर वो मंदिर जरूर आती है और सिंगापोर से फोन द्वारा प.पू. दीदी का सान्निध्य पाती है। पिछले वर्ष से उसका खूब आग्रह था कि प.पू. गुरुजी व प.पू. दीदी सिंगापोर उसके नए फ्लैट को धन्य करने के लिए पधारें। प.पू. दीदी की आज्ञा से उसने फ्लैट में रहना तो शुरू कर दिया, लेकिन उसका यही कहना था कि ***जिस दिन प.पू. गुरुजी व प.पू. दीदी उसके फ्लैट में आएँगे, उसी दिन समझूँगी कि मेरे फ्लैट का उद्‌घाटन हुआ!***

सो, देखा जाए तो उस 'भक्त चिड़िया' सरीखी 'सौ. रचना' की भक्ति के वश प.पू. गुरुजी ने **18 से 23 मार्च 2015**, मंदिर के सभी संतों व भगवान भजती बहनों सहित 52 मुक्तों के साथ सिंगापोर जाने का कार्यक्रम बनाया। सौ. रचना का सत्संग के प्रति खूब अपनापन है और उनके पति प.भ. राकेश शर्माजी को भी अच्छी सद्‌भावना है। सामान्यतः जगत में यह धारणा है कि ऐसे किसी गुरु को बुलाया जाए, तो उनका सारा खर्च बुलाने वाले को उठाना होता है। इस प्रचलित सोच के कारण प.भ. राकेशजी को ऐसा था कि इतने सारों का एरेन्जमेन्ट कैसे करेंगे वगैरह-वगैरह... परंतु, जब प.पू. दीदी ने उनसे फोन पर बात की कि प.पू. गुरुजी भले ही आपके नए घर पर आने के लिए सिंगापोर आ रहे हैं, पर हमारी सारी एरेंजमेंट्स की आप कोई चिंता नहीं करिएगा। साथ में आ रहे अन्य मुक्त भी अपने एरेंजमेंट्स अपने बूते पर कर लेंगे। यह सुन कर प.भ. राकेशजी को आश्चर्य हुआ और सत्संग का गुण भी आया। जैसा कि **ब्रह्मस्वरूप काकाजी** हमेशा कहते कि ***हमारा एटीट्यूड कभी कॉमर्शियल नहीं होना चाहिए...*** ऐसे प्रसंगों से सहज ही दर्शन होता है कि **प.पू. गुरुजी ने ब्रह्मस्वरूप काकाजी की एक-एक बात पर केवल गौर ही नहीं किया, बल्कि उसे अपने जीवन में ढाला है।** इससे भी अधिक इन सिद्धातों पर अडिग रहते हुए वे अपने आश्रितों को उसी तरह ढालने के लिए निरंतर तत्पर हैं।

अतः, प.पू. गुरुजी ने प.भ. राकेशभाई शाह एवं प.भ. पुनीत गोयलजी को सिंगापोर जाने की तैयारी करने की जिम्मेदारी सौंपी। और... जैसे कि प.पू. गुरुजी बार-बार ब्रह्मस्वरूप काकाजी का सूत्र दोहराते हैं– ***जमात करामात (टीम वर्क)...*** उसके अनुसार पू. गार्गी दीदी, पू. नित्या दीदी, पू. डॉ. अर्ची, दिल्ली मंदिर की निजी सत्संगी **सौ. नीना दीदी**-जो कि ट्रावेल एजन्ट का काम करती हैं और प.भ. पवन खण्डेलवालजी का बेटा प.भ. सिद्धार्थ (हनु)-जो कि 'मॅक माई ट्रिप' में काम करता है, उन सब ने मिल कर 'सिंगापोर यात्रा' की सारी तैयारी की।

13 मार्च के उत्सव के बाद अभी तो मंदिर में वाईंडिंग अप चल रहा था कि **18 मार्च** आ भी गई, जब दोपहर चार बजे प.पू. गुरुजी के साथ सिंगापोर जाने वाले एवं प.पू. गुरुजी के दर्शन हेतु आए मुक्त मंदिर के 'कल्पवृक्ष' हॉल में एकत्रित हुए। प.पू. गुरुजी ने करीब बीस मिनिट धुन करवाई। **प.भ. प्रभाकरजी** एवं **प.भ. जयप्रकाश मल्होत्राजी** ने प.पू. गुरुजी और इनके साथ में जा रहे संतों एवं मुक्तों का भी पूजन करके श्रीफल दिया। **सौ. छायाभाभी** एवं **सौ. शोभनाभाभी** ने प.पू. दीदी एवं सभी बहनों व भाभियों का पूजन करके श्रीफल दिया। सवा

पाँच बजे के करीब प.पू. गुरुजी एवं अन्य सभी एयरपोर्ट जाने के लिए निकल गए और साढ़े छः के करीब एयरपोर्ट पहुँच गए। वहाँ भी कई मुक्त प.पू. गुरुजी के दर्शन हेतु पहुँचे हुए थे। हमेशा की तरह भक्तिभरे हृदय से **सौ. रेणुभाभी** एवं **सौ. मीताभाभी** सभी के लिए सॅन्डविचीज़ बना कर लाई थीं। सो, सारी चॅकिंग इत्यादि के बाद वेइटिंग लॉज में बैठे प.पू. गुरुजी ने सॅन्डविच खाकर उनका भाव ग्रहण किया। रात को पौने दस बजे तक सभी सिंगापोर एयरलाईन्स की एयरबस A380 फ्लाईट नंबर SQ 403 में बैठ गए और 10:10 पर फ्लाईट ने उड़ान भरी।

अगले दिन यानि– **19 मार्च** की सुबह सिंगापोर के समयानुसार करीब सवा छः बजे विमान **'चांगी'** एयरपोर्ट पर उतरा। वहाँ **प.भ. राकेशजी** एवं **सौ. रचना** स्वागत पुष्प लेकर आए हुए थे। 'मॅक माई ट्रिप' द्वारा भेजी गई दो अलग-अलग गाड़ियों में बैठकर, प.पू. गुरुजी, संतों, कुछ मुक्तों एवं प.पू. दीदी हॉटल **'केपथोर्न किंग्स'** के लिए रवाना हुए। 'मॅक माई ट्रिप' द्वारा भेजी गई सिंगापोरियन टूर गाइड **'वॉयलेट'** कोच में, अन्य सबका स्वागत करती हुई, सबको हॉटल ले गईं। सिंगापोर के पूरे ट्रिप के दौरान वे हमारे लिए खूब हॅल्पफुल रहीं।

हॉटल में पहुँचते ही सबके मुँह से एक ही सेन्टेन्स निकला–

यह हॉटल तो वाकई अच्छी है; लेकिन मसूरी की अपनी 'रोयल ऑर्चिड फोर्ट' की बात ही कुछ और है...

और... प.भ. गौरव गर्ग को याद करते प.पू. गुरुजी ने तो तुरंत इंडिया फोन भी किया।

नित्यविधि करके सभी ने नाश्ता किया। पूरी रात फ्लाईट में जगे होने के कारण सभी ने थोड़ा आराम किया और दोपहर का भोजन करने के बाद चार बजे **प.भ. राकेशजी** के घर जाने के लिए निकले। वहाँ पहुँच कर प.पू. गुरुजी ने अल्पाहार करके बीस मिनिट धुन कराई। **सौ. रचना** के साथ एयरपोर्ट सिक्योरिटी में काम करती **सौ. अमनदीप**, पहली बार ही प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी के दर्शन कर रही थी, लेकिन पूर्व की ही होगी कि उसे खूब अपनापन लगा।

नए घर में गृहप्रवेश का निमित्त था, सो प.पू. गुरुजी श्रीठाकुरजी की मूर्ति लेकर गए थे कि उनके घर पर रखेंगे। पर, आश्चर्य की बात थी कि जैसे प.पू. गुरुजी को पसंद है कि हर सत्संगी के घर में प्रॉमीनन्ट जगह पर मंदिर होना चाहिए, उसी तरीके से उन्होंने हॉल में ही मंदिर बनाया हुआ था, जिसमें श्रीठाकुरजी एवं स्वरुपों की मूर्तियाँ स्थापित थीं। और तो और, घर के हर एक कमरे की दीवार और दरवाज़े पर गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियाँ लगी थीं। यह सब देख कर सहज ही एहसास हो रहा था कि सच, सौ. रचना को कितना अनुसंधान रहता होगा और **उसी का फल था कि आज प.पू. गुरुजी मंदिर के सभी संतों, युवकों, बहनों और कई मुक्तों को लेकर वहाँ तक गए।** वर्ना, सामान्य तौर पर तो इंडिया में भी यूँ किसी के यहाँ ऐसे एक साथ नहीं जाते। प.भ. राकेशजी ने एपार्टमेन्ट्स के हॉल में सभा का आयोजन किया था। ब्रह्मस्वरूप काकाजी के समय से मंदिर के एकाउन्ट्स की सेवा करते, दिल्ली के **प.भ. मोहितभाई परीख** की बेटी **सौ. रुचि**, दामाद **प.भ. सौरभ पटेल** तथा **गुणातीत ज्योत से–प.पू. ज्योति बहन** से खूब नज़दीक से जुड़े, **प.भ. अमितभाई मवानी**

सपरिवार प.पू. गुरुजी के दर्शन हेतु आए। प.भ. राकेशभाई शाह ने भजन सुनाए। कुछ मुक्तों ने अनुभव दर्शन कराया और प.पू. गुरुजी ने आशीर्वाद देते हुए भगवान स्वामिनारायण की लिविंग फिलॉसोफी से अवगत कराया। सभा के बाद प्रसाद लेकर प.पू. दीदी, सौ. आदर्श भाभी रात को वहीं रुके और अन्य सभी हॉटल लौटे।

दूसरे दिन **20 मार्च** की सुबह, प.पू. गुरुजी ने रोज़ की तरह, 6:40 की धुन कराई और **प.भ. देवेशजी का जन्मदिन** था, सो केक कटिंग की। नाश्ता करने के बाद, सुबह दस बजे के करीब, समृद्धि के प्रतीक **'फॉर्च्युन फाउन्टन'** को तीर्थत्व देने प.पू. गुरुजी मुक्तों के साथ वहाँ गए। वहाँ भी प.पू. गुरुजी ने धुन करके परिक्रमा की। फिर सिंगापोर के मुख्य चिन्ह के रूप में प्रख्यात **'मरलॉयन'** पर गए और धुन की। यहाँ से 'लिटल इंडिया' नामक एरिया में स्थित प्यॉर वॅजीटेरियन **'गोकुल'** में – जहाँ हमारी इस यात्रा के दौरान भोजन की व्यवस्था की गई थी – दोपहर का भोजन करने के लिए गए। 'गोकुल' के मॅनेजर **श्री विजयजी** प.पू. गुरुजी से खूब प्रभावित हुए। प.पू. गुरुजी ने उन्हें मंदिर की परिचय पुस्तिका दी और दिल्ली मंदिर आने के लिए आमंत्रित किया। **प.पू. गुरुजी का एक ही उद्यम है कि साथ में मिलजुल कर सब आनंद करो और... बच्चों व युवाओं को प्रभु से जोड़ने के लिए वे उनके ही जैसे बन जाते हैं।** फिर **अपने भक्तों को खुश करते हुए वे कुछ भी नज़र में नहीं लेते।** सो, दोपहर के भोजन के बाद, प.पू. गुरुजी एवं कुछ मुक्त तो हॉटल लौट गए और अन्य सभी **'सॅन्टोसा आयलेन्ड'** गए। सायं साढ़े चार बजे प.पू. गुरुजी वहाँ आए, सभी को आनंद कराया और साढ़े सात बजे लेज़र शॉ देखने के पश्चात् वापिस 'गोकुल' में भोजन लेकर हॉटल लौटे।

21 मार्च की सुबह 6:40 की धुन की और दस बजे प.पू. गुरुजी सभी को **'सिंगापोर फ्लायर'** में बिठाने के लिए ले गए। उसके एक कॅप्स्यूल में 28 जने बैठ सकते हैं। सो, एक में प.पू. गुरुजी, संतों और सारे हरिभक्त एवं दूसरे में प.पू. दीदी के साथ सभी बहनें व भाभियों ने बैठ कर इस क्षण की दिव्य स्मृतियों को संजोया। यहाँ से 'गोकुल' में दोपहर का भोजन करने के लिए गए। भोजन के बाद प.पू. गुरुजी और संतों व कुछ बहनों के सिवा अन्य सभी **'यूनीवर्सल स्टूडियो'** देखने के लिए गए। प.पू. गुरुजी व संत एवं बहनें वहाँ सायं पाँच बजे पहुँचे ही कि वहाँ का माहौल देखते ही बाहर निकल गए और **प.भ. अमितभाई मवानी** के घर के लिए चल पड़े। वहाँ प.पू. गुरुजी ने धुन कराई व सत्संग की बातें की। प.भ. राकेशभाई ने ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी की पसंद के भजन गाए और अल्पाहार करके, प.पू. गुरुजी 'गोकुल' में सभी भक्तों को दर्शन देने के लिए पहुँच गए। प.भ. अमितभाई के जिस फ्लैट में प.पू. गुरुजी गए, वहाँ उन्होंने दस दिन पहले ही शिफ्ट किया था। सो, प.भ. अमितभाई की तो खुशी का ठिकाना ही न था और फोन पर वे प.पू. ज्योतिबहन से बोले भी कि – *उन्हें तो ऐसा लगा कि गुरुजी के रूप में मानो पप्पाजी ही आए हैं।* प.भ. वच्छराजभाई एवं सभी को ऐसा लगा जैसे अपने ही घर में आए हों। उनके अंतर का भाव कैसा होगा कि हॉटल आने के बाद **प.पू. गुरुजी बोले भी –** ***हम कपड़े-पूजा लेकर नहीं गए थे, वर्ना आज रात वहीं रुक जाते।***

22 मार्च की सुबह, अनुपम मिशन के **प.पू. शांतिदादा** के साथ घनिष्ठता से जुड़े **प.भ. निखिलभाई अध्वर्यु** प.पू. गुरुजी के दर्शन हेतु आए। साढ़े दस बजे प.पू. गुरुजी, प.पू. दीदी एवं सभी, एयरकन्डिशन्ड

फ्लावर डोम्स – **'गार्डन्स बाय धी बे'** देखने जाने के लिए हॉटल में नीचे इकट्ठे हो रहे थे। तभी दो विदेशी लेडीज़ दर्शन करने के लिए वहाँ रुक गईं। तब, **प.पू. गुरुजी** ने सेवक को उन्हें प.पू. दीदी के पास ले जाने की सूचना दी और कहलवाया कि ***अंत समय में आपको यम नहीं, ये दीदी लेने आएँगी।*** बाह्यदृष्टि से देखा जाए तो उनका कोई परिचय नहीं था, लेकिन 'प्रगट' के संतों के ऐसे जॅस्चर्स से ख्याल पड़ता है कि भगवान स्वामिनारायण की कल्याण योजना कितनी भव्य है ! यूँ, हॉटल में एक अनोखी स्मृति देकर, 'गार्डन्स बाय धी बे' को पावन करने के लिए, प.पू. गुरुजी मुक्तों के साथ वहाँ गए। वहाँ सीज़नल फ्लावर्स को बहुत अच्छी तरह डिसप्ले किया जाता है। एक-सवा घंटा वह देखने के बाद सीधा 'गोकुल' आकर दोपहर का भोजन किया। वहाँ से प.पू. गुरुजी कुछ मुक्तों के साथ **प.भ. सौरभ पटेल** के घर पर दोपहर का आराम करने के लिए गए। यहाँ भी प.पू. गुरुजी ने एक अनोखी स्मृति दी। उनके घर में दो बॅडरूम हैं। एक उन्होंने प.पू. गुरुजी के आराम करने के लिए तैयार किया था और दूसरे में उनका तीन साल का बेटा **'कवीश'** सो रहा था। जहाँ कवीश सो रहा था, उसे देख कर प.पू. गुरुजी ने कहा– *मैं तो इसकी बगल में ही सोऊँगा।* आश्चर्य की बात थी कि वह छोटा-सा बच्चा आधा घंटा आराम से प.पू. गुरुजी के साथ जाग्रत अवस्था में लेटा रहा और ज़रा-भी परेशान नहीं हुआ। जबकि प.पू. गुरुजी तो पहली बार ही उनके यहाँ गए थे। पर, पूर्व का मुक्त ही होगा, सो पहली बार में ही प.पू. गुरुजी एवं संतों के साथ ऐसा घुलमिल गया! आराम करने के बाद प.पू. गुरुजी ने वहीं अल्पाहार लिया, धुन-भजन किया।

इसी दौरान **प.भ. राकेश शर्माजी** के सहयोग से सभी हरिभक्त शॉपिंग इत्यादि करके बोटिंग की जगह पहुँचे। प.पू. गुरुजी भी वहीं हरिभक्तों के पास पहुँच गए। बोट में बैठ कर रात के सिंगापोर का नज़ारा दिखाते हुए भी प.पू. गुरुजी ने धुन कराई और यहाँ से 'गोकुल' में भोजन लेने गए। प.पू. गुरुजी की आज्ञा से हॉटल के काउंटर पर बैठ कर प.पू. दीदी ने धुन करके बरकत का तुलसीपत्र रखा। हॉटल 'गोकुल' से लौट कर प.भ. देवेशजी के आग्रह पर हॉटल के कॉन्फरन्स हॉल में डेढ़ घंटे की सभा से इस ट्रिप की पूर्णाहुति हुई!

23 मार्च की सुबह भी 6:40 की धुन के बाद सभी ने अपना सामान पॅक करके नीचे हॉटल की लॉबी में साढ़े दस बजे तक पहुँचा दिया, क्योंकि शाम को पाँच बजे की फ्लाईट से इंडिया लौटना था। इसी दौरान प.भ. मल्कानी साहेब के छोटे बेटे **प.भ. विकास मल्कानी** जो सिंगापोर में ही रहते हैं, वे प.पू. गुरुजी के दर्शनार्थ आए। प.पू. गुरुजी हॉटल के जिस कमरे में ठहरे थे, वहाँ एक फोल्डर रखा था। वह प.पू. गुरुजी को खूब पसंद आया। हॉटल की जनरल मैनेजर लॅडी थी। सो, प.पू. गुरुजी ने प.पू. दीदी द्वारा उन्हें कहलवाया कि यदि उनके पास ये फोल्डर्स स्पॅर में हों, तो हम दो खरीदना चाहते हैं। हॉटल की मैनेजर **श्रीमती जॅनी** धार्मिक प्रकृति की महिला थीं। सो, उन्होंने सेवक द्वारा प.पू. गुरुजी से कहलवाया– *हम इसके पैसे नहीं लेंगे, कॉम्पलीमेन्ट्री ही देंगे और... आपके इस कमरे में रहने से यह आशीर्वादरूप बन गया है।* सहज ही परभाव में प.पू. गुरुजी के मुख से आशीर्वाद फिसल गए – *कमरा ही नहीं, हॉटल ही आशीर्वादरूप हो गया है!* यूँ भी सिंगापोर ट्रिप 'पावन यात्रा' ही थी न!!

प.पू. गुरुजी, कुछ मुक्त एवं प.पू. दीदी के अतिरिक्त अन्य सभी मुक्त, सुबह सवा ग्यारह के करीब हॉटल से कोच में बैठ कर, 'गोकुल' में भोजन करने गए और वहाँ से निकल कर दोपहर दो बजे तक एयरपोर्ट पहुँच गए। बाद में प.पू. गुरुजी, कुछ मुक्त एवं प.पू. दीदी हॉटल से एयरपोर्ट के लिए जब रवाना हो रहे थे, तब श्रीमती जॅनी प.पू. दीदी को विदा करने के लिए आईं थीं। ऐसी भावना देख कर बार-बार यह बात स्मरण होती है कि पूर्व की होगी, तभी ऐसा भाव उत्पन्न होता है। वर्ना, कहाँ वेस्टर्न कल्चर या भाषा से भी परिचित नहीं फिर भी...!

प.भ. राकेश शर्माजी की इस दिन कारगो में ड्यूटी थी, सो वे तो आ नहीं पाए; पर, प.पू. गुरुजी को 'जय स्वामिनारायण' कहने के लिए वे सिंगापोर से तक़रीबन रोज़ फोन करते रहते हैं। सौ. रचना अपनी पाँच साल की बेटी इशिता के साथ सिंगापोर एयरपोर्ट पर, प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी को अश्रुभरी आँखों से विदाई देने के लिए आईं थीं। ये चार दिन जो उसने प.पू. गुरुजी, प.पू. दीदी की निश्रा और हरिभक्तों के साथ गुज़ारे, वो मानो जीवनभर की पूँजी बन गई, क्योंकि **सिर्फ इस 'भक्त चिड़िया' का मनोरथ पूरा करने के लिए गुरुजी समुद्र लाँघ कर भी आए!!** प.भ. अमितभाई भी गुणातीत ज्योत से मिले भक्तियुक्त संस्कारों का परिचय देते हुए घर से सॅन्डविच बनवा कर देने के लिए आए थे... सौ. अमनदीप की एयरपोर्ट पर ड्यूटी थी, फिर भी कैसे भी समय निकाल कर वह प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी के दर्शन करने के लिए आईं। यूँ सबसे विदा लेकर, चॅकिंग इत्यादि कराने के बाद सिंगापोर एयरलाईन्स की एयरबस A380 फ्लाईट नंबर SQ 406 में सायं पाँच बजे बैठ कर, इंडियन समय के मुताबिक रात को आठ बजे प.पू. गुरुजी इंदिरागांधी इन्टरनेशनल एयरपोर्ट पर पहुँचे। तक़रीबन सवा नौ बजे मंदिर पहुँचे, तो देखा कि पीछे से मंदिर में रुके हुए हरिभक्त भाइयों-भाभियों ने अंतर से खुशी ज़ाहिर करते हुए, प.पू. गुरुजी के स्वागत हेतु फूलों एवं दीयों से सजावट की थी।

प.पू. गुरुजी जब भी यूँ मंदिर के पूरे स्टाफ को साथ लेकर जाते हैं और उस दौरान मंदिर में जो भी हरिभक्त ठहरते हैं व जिनके यहाँ से ठाकुरजी के थाल की व्यवस्था होती है, उन सभी की भक्ति के प्रति दिल नतमस्तक हो जाता है। देखा जाए तो **प.पू. गुरुजी से संबंध होने के बाद किसी को घूमने का चाव तो नहीं, पर प.पू. गुरुजी के सान्निध्य का एक 'चाव' रहता है।** जिन मुक्तों को प.पू. गुरुजी मंदिर में ठहरने की आज्ञा करते हैं, उन पर प.पू. गुरुजी का कैसा भरोसा होगा!! दूसरी ओर–**प.पू. गुरुजी** ने भी **हर एक इन्डीवीड्युअल को जितना समय दिया या संभाला है, उसके तोल में तो हम सभी जितना भी करें, उसका कोई छोर नहीं है।** पर, प.पू. गुरुजी की सिंगापोर 'पावन यात्रा' की पूर्णाहुति यहीं नहीं हुई थी। अगले ही दिन से तक़रीबन एक सप्ताह तक, प.पू. गुरुजी ने रोज़ शाम को वहाँ के फोटोग्राफ्स देखे और **24 मार्च** को तो 'मरलॉयन' के फोटोग्राफ्स में संपर्क में आए कई फॉरेनर्स को देखते हुए प.पू. गुरुजी सहज ही बोले– ***जिन्होंने दर्शन किए हैं, उन्हें महाराज कभी न कभी, किसी न किसी गुणातीत स्वरूप के संपर्क में लाएंगे।*** हमेशा एक सेवक की कॉन्सियस्नेस से जीते प.पू. गुरुजी कभी भी अपना नाम तो लेते नहीं, लेकिन यह हमें समझना है कि जिन-जिन्होंने प.पू. गुरुजी जैसी विभूति के दर्शन किए, वे सभी इस आशीर्वाद के अधिकारी तो बन ही गए!!

संतभगवंत साहेबजी के सखा होते हुए भी, उन्हें गुरु मान कर जीवनपर्यंत जिन्होंने उनकी आराधना की, ऐसे विरल संत डॉ. वी.एस.पटेल साहेब को 'अल्विदा' पर श्रद्धासुमन!

1 अप्रैल 2015 की सुबह करीब नौ बजे प.पू. गुरुजी को फोन पर खबर मिली कि पू. डॉ. वी.एस. पटेल साहेब अक्षरनिवासी हो गए। सहज ही **प.पू. गुरुजी** ने वहाँ उपस्थित मुक्तों से कहा–

आज ही तो वी.एस. का जन्मदिन है और आज ही...!

उनके अंतिम दर्शन करने हेतु, एक ही घंटे में दिल्ली से दोपहर 12:30 बजे की फ्लाईट से अमदावाद जाने के लिए, प.पू. गुरुजी मंदिर से पू. सुहृद्स्वामी एवं पू. अभिषेक के साथ एयरपोर्ट के लिए निकल गए और अमदावाद एयरपोर्ट से सीधा मोगरी पहुँच गए। ब्रह्मज्योति में 'अनिर्पुष्पक' पालकी में पू. वी.एस. साहेब का पार्थिव देह दर्शनार्थ रखा गया था। प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. निर्मलस्वामिजी, प.पू. गुरुजी, पू. प्रेमस्वामिजी, पू. रतिकाका, पू. हर्षदभाई, पू. पूनमभाई, पू. भरतभाई (पवई), गुणातीत ज्योत से प.पू. दीदी, प.पू. ज्योति बहन, प.पू. देवी बहन–यूँ 'गुणातीत समाज' के संतों, युवकों, बहनों एवं उपस्थित हरिभक्तों-महानुभावों ने पूजन-आरती करके भावांजलि अर्पण की। अमेरिका से संत भगवंत साहेबजी द्वारा अपने प्रिय सखा के प्रति फोन पर व्यक्त की गई हृदयभावना-महिमागान सुनने के बाद, अनुपम मिशन के व्रतधारी भाई पालकी को ब्रह्मज्योति के 'ब्रह्मलीन' स्थल पर लेकर गए और श्लोकगान एवं स्वामिनारायण महामंत्र के जाप के साथ सायं 5:00 बजे अग्निदाह अर्पण किया गया।

अंत्येष्टि की विधि संपन्न होने के बाद, अमदावाद जाते हुए गाड़ी में ही, प.पू. गुरुजी ने संत भगवंत साहेबजी को उनके फोन के प्रत्युत्तर में निम्न पत्र लिख कर जो 'वॉट्सएप' से भेजा, उससे ख्याल आता है कि पू. डॉ. वी.एस. पटेल साहेब ने अपनी भक्ति से सभी के हृदय में कैसा स्थान पाया होगा!

संतभगवंत प.पू. साहेब के श्री चरणों में–

पू. डॉ. वी.एस. की अंतिम विदाई की आरती के समय आपका फोन आया और आपके आशीर्वचन सुनें। तत्पश्चात्, मेरे लिए आपका व्यक्तिगत फोन आया, तब आपकी वाणी सुन कर मेरा दिल इतना भर आया कि मेरा गला रुंध गया और मैं कुछ बोल नहीं पाया, इसलिए मैंने कहा कि मैं बाद में आपको फोन करता हूँ।

साहेब! आप जानते हो– 'योगी परिवार' में मैं पला-बढ़ा और उसमें से रचे 'गुणातीत समाज' ने मुझे खूब संभाला है – हमेशा साथ खड़े रह कर मुझे अपनापन दिया है। और... वस्तुतः इसके आद्य सर्जक प.पू. काकाजी होने के कारण, मुझे 'गुणातीत समाज' के सभी से खूब ही ममत्व रहा है – लगाव रहा है।

इसीलिए, सुबह डॉ. वी.एस. के अक्षरधाम सिधारने का समाचार सुन कर, तुरंत ही उनके अंतिम दर्शन करने में मेरी गरज़ से, 'ब्रह्मज्योति' - मोगरी पहुँचने के लिए, दिल्ली से निकल गया और... डॉ. वी.एस. तो दिल्ली में

हमारे पहले सत्संगी थे, जो 'साधु समाज' में हमें मिलने के लिए आए थे, जिन्हें देख कर हम सब खूब आनंदित हो गए थे – वह कैसे भूला जाए?

तो, आपसे मेरी प्रार्थना कि आप ऐसा न मानना कि भाइयों को कुछ सपोर्ट देने के लिए मैं 'ब्रह्मज्योति' आया, मैं तो कृतकृत्य होने के लिए ही आया... विशेष क्या लिखूँ?

सभी को याद करते हुए

आपके ही साधु मुकुंदजीवनदास के जय स्वामिनारायण!

और... रात को अमदावाद में प.भ. परिमलभाई के घर ठहर कर, अगले दिन सायं की फ्लाईट से दिल्ली लौटे। प.पू. गुरुजी ने उपरोक्त पत्र में ज़िक्र किया है कि डॉ. वी. एस. तो दिल्ली में हमारे पहले सत्संगी... तो वह बात ऐसी थी कि –

1968 में प.पू. गुरुजी पहली बार दिल्ली आए और 'भारत साधु समाज' में ठहरे थे। तब काफी समय तक कोई आया ही नहीं था, कोई सत्संगी नहीं, कुछ नहीं! डॉ. वी.एस. किसी काम से दिल्ली आए थे और एक अपनेपन से वे प.पू. गुरुजी व संतों से मिलने के लिए आए; सो, प.पू. गुरुजी उनके लिए हमेशा कहते कि दिल्ली में हमारे ये पहले सत्संगी जिनके दर्शन हुए थे और जैसे कि प.पू. गुरुजी भी तब दिल्ली हमेशा सर्दियों में आते थे, सो वे प.पू. गुरुजी को 'सर्दियों के महंत' कहते थे।

1 अप्रैल 1938 को गुजरात के पंचमहाल जिले के गाँव में जन्मे, पले-बढ़े पू. डॉ. वी.एस. पटेल साहेब ने 77 वर्ष की आयु में 1 अप्रैल 2015 को ही प्रभु में लीन होकर, अपने जीवन की भक्तियात्रा तो पूर्ण की, लेकिन, गुरुवर्य योगीजी महाराज एवं संत भगवंत साहेबजी के प्रति अपनी सेवा-भक्ति का एक आदर्श स्थापित कर गए।

1957 में वल्लभविद्यानगर की 'सरदार पटेल यूनिवर्सिटी' में पठन के लिए आए, पू. डॉ. वी.एस. पटेल का प.पू. जशभाई (साहेबजी) से प्रथम मिलन और असाधारण प्रेम वहीं पर हुआ। उनकी मित्रता के वश, वे गुरुहरि योगीजी महाराज के संपर्क में आए और उनसे लगाव हुआ और... जीवन का पूरा प्रवाह ही बदल गया। तत्पश्चात्, प.पू. बापा की मरजी जान कर, ब्रह्मस्वरूप काकाजी व ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी से मार्गदर्शन एवं ब्रह्मस्वरूपिणी सोनाबा से निःस्वार्थ प्रेम पाकर, प.पू. साहेबजी की निश्रा में, उन्होंने प्रथम आठ युवाओं के साथ **'कर्मयोगी संत'** की दीक्षा प्राप्त की। सिंह जैसी प्रकृति होने के बावजूद 'दास' बन कर जिए। जिस यूनिवर्सिटी में पढ़ कर पी.एच.डी. की पदवी प्राप्त की, छः वर्ष वहीं के वाइस चान्सेलर भी बने और... उन्होंने जब से कमाना शुरू किया, तब से जीवनपर्यंत अपनी संपूर्ण आय प.पू. साहेबजी के श्रीचरणों में अर्पण करते रहे। यूँ, संसार में रहते हुए भी, प्रभु के बल से जलकमलवत् जीवन जीकर, अध्यात्म साधना की। ऐसी ही महिमा-भक्ति के संस्कारों का सिंचन उन्होंने अपने कुटुंबीजनों और संबंध में आने वालों में भी किया।

प.पू. गुरुजी जब ब्रह्मज्योति पहुँचे तो **पू. डॉ. वी.एस. के सुपुत्र प.भ. दिनेशभाई (दीनाभाई)** ने प.पू. गुरुजी से मिलते ही ज़िक्र किया कि ये दो विभूतियाँ – एक काकाजी और वी.एस. – ऐसी निकली जिन्होंने आख़िरी समय में किसी को कोई टाइम ही नहीं दिया। काकाजी इनके दिल में कितने बसे होंगे, यह इस बात से

प.पू. गुरुजी को ख्याल पड़ गया। दरअसल, पू. डॉ. वी.एस. को भी ब्रह्मस्वरूप काकाजी के प्रति प्रच्छन्न सम्मान और लगाव था, जो कभी-कभी उनकी बातों से छलकता भी था। 1986 में 'ब्रह्मज्योति' पर ब्रह्मस्वरूप काकाजी की अंत्येष्टि हो रही थी, तब साथियों से प.पू. काकाजी का ज़िक्र करते हुए उनके मुँह से निकल पड़ा –

काकाजी हमें भूले नहीं...

पू. डॉ. वी.एस. साहेब भले ही आज स्थूल रूप में हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन अपनी गुरुभक्ति और ऐसे मर्मस्पर्शी प्रसंगों द्वारा, वे हम सभी के दिलों एवं 'गुणातीत समाज' में सदैव जीवंत रहेंगे।

।। स्वामिश्रीजी ।।

(राग – मन के मत पे मत चलियो...)

गुरु-सा ना दिलदार है कोई, गुरु से बढ़ कर हितैषी ना कोई,
तेरे दोष-स्वभाव मिटा देगा, प्रभु मूरत दिल में बसा देगा...

गुरु के कहने पे तू चलियो, जीतेजी सुखी कर देगा,
गुरु के कहने पे तू चलियो, जीतेजी सुखी कर देगा,
माया के फंदे छुड़वा कर, जन्मों के रोग मिटा देगा,
गुरु के कहने पे तू चलियो, जीतेजी सुखी कर देगा... -2

हो... मन को जो होने दें हावी, साधु से हमें दूर करे,
आ... मन को जो होने दें हावी, साधु से हमें दूर करे,
बौद्धिकभावना पकड़े हुए हम, गुरु की क्रिया तोलें,
गुरु की क्रिया तोलें,
गुरु तब सत्कर्म करवाऽऽ... तब हमसे सत्कर्म करवा,
मौके की करवा के सेवा, गिरने से हमें बचा लेगा,
गुरु के कहने पे तू चलियोऽऽ...
गुरु के कहने पे तू चलियो, जीतेजी सुखी कर देगा... -2

गुरु संभाले, गुरु निभाए, गुरु बताए सौ रस्ते,
आ... गुरु संभाले, गुरु निभाए, गुरु बताए सौ रस्ते,
जीव के मंगल की ख़ातिर, गुरु बनते हैं सस्ते,
गुरु बनते हैं सस्ते,
मन से हरदम अनबन रखनाऽऽ... मन को मित्र बना के रखना,
गुरु को जीवन मध्य में रखना, अपने जैसा बना देगा...
गुरु के कहने पे चलियो, बस चलियो, वहीं चलियो,
गुरु के कहने पे तू चलियो, जीतेजी सुखी कर देगा
गुरु के कहने पे तू चलियो, जीतेजी सुखी कर देगा
माया के फंदे छुड़वा करऽऽ...
माया के फंदे छुड़वा कर, जन्मों के रोग मिटा देगा
गुरु के कहने पे तू चलियो...

निमंत्रण

आइए,

12 जून 2015, शुक्रवार सायं 6:30 से रात्रि 9:15

प.पू. गुरुजी की निश्रा में –

ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज के 97वें प्राकट्योत्सव

एवं

'अनुष्ठान शिविर' की पूर्णाहुति के निमित्त

'ताड़देव' – अशोकविहार, श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर में

इष्ट मित्रमण्डली सहित उपस्थित रह कर

दर्शन, सेवा, समागम और आमरस के प्रसाद का लाभ लेकर स्वयं को धन्य करें...

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	14.5.2015,	गुरुवार	—	एकादशी, व्रत
(2)	दि.	15.5.2015,	शुक्रवार	—	ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज का प्राकट्योत्सव, प.पू. गुरुजी की भागवती दीक्षा तिथि 'अनुष्ठान शिविर' का मंगल प्रारंभ शिविर का समय – सायं 7:00 से 9:15
(3)	दि.	28.5.2015,	गुरुवार	—	भगवान स्वामिनारायण की स्वधामगमन तिथि ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज का स्वधामगमन दिन
(4)	दि.	29.5.2015,	शुक्रवार	—	भीम एकादशी, व्रत
(5)	दि.	1.6.2015,	सोमवार	—	ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज का दृष्टा दिन 'गुणातीत ज्योत' – स्थापना दिन
(6)	दि.	2.6.2015,	मंगलवार	—	वटसावित्री
(7)	**दि.**	**12.6.2015,**	**शुक्रवार**	**—**	**गुरुहरि प.पू. काकाजी महाराज का प्राकट्योत्सव एवं 'अनुष्ठान शिविर' की पूर्णाहुति** *(सायं 6:30 से 9:15 मनाएंगे।)* एकादशी, व्रत
(8)	दि.	28.6.2015,	रविवार	—	एकादशी, व्रत
(9)	दि.	12.7.2015,	रविवार	—	एकादशी, व्रत
(10)	दि.	18.7.2015,	शनिवार	—	रथयात्रा

12-13 मार्च 2015

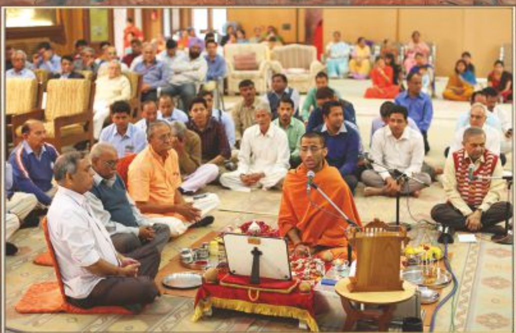

सभी की हाज़िरी से प.पू. गुरुजी के अंतर के खुशी का एहसास 'ताड़देव' संकुल में दाखिल होते ही हो जाता...

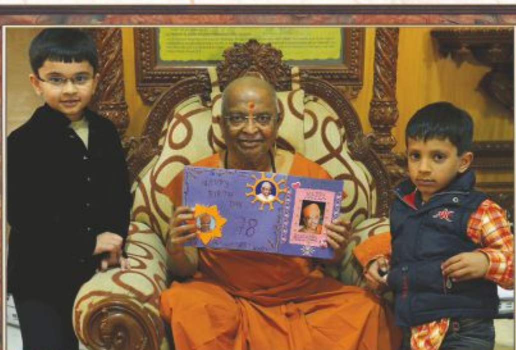

प.भ. राकेशजी के घर...

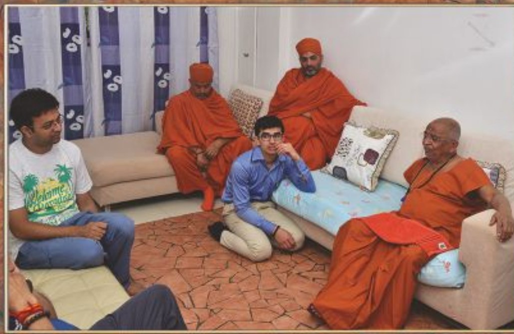

प.भ. सौरभ पटेल के घर...

हम कपड़े-पूजा लेकर नहीं आए, वर्ना यहीं रुक जाते...

'सिंगापोर फ्लायर' में यादगार पल

प.पू. दीदी से मिलने आई श्रीमती जॅनी

'भक्त चिड़िया' सौ. रचना के घर पर धुन...

सिंगापोर 'पावन यात्रा'–'मरलॉयन'

किसी को घूमने का चाव नहीं, प.पू. गुरुजी के सान्निध्य का एक 'चाव' है...

R.N.I. 28971/ 77 *(Air Mail)*

'Bhagwatkripa' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**

'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052